आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT LUCKNOW

पलाश

अंक 03, जनवरी 2023

www.iiml.ac.in

AACSB ACCREDITED | EFMD GLOBAL | ASSOCIATION OF MBAS ACCREDITED

पलाश
PALASH

© पलाश - तृतीय अंक - जनवरी, 2023

संपादक
प्रोफेसर निशांत उप्पल

संपादकीय सहयोग
एम. के. सिंह, हिन्दी अधिकारी (प्रभारी)
विश्वनाथ सिंह, हिन्दी अनुवादक

प्रकाशक
भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ
प्रबन्ध नगर, आईआईएम रोड, लखनऊ
पिन कोड 226 013, उत्तर प्रदेश, भारत

संपर्क
संपादक, पलाश
भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ
प्रबन्ध नगर, आईआईएम रोड, लखनऊ 226013, उ.प्र., भारत
दूरभाषः 0522-6696965
ईमेलः hindi@iiml.ac.in
वेबसाइटः www.iiml.ac.in

'पलाश' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक एवं संस्थान का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की गृह पत्रिका 'पलाश' बिक्री के लिए न होकर केवल आंतरिक वितरण के लिए है।

निदेशक की कलम से...

प्रोफेसर अर्चना शुक्ला
निदेशक

वर्ष 2021-22 अप्रत्याशित रूप से स्वास्थ्य और आर्थिक दृष्टि से उत्साह की कमी से जूझता रहा। यह कोविड की जाती हुई छाया थी। यह आत्मनिरीक्षण का भी वर्ष रहा है, जिसने हमारा ध्यान सीखने-सिखाने के तरीकों, योजना बनाने के दृष्टिकोण और सामाजिक योगदान की ओर खींचा है। इस अवधि में भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ समावेशी, अनुकूल और लचीला होने के कारण न केवल अपनी ऊर्जा और बढ़त को बनाए रखने में सफल रहा है बल्कि उन्नति की ओर तेजी से बढ़ता भी गया।

संस्थान में डिजिटलीकरण के विकास की प्रक्रिया को गत वर्षो में शुरू किया गया था, जिसके सार्थक परिणाम वर्ष 2021-22 में हम सभी को प्राप्त हुए। हाइब्रिड शिक्षण विधि के साथ नई डिजिटल कक्षाएं, समकालिक शैक्षिक मंच तथा उच्च शिक्षण संबंधित परिवर्तनों ने हमें नवाचारों को अपनाने और सुचारु करने के साथ ही अपने क्षेत्र में अग्रणी बने रहने में मदद की। उल्लेखनीय है कि भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने अपने सभी शैक्षिक कार्यक्रमों में 100% अंतिम प्लेसमेंट की अपनी शानदार परंपरा को बनाए रखा है। हमारे लिए गर्व की बात है कि सभी आईआईएम की तुलना में ईडब्ल्यूएस (EWS) के छात्रों का सबसे बड़ा बैच हमारे संस्थान में है।

गत वर्ष ने बाधाओं के साथ-साथ गौरव के क्षण भी दिए, जैसे- हमारे अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ गवर्नर, श्री एन. चंद्रशेखरन को प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान, पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। हमने भी व्यावसायिक नेतृत्वकर्ताओं को श्रेष्ठतम बनाने के प्रयासों के तहत परिसर की प्रगति की है। इसके तहत, एक छात्रावास तैयार हो चुका है व एक निर्माणाधीन है वहीं, एक शिक्षण खंड और एक संकाय भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

हमारे राष्ट्र के निर्माण में राजभाषा का अमूल्य योगदान रहा है। हमारा संस्थान इस तथ्य से भलीभांति अवगत है जिसके प्रति आभार को मूर्त रूप देते हुए हमारी साहित्यिक पत्रिका "पलाश" का प्रकाशन किया जाता है। राजभाषा हिन्दी नित-नई ऊंचाइयां छू रही है। उच्च शिक्षा के विविध क्षेत्रों में जहां हिन्दी की पहुंच अपर्याप्त थी वहां भी इसे समर्थवान बनाने के प्रबल प्रयास स्वागत योग्य हैं।

मैं पलाश के तृतीय अंक के प्रकाशन पर सभी योगदानकर्ताओं को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं।

प्रोफेसर अर्चना शुक्ला

संपादकीय

प्रोफेसर निशांत उप्पल
पलाश-संपादक एवं
अध्यक्ष एमडीपी, आईआईएम लखनऊ

भारतीय प्रबन्ध संस्थान का तीसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूं। राजभाषा हिन्दी राष्ट्र गौरव के साथ ही हमारी अस्मिता से भी संबंधित है। इस गौरव बोध को प्रस्तुत पत्रिका के माध्यम से ऊंचाई प्रदान करना हमारा ध्येय है।

भाषा के माध्यम के तौर पर हिन्दी लोकप्रियता के नए आयाम छू रही है। सामान्य कामकाज के क्षेत्र हो या अन्य कार्यक्षेत्र, प्रत्येक जगह पर इसकी मौजूदगी सशक्त होती जा रही है। शुरू में कंप्यूटर व इंटरनेट जैसे उपकरण तथा संसाधनों के आने से ऐसा लगा जैसे अंग्रेजी के अलावा कोई अन्य भाषा के सूझने व प्रयोग होने की परिस्थिति ही नहीं बन रही थी। लेकिन आज हिन्दी में टंकण, ब्लाग लेखन, विडियो, वेबसाइट, पोर्टल, एप आदि हर जगह दिख रहे हैं। ऐसा बाजार की मांग से संभव हो पाया, किसी बाहरी मदद से नहीं। हिन्दी का यह विकास स्वतः स्फूर्त है ऐसा मानने के हमारे पास कई कारण है। हिन्दी भाषा का एक गुण इसकी ग्रहणशीलता भी है इसके कारण हिन्दी का शब्दकोश लगातार वृहत होता जा रहा है। नए शब्द युवा गढ़ रहे हैं। अपूर्व पठन सामग्रियां रचनाकार रच रहे हैं। जीवन के नए पहलुओं को साहित्यकार इसी भाषा में अभिव्यक्त कर रहे हैं। भाषा के विद्वान इसे पैना बना रहे हैं। विषय-वस्तुओं के विद्वान नए विषयों को हिन्दी के माध्यम से परिचित करा रहे हैं।

यह पत्रिका संस्थान की ओर से एक रचनात्मक पहल है जिसमें योगदान के लिए समस्त परिसर सदस्य तत्परता दिखाता रहा है। मैं इस अंक के समस्त लेखकों, योगदानकर्ताओं के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

सादर धन्यवाद सहित,

प्रोफेसर निशांत उप्पल

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी की कलम से ...

विनय कुमार वर्मा
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

यह आनंद का विषय है कि संस्थान के राजभाषा विभाग द्वारा पलाश के तीसरे अंक को प्रकाशित किया जा रहा है।

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ राजभाषा में कामकाज को बढ़ावा देने के लिए लगातार नए-नए प्रयास करता है। इसके तहत कर्मचारियों को प्रशिक्षित और प्रेरित करने के लिए प्रति तिमाही में एक कार्यशाला हिन्दी के जानकार अतिथि वक्ता के संचालन में आयोजित की जाती है। इस आयोजन के साथ ही अन्य कार्यक्रम व आयोजनों की रूपरेखाएं संस्थान की राजभाषा कार्यान्वियन समिति के सुझावों के अनुरूप की जाती है। इसके साथ ही हिन्दी को बढ़ावा देने वाले स्वागत योग्य समस्त विचारों का भी हम सभी अभिनंदन करते हुए अपनाने का प्रयास करते हैं।

संस्थान के कार्मिक विभाग के समस्त प्रपत्र द्विभाषी किए जा चुके हैं। इस वर्ष आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के तहत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें "कवि सम्मेलन" बहुत लोकप्रिय हुआ। विद्यार्थियों और कार्मिकों ने अपनी कवित्व प्रतिभा का बखूबी प्रदर्शन किया। इसके लिए मैं छात्र समिति, सांस्कृतिक समिति और क्लब फोटह्न टू को धन्यवाद देता हूं।

नियमों, आदेशों के अतिरिक्त भी संस्थान हिन्दी की सेवा के लिए सदैव तत्पर है। इसका साक्ष्य यह प्रस्तुत पत्रिका का महिला सशक्तिकरण पर केन्द्रित तीसरा अंक है। इसके विविध योगदान कर्ताओं ने अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हुए पत्रिका के कद को ऊंचा उठाने का कार्य किया है। मैं उन सभी रचनाकारों के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

विनय कुमार वर्मा

अनुक्रमणिका

1.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	गिरीश बालासुब्रमण्यन, संकाय सदस्य	1
2.	महिला सशक्तिकरण	राम नेवाज, अधीक्षक, परिवहन एवं स्वच्छता विभाग	3
3.	बिन ज्ञान जग सूना	राम नेवाज, अधीक्षक, परिवहन एवं स्वच्छता विभाग	3
4.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	आशीष एच.के. झा, पीएच.डी. 22001	4
5.	महिला सशक्तिकरण	राजेश जैन, एफपीएम 19020	5
6.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	हितेश बंसल, पीजीपी 38291	6
7.	सशक्त महिला सशक्त राष्ट्र	उज्जवल गौड़, पीजीपी 37329	8
8.	महिला सशक्तिकरण	सौम्या मालवीय, प्रबन्धक (कार्यक्रम)	9
9.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	मधुरेन्द्र कुमार, कनिष्ठ लिपिक, कार्मिक अनुभाग	10
10.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	धीरज सिंह, वरिष्ठ शोध सहायक (प्रणाली)	11
11.	नारी सशक्त है	नदीम अख्तर, सहायक, डीन (प्रोग्राम)	14
12.	सशक्त नारी से ही संभव है सशक्त समाज	सुरुचि सक्सेना, प्रशासनिक अधिकारी,	15
13.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	क्षितिज अग्रवाल, पीजीपी, 37491	17
14.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	नितिन कुमार, कार्यक्रम सहायक, नोएडा परिसर	18
15.	महिला सशक्तिकरण	सुरुचि सक्सेना, प्रशासनिक अधिकारी,	19
16.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	चित्रा गौतम अनुक्रमांक : पीएचडी 23020	20
17.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	राजेश जैन, पीएच.डी. 19020	21
18.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	जीतू राणा, एफपीएम 20012	22
19.	नारी सशक्तिकरण	मधुरेन्द्र कुमार, कनिष्ठ लिपिक	23
20.	महिला सशक्तिकरण	कमलजीत, यूडीसी, सम्पदा विभाग	24
21.	महिला सशक्तिकरण	माला चौधरी, अधीक्षक, वित्त लेखा विभाग	27
22.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	संगीता श्रीवास्तव, आरटीआई प्रकोष्ठ	29
23.	महिला सशक्तिकरण	राम बरन, अधीक्षक	30
24.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	राम बरन, अधीक्षक	31
25.	महिला सशक्तिकरण	बाबूलाल, अधीक्षक, उद्यान	32

26.	महिला सशक्तिकरण	भोला दत्त पाण्डेय, यूडीसी, विभाग पीजीपी	32
27.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	भोला दत्त पाण्डेय, यूडीसी, विभाग पीजीपी	33
28.	कौन समझे	अज़मी सलमान, कार्यक्रम सहायक	34
29.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	अज़मी सलमान, कार्यक्रम सहायक	35
30.	मेरी कोरी कल्पना	अतुल शुक्ला, आईपीएमएक्स 15068	36
31.	मैं हूं महिला का स्वाभिमान	प्रोफेसर प्रियंका शर्मा, संकाय सदस्य	36
32.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	जोहरा खातून, कार्यक्रम सहायक	37
33.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	बाबूलाल, अधीक्षक, उद्यान विभाग	38
34.	पूर्णिमा	आशीष एच.के. झा., पीएच.डी., 22001	39
35.	सबल नारी सशक्त राष्ट्र	सुरजीत सिंह, पीजीपी 38155	40
36.	आभानेरी की अनूठी संरचना - हर्षद माता मंदिर	अनुराधा मंजुल, जनसंपर्क अधिकारी	41
37.	महिला सशक्तिकरण	पवन तिवारी, कार्यालय सहायक	43
38.	महिला सशक्तिकरण	रामचन्द्र, पुस्तकालय सहायक	43
39.	ममतामयी नारी	कमलजीत, सम्पदा विभाग, यूडीसी	43
40.	महिला सशक्तिकरण	सुरजीत सिंह, पीजीपी, 38155	44
41.	आजादी और सम्मान	आलोक कुमार सिंह, कनिष्ठ अभियंता	44
42.	दो कदम	अतुल कुमार शुक्ला, आईपीएमएक्स, 15068	45
43.	महिला सशक्तिकरण	अभय कांत श्रीवास्तव, ईएफपीएम 10001	46
44.	महिला सशक्तिकरण	संगीता श्रीवास्तव, यूडीसी, आरटीआई	47
45.	महिला सशक्तिकरण	अंकित पाण्डेय, सहायक	48
46.	महिला सशक्तिकरण	राहिला तबस्सुम, कार्यालय सहायक	49
47.	नारी तुम अबला नहीं हो	माला चौधरी, वित्त लेखा विभाग, अधीक्षक	49
48.	आयोजन व गतिविधियां		

प्रोफेसर गिरीश बालासुब्रमण्यन, संकाय सदस्य

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

राष्ट्रवाद आधुनिक युग में पश्चिमी सभ्यता की एक अत्यंत ही प्रभावशाली विचारधारा है। राष्ट्रवाद का जन्म ट्रीटी आफ़ वेस्टफालिआ में मिलता है। मध्यकालीन यूरोप में बहुत अशांति थी। इनके प्रमुख कारण क्रूसेड्स और उसके पश्चात ईसाई समुदायों का आपसी संघर्ष था। बहुचर्चित तीस-वर्षीय युद्ध के पश्चात इस समाधान पर पहुंचा गया कि एक राष्ट्र (जो अपनी भौगोलिक सीमाओं से बंधा है, और उसके जनमानस में समानता है) के आंतरिक समस्याओं में किसी बाहरी ताकत का हस्तक्षेप करना अनुचित माना जाएगा। इसका सार यह है की राष्ट्र सीमाओं से बंधे हुए हैं। आधुनिक युग के क्रूर तनाशाह हिटलर और मुसोलिनी इस विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित थे। इसके विपरीत, भारतीय दृष्टिकोण से, राष्ट्र की एक चेतना होती है और राष्ट्र अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के निरंतरता को बनाये रखने के वाहन होते हैं। भौगोलिक सीमाओं से बंधा हुआ देश इसका अंग अवश्य है। राष्ट्र के नागरिक की अहम् भूमिका है राष्ट्र की चेतना को विकसित करना। राष्ट्र की चेतना के कई आयाम हैं जैसे - विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इतिहास, प्रशासन, मनोरंजन और कला इत्यादि। सशक्त नारी सबल राष्ट्र के तात्पर्य को समझने के लिए, पहले सशक्त नारी कौन है यह समझना अनिवार्य होगा। सबल राष्ट्र का आधार क्या है और इसके कौनसे आयाम हैं। इस लेख में सर्वप्रथम सशक्त नारी का विश्लेषण किया गया है। तदोपरांत सबल राष्ट्र का, और अंत में विश्लेषण है सशक्त नारी का योगदान राष्ट्र की चेतना में किस प्रकार योगदान देती है। सशक्त नारी की परिभाषा हमारे इतिहास और उसमें लिखे गए प्रभावशाली नारियों के उदाहरणों के द्वारा बताए गए हैं। इसी प्रकार सबल राष्ट्र की परिभाषा के लिए 'राम राज्य' की उपमा का प्रयोग किया है। निबंध का समापन सबल राष्ट्र के विभिन्न आयामों में सशक्त नारी के योगदान के विश्लेषण द्वारा किया गया है ।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।

उपरोक्त श्लोक विवादित पुस्तक मनुस्मृति के तीसरे अध्याय से लिया गया है। इस श्लोक का सरल अनुवाद कुछ इस प्रकार है, जहां स्त्रियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं और जहां स्त्रियों की पूजा नहीं होती है, उनका सम्मान नहीं होता है, वहां किये गये समस्त अच्छे कर्म भी निष्फल हो जाते हैं। इस श्लोक का भावार्थ नारी के प्रति सम्मान एवं नारी के महत्व को दर्शाता है। हमारी इस प्राचीन सभ्यता में नारी को देवी का स्थान प्राप्त है और वह सरस्वती देवी, लक्ष्मी देवी और अन्य कई कुल देवी के रूप में पूजनीय हैं। सत्यान्वेषण और ज्ञान प्राप्ति सर्वथा हमारी सभ्यता के मूल आधार रहे हैं। ज्ञान के कोश में कई ऋषिकाओं के योगदान रहे हैं, उदहारण के लिए, गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, इन्द्राणी व अन्य। आदि शंकराचार्य के काल का एक विख्यात प्रसंग है कि उन्होंने मंडन मिश्र के साथ शास्त्रार्थ किया। मंडन मिश्र अपने समय के विख्यात मीमांसक थे, जिन्होंने कुमरिल भट्ट से शिक्षा प्राप्त की थी। इस शास्त्रार्थ में मंडन मिश्र की भार्या, भारतीजी निर्णायक थीं। यद्यपि ऐसी मान्यता है कि हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज है। लेकिन यह प्रसंग इस मान्यता के विपरीत है। इस शास्त्रार्थ में पराजय के पश्चात, भारती जी ने आदि शंकराचार्य से शास्त्रार्थ किया और उन्हें कड़ी चुनौती भी दी। इस प्रसंग की व्याख्या का उद्देश्य यह स्थापित करना है की अनादि काल से हमारे समाज में नारी की भूमिका कमतर नहीं रही है। ज्ञान और कौशल की दृष्टि से वह पुरुष की समतुल्य मानी गईं हैं।

हमारी इस महान सभ्यता में कई विख्यात राजा-महाराजों के भी उल्लेख हैं। मध्य कालीन समय में शिवाजी महाराज से हम सब परिचित हैं। उन्हें छत्रपति बनाने में उनकी माता जीजा बाई का विशेष योगदान था। इस श्रृंखला में कई विख्यात रानियां भी हैं। उदाहरण के लिए, काकतीय वंश की रानी रुद्रम्मा देवी (बारहवीं शताब्दी), जिन्होंने प्रसिद्ध वारंगल किले का निर्माण पूरा कराया था। प्रसिद्ध अन्वेषक, मार्को पोलो ने रानी के सुशासन के बारे में अपने लेख में विस्तार किया है। पंद्रहवी शताब्दी में अकबर के समकालीन, गोंडवाना की रानी दुर्गावती, जिन्होंने मुगल सैनिकों के दांत खट्टे कर दिए थे, यद्यपि युद्ध में वह वीरगति को प्राप्ति हुईं। होल्कर वंश की देवी अहिल्या बाई होल्कर भी अपने सुशासन और मंदिर निर्माण (विशेषकर कई खंडित मंदिर, जिनमें सुप्रसिद्ध काशी का ज्योतिर्लिंग भी शामिल है) कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई की अहम् भूमिका से हम सब परिचित हैं। भारत की स्वधीनता में भी कई महिलाओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया था, जैसे- दुर्गा देवी - शहीद भगत सिंह की साथी, मैडम भीकाजी कामा इत्यादि। इन उदाहरणों से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कई महिला शसकों ने राज्य किए

हैं। उनके साहस, त्याग, बलिदान एवं युद्ध कौशल का इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। इन उदाहरणों से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं की नारी विद्वता, राज कौशल एवं युद्ध कौशल में पुरुष की तुलना में कम नहीं है, अतः नारी सशक्त है और राष्ट्र की चेतना को विकसित करने में सार्थक योगदान दिया है।

सबल राष्ट्र के आधार क्या हैं ? सबल राष्ट्र के सूचक या संकेतक क्या होने चाहिए? इन प्रश्नों का उत्तर अनिवार्य है। सबल राष्ट्र के लिए 'राम राज्य' की उपमा उचित है। 'राम राज्य' कैसा होगा, इसका विवरण वाल्मीकि रामायण के 90, 92 और 93 श्लोकों में है।

निरामयो ह्यरोगश्च दुर्भिक्षभयवर्जितः।। 1-1-90
न चाग्निजं भयं किंचिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः ।
न वातजं भयं किंचिन्नापि ज्वरेतं तथा।। 1-1-92
न चापि क्षुद्भयं तत्र न तस्करभयं तथा ।
नगराणि च राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि च।। 1-1-93

अर्थात, राम राज्य में चारों और खुशाली और समृद्धि है। अकाल, महामारी, भुखमरी या अकाल मृत्यु अथवा अन्य कोई प्राकृतिक जैसे मानव निर्मित आपदा का भय नहीं है। सबल राष्ट्र में मूलभुत सुविधाओं का अभाव नहीं होना चाहिए, स्वस्थ और निरोगी प्रजा, स्थिर प्रशासन, आर्थिक उन्नति और आक्रांतों से सुरक्षा शामिल हैं।

सबल राष्ट्र के इन आधारों को नारी बल कैसे प्रदान करती है इसका विश्लेषण संक्षेप में प्रस्तुत है। वैश्वीकरण के इस दौर में स्थिर शासन का बहुत बड़ा महत्व है। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात भारत विश्व का तरुण एवं सबसे बड़ा लोकतंत्र बना। पश्चिमी लोकतंत्रों में बहुत संघर्ष के पश्चात, नारी को मतदान का अधिकार मिला, जबकि भारत एक ऐसा देश है जिसमें स्वतंत्रता के बाद से नारी और पुरुष को एक समान अधिकार मिले। अमेरिका जो विश्व का सबसे पुराना लोकतंत्र माना जाता है, आज तक एक महिला राष्ट्रपति बनाने में असफल रहा है। यह गौरव की बात है कि वर्तमान सरकार में 77 में से 11 महिलाएं मंत्रिमंडल में शामिल हैं जो 17 साल में सर्वोच्च है, और इन महिलाओं का देश की नीतियों में अभूतपूर्व योगदान रहा है। परिवार हमारी सामाजिक व्यवस्था की नींव है। जॉर्डन की महारानी ने कहा है, "एक महिला को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है, एक बच्ची/कन्या को शिक्षित करने से, भविष्य सुरक्षित होता है"। और इसीलिए, सरकार का प्रयास है महिला शिक्षण और सशक्तिकरण। आज हमारे देश की महिलाओं को सेना में भी नियुक्त किया जा रहा है। पूर्वोत्तर के असम राज्य में स्थित तेजपुर वायुसेना बेस में फ्लाइट लेफ्टिनेंट तेजस्वी रंगा राव सुखोई 30 लड़ाकू विमान के शस्त्र प्रणाली संचालक के रूप में कार्यरत हैं। इनके जैसी कई तेजस्वी एवं साहसी तरुणियां राष्ट्र की रक्षा में तत्पर हैं। आर्थिक उन्नति में महिलाओं का बहुत ही अहम योगदान रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में कई प्रतिभाशाली महिलाएं बहुराष्ट्रीय इकाइओं में अग्रणी पदों पर आसीन हैं - उदहारण के लिए पेप्सिको की इंद्रा नूरी जी, फ्रांसीसी इकाई चौनेल की लीला नैर जी इत्यादि। महिलाएं गृह उद्योग के माध्यम से भी आर्थिक उन्नति में योगदान दे रही हैं। प्रसिद्द गृह उद्योग लिज्जत पापड़ आज के दौर में लगभग दो सहस्र करोड़ का उद्यम है जो लगभग सौ रुपए से शुरू किया गया था। यद्यपि अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संगठन (आईएलओ) के आंकड़ों के अनुसार भारत के फीमेल वर्कफोर्स पार्टिसिपेशन रेट (ऍफ़ एल पी आर) में औसतन कमी आयी है। यह एक चिंता का विषय है। अगला, अगर हम विज्ञान और प्रौद्योगकी की ओर ध्यान केंद्रित करें, तो हम पाएंगे कि राष्ट्र की बेटिओं ने अपना परचम लहराया है। सबसे बड़ा उदहारण है, भारत का मंगलयान प्रोजेक्ट, जिसका नेतृत्व किया इसरो की नंदिनी हरिनाथ, अनुराधा टी के और ऋतू करीधल जैसी वैज्ञानिकों ने। इस मंगलयान की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि यह यान पहले प्रयत्न में मंगल पर पहुंचने में सफल हुआ और अन्य संस्थानों जैसे नासा की तुलना में बहुत ही किफायती भी रहा। वर्ष 2020 में जब विश्व कोविद-19 की महामारी से जूझ रहा था, तब नेशनल इंस्टिट्यूट आफ़ विरलोगी की टीम ने निर्देशिका प्रिया अब्राहम जी के नेतृत्व में इस महामारी को रोकने के लिए कोवैक्सिन टीका बनाने में भारत बायोटेक की सहायता की। अंत में, अगर हम खेल जगत की बात करें तो यहां भी भारत की नारी ने कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं जैसे मुक्केबाज़ी में मैरी कॉम और बैडमिंटन में पी वी सिंधु और सयना नेहवाल या फिर भारत का सबसे लोकप्रिय खेल क्रिकेट, जिसने कई विख्यात खिलाडी दिए हैं जैसा कि झूलन गोस्वामी, हरमनप्रीत कौर, स्मृति मंधना इत्यादि। अगर हम सशक्त नारी सबल राष्ट्र इस विषय की समीक्षा करें तो हमने यह स्थापित किया कि सबल राष्ट्र के आधार हैं

सुरक्षा, स्वस्थ्य, प्रौद्योगकी में विकास और आर्थिक उन्नति और इन सबके माध्यम से समृद्धि। ऊपर के उद्धरणों से यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि इन सभी क्षेत्रों में हमारे देश की नारी अग्रणी हैं। कदाचित इसी का परिणाम है की उपनिवेशवाद की दुर्दशा के बाद भी स्वतंत्रता के 75 वर्षों में भारत विश्व की पांचवीं अर्थ व्यवस्था बनकर उभरा है और आर्थिक विशेषज्ञों के अनुसार 2040 के दशक में विश्व की दूसरी अर्थ व्यवस्था बनने की सम्भावनाओं से भरा है।

इस लेख की एक आलोचना यह हो सकती है कि कई गंभीर समस्याओं का संज्ञान नहीं लिया गया है, विशेषकर - महिलाओं के प्रति अपराध, महिलाओं के प्रति भेद-भाव या दुर्व्यवहार आदि। इन सब के लिए मेरा यही एक तर्क है की - 'चांद पर भी दाग होते हैं' - विश्व की कोई सभ्यता सर्वोत्तम या निष्कलंक नहीं है। समस्याएं कई हैं फिर भी हम आशान्वित हैं कि राष्ट्र की नारी उन समस्यों के समाधान में अग्रणी होंगी। अंत में अंग्रेजी की एक कहावत जिसका अनुवाद है, 'हर सफल मनुष्य के पीछे एक महिला का योगदान होता है, और असफल मनुष्य के पीछे दो महिलाओं का' - इसको थोड़ा सा परिवर्तित करते हुए यह कहूंगा कि, 'हर सफल राष्ट्र के पीछे उस राष्ट्र की नारी शक्ति का योगदान होता है।"

राम नेवाज, अधीक्षक, परिवहन एवं स्वच्छता विभाग

महिला सशक्तिकरण

नारी होकर न बनो बेचारी, मन में कर लो अपना ध्यान
अपने अधिकारों को जानो, और बन जाओ अब पुरुष समान
रुढ़िवादिता का करके त्याग, अत्याचारों का अब करो दमन
सक्षमता का पाठ सीखकर, कर लो जीवन अपना चमन

गलत-सही का अन्तर जानो, आगे बढ़ते जाओ तुम
सही वक्त पर आओ-जाओ, कदमताल मिलाओ तुम
अबला नहीं, अब सबला बनो, विघ्न देख लड़ जाओ तुम
वीरांगना झलकारी बनकर, वैरी मार गिराओ तुम

नारी होकर बनो हितकारी, न हो मन में गलत भावना
आ जाये यदि कोई लाचारी, तो डटकर उसका करो सामना
सदा बड़ों का आदर करो, और छोटों को दो प्यार
किरण बेदी एवं फातिमा बन, मिटा दो जगत से अत्याचार

नारी अब बेचारी नहीं, यह भावना छोड़ो अब
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, नई भावना जोड़ो अब
मिल जाये मौका उसको, एक दिन विल्मा रुडोल्फ बन सकती है
सक्षम हो अपने बलबूते,
एक दिन विजय पताका फहरा सकती है

बिन ज्ञान जग सूना

सुन मेरे भाई, सुन मेरी बहन, गांठ बांध लो अपने मन
शिक्षा बिन है जीवन अधूरा, इसे ग्रहण कर करें सपना पूरा
खुद भी सीखें, औरों को भी सिखाएं, करना पड़े चाहे कोई जतन
लल्ली, लल्ला को नित पढ़ने भेजें, शिक्षा है अनमोल रतन

शिक्षा का दीप जलाना है, जन-जन तक इसे पहुंचाना है
शिक्षा बिन न बनें अज्ञान, पढ़-लिख कर अब बनें महान
इसको जो करता है अर्जित, उसका जीवन बन जाये चमन
इसका मतलब सिर्फ नौकरी ही नहीं, शिक्षा है अनमोल रतन

पढ़-लिख कर आता सदव्यवहार, जिससे होता जीवन साकार
नित पढ़-लिखकर अच्छे गुण आएं, जो होता जीवन - आधार
शिक्षा का मतलब यह न हो, इसे ग्रहण कर हम करें अनाचार
सदा हो ऐसी कोशिश मिल जाय भारत रतन, शिक्षा है अनमोल रतन

गांधी जी पढ़े, राष्ट्र पिता बने, मदर टेरेसा पढ़ बन गयीं महान
ऑरविले और विलबर पढ़े तो, वायुयान उड़ चला आसमान
अम्बेडकर जी ने तो पढ़-लिखकर, लिख डाला है संविधान
इसलिए इस पर करें मनन, शिक्षा है अनमोल रतन।

आशीष एच. के. झा, पीएच.डी. 22001

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

भारतीय संस्कृति और सभ्यता में महिलाओं को उच्च मान्यता और सम्मान मिलता रहा है। जो नदियां लोगों के जीवन की जीवन रेखा हैं, उन्हें माता कहा गया है और हमारे देश को भी "भारत माता" कहा जाता है। हमारे अधिकांश त्यौहार विभिन्न रूपों में देवी-देवताओं की आराधना पर आधारित हैं।

समय के साथ, वैश्विकरण स्तर पर महिलाओं की स्थिति धीरे-धीरे बिगड़ती गई और समाज में सती प्रथा, शिशु हत्या, बाल विवाह, दहेज, महिला पुनर्विवाह पर वर्जना, तीन तलाक, हलाला और कई अन्य कुरीतियां व भेदभाव प्रचलित हो गए। देश के साथ-साथ विदेशों में भी कई सुधारकों ने इस तरह की रूढ़ियों में बदलाव के लिए संघर्ष किए हैं और कुछ हद तक समाज में बदलाव परिलक्षित हुए हैं। भारतीय नारीवाद की जननी और भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले ने सामाजिक रूप से निर्मित भेदभावपूर्ण प्रथाओं की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए महिलाओं के साथ-साथ गर्भवती व बलात्कार पीड़ितों के लिए भी देखभाल के लिए कई स्कूल शुरू किए।

हमारा संविधान महिलाओं को समानता, गरिमा और भेदभाव से मुक्ति सहित समान अधिकार प्रदान करता है। विभिन्न कानून और नीतियां विशेष रूप से बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006, घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005, मुस्लिम महिला (विवाह पर अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम 2019, राष्ट्रीय महिला अधिकारिता नीति 2001, एकीकृत बाल संरक्षण योजना 2009, राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्थिति से निपटने के लिए सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ 2020 आदि लागू किए गए हैं। पहले सिर्फ अच्छे दूल्हे और अच्छे घर के साथ लड़कियों के सपनों का सामना घरों की चहारदीवारी के भीतर सीमित जीवन से होता था। वैश्वीकरण और आधुनिक शिक्षा के आगमन के बाद, उन्होंने चहारदीवारी की बाधाओं और सीमाओं को तोड़ने, अपने सपनों और वास्तविकता के बीच की खाई को पाटने का इरादा किया और महसूस किया कि बाहरी दुनिया कितनी आकर्षक है और उन्हें आगे बढ़ने की अपनी आकांक्षा को पूरा करना चाहिए।

महिलाओं को प्रायः केवल बाल देखभाल और घरेलू कार्यों के लिए की उपयुक्त माना जाता था। इसमें भी, उनके घरेलू कार्यों को हमेशा कम आंका गया है और उसकी अनदेखी की गई। अब समय बदल गया है और उन्हें मुख्यधारा के कार्यबल का हिस्सा माना जा रहा है। वे हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, चाहे वह व्यवसाय हो, राजनीति हो, सामाजिक कार्य हो, पत्रकारिता हो, सरकारी नौकरी हो आदि।

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के लक्ष्य - 5 को विशेष रूप से वर्ष 2030 तक सभी महिलाओं और लड़कियों के अनुरूप लैंगिक समानता और सशक्तिकरण के लिए डिज़ाइन किया गया है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक रूप से महिला की ताकत को बढ़ाना। महिला सशक्तिकरण के 3 एलएस हैं जिनमें लर्निंग, लेबर और लीडरशिप शामिल हैं। सीखने से महिला को असीम ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिलती है जिससे उनके विचारों को व्यापक बनाया जा सकता है और प्रतिकूलताओं को दूर किया जा सकता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रासंगिक अवसर प्रदान करके महिलाओं को सशक्त बनाने से उनका समग्र विकास होगा। इसके लिए हमें लैंगिक पूर्वाग्रहों को अस्वीकार करना होगा। एक कहावत है, "संस्कृता स्त्री पराशक्ति" जिसका अर्थ है एक प्रबुद्ध महिला अनंत शक्ति की स्रोत है। शिक्षा के क्षेत्र में, विभिन्न केंद्रीय और राज्य संबंधी शैक्षिक योजनाओं जैसे बीईपी, लोक जुम्बिश, एपीपीईपी, डीपीईपी, एसएसए, आरएमएसए, एसएस, एनपीईजीईएल, केजीबीवी, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ आदि के माध्यम से लड़कियों की शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। महात्मा गांधी के अनुसार "यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।" इस क्रम में, एक और प्रसिद्ध अफ्रीकी कहावत हैः "यदि आप एक लड़के को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को प्रशिक्षित करते हैं। अगर आप एक लड़की को शिक्षित करते हैं, तो आप एक गांव को प्रशिक्षित करते हैं।"

सामाजिक क्षेत्र में, पंचायत और स्थानीय निकाय चुनावों में 50% आरक्षण, शिक्षकों की भर्ती में 50% आरक्षण और बिहार में महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 35% आरक्षण ने राज्य में राजनीतिक और सामाजिक क्रांति का नेतृत्व किया है। वर्तमान में,

भारत के अधिकांश राज्यों ने पंचायती राज संस्थानों में महिलाओं को जमीनी स्तर पर निर्णय निर्माताओं के रूप में सचेत रूप से सशक्त बनाने के लिए आरक्षण प्रदान किया है। इन पहलों ने सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक का काम किया है।

सरकार ने महिला मुक्ति और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाएं भी शुरू की हैं। "वोकल फॉर लोकल" अभियान तभी संभव होगा जब महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित होगी। इसी तरह, महिलाओं को आत्मनिर्भर भारत के लिए व्यवस्थित कौशल प्रशिक्षण, अवसर और समर्थन प्रदान करना होगा। आए दिन सामूहिक बलात्कार, यौन शोषण, तेजाब हमले और घरेलू हिंसा जैसे जघन्य अपराध हमारे समाज पर कलंक हैं। अथक प्रयासों के बावजूद इस तरह की अमानवीय घटनाएं बार-बार हो रही हैं। ऐसे में, दोषियों को फास्ट ट्रैक कोर्ट के माध्यम से कड़ी सजा देने की आवश्यकता है। निस्संदेह, एक मां, बहन और पत्नी के रूप में महिलाओं ने हमारी सफलता के लिए बहुत त्याग किए हैं। लेकिन दुर्भाग्य से कुछ महिलाएं ऐसी भी हैं जो अपनी महिला सदस्यों के दमन और भेदभाव में लिप्त भी हैं। महिला दिवस उन सभी मुद्दों पर विश्व स्तर पर सोचने, विश्लेषण करने और कार्य करने के लिए बहुत उपयुक्त दिन है, जो राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से महिलाओं को एक सक्षम मानव पूंजी में बदलने के लिए निश्चय का दिन है।

राजेश जैन, एफपीएम *19020*

कविता महिला सशक्तिकरण

सोच के परिवर्तन की जो हवा चली है, उसका आंधी बनना अभी बाकी है,
बराबरी की तो बस बात चली है, अभी कई फर्क मिटाने बाकी है
अभी तो बस कुछ ही चेहरे खिले हैं, बहुत सी मुस्कानें अभी भी बाकी है
आधी आबादी है 'महिलाएं' इस राष्ट्र की, जो हुआ है, वो "सशक्तिकरण" तो बस झांकी है
समय और सोच बदलने की प्रतीक्षा में, उचित अवसर मिलने की अपेक्षा में,
क्यों अपनी क्षमता बेकार करें? शिक्षा और आत्मविश्वास के दो पंख लगाएं,
'महिला शक्ति' भी ऊंची उड़ान भरे, पर स्वच्छंद हवा में उड़ पाए निर्भयता से,
ऐसा सदचरित्र वाला आकाश समाज भी तैयार करे, जैसे, शिक्षा साहस से जब भर गई
विद्वानों से भरी हुई सभा में एक अकेली 'गार्गी' विदुषी बन गई
ऐसे ही जब वो कुरीतियों से लड़ गयीं, अहिल्या,
लक्ष्मी बाई जैसी महिलायें प्रेरणा बनीं और इतिहास में अमर हो गयीं
जब जब महिला का अपनी, शक्ति और क्षमता पर विश्वास जगा है
खुद ही कठिन लक्ष्य चुने हैं, और अपना सशक्तिकरण स्वयं ही किया है
आज तो फिर भी सोच और समाज बदल रहा है और बहुत कुछ बदल चुका है
पर उस एक क्षण में ही, सब भेदभाव मिट जाएगा जब घर में 'बेटी' जन्म लेकर आएगी,
फिर भी वह "खुशियों वाली थाली" पीटी जाएगी
उस दिन जो, "महिला से महिला का सशक्तिकरण होगा"
वह कोई भी पुरुष, परंपरा या समाज रोक ना पायेगा।

हितेश बंसल, पीजीपी 38291

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

प्रस्तावना

“स्त्री पैदा नहीं होती अपितु समाज द्वारा बनायी जाती है” सिमोन-द-बोऊआर नामक सुप्रसिद्ध नारीवादी लेखिका का यह कथन उचित प्रतीत होता है जब हम सम्पूर्ण परिवेश में स्त्रियों की परिस्थिति का अवलोकन करते हैं। जन्म के समय एक ‘बालिका’ की जीवनी शक्ति एक ‘बालक’ की अपेक्षा अधिक प्रबल होती है किंतु सामाजिक और सांस्कृतिक भेदभाव द्वारा महिला को सबला से अबला बना दिया जाता है।

महिला सशक्तिकरण

सशक्तिकरण व्यापक शब्द है जिसमें अधिकारों व शक्तियों का स्वाभाविक रूप से समावेश है। संक्षेप में, महिला सशक्तिकरण मुख्य रूप से नीति निर्माण व निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना हैं। महिला सशक्तिकरण के मापन हेतु इसके अंतर्गत सामान्य तौर पर निम्न चार तत्वों को सम्मिलित किया जाता है-

संसद एवं विधानमंडलों में महिलाओं की भागीदारी का अंश।
प्रशासन एवं प्रबंधन में उनकी भागीदारी का प्रतिशत।
व्यावसायिक एवं तकनीकी सेवाओं में उनका अनुपात ।
महिलाओं की प्रति व्यक्ति आय एवं तुलनात्मक आर्थिक स्थिति ।

उपर्युक्त के साथ ही इसमें अन्य मुद्दों यथा शैक्षिक स्थिति, स्वास्थ्य की स्थिति, देशाटन की सुविधा, निर्णय का अधिकार, सत्ता के साथ-साथ सम्पत्ति में भी पुरुषों के बराबर अधिकार इत्यादि शामिल हैं।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

किसी भी राष्ट्र के विकास एवं निर्माण में स्त्री व पुरुष दोनों की सहभागिता अनिवार्य होती है परन्तु पितृसत्तात्मक रवैये और पुरुष प्रधान समाज के कारण आज भी महिलाओं को अपने अस्तित्व को बचाने से लेकर किसी भी प्रकार का निर्णय लेने के लिए संघर्ष का सामना करना पड़ता है। किसी ने सही कहा है- “सदियां बदली, युग बदला, लेकिन नहीं बदली तो मानसिकता समाज की।” एक महिला के कंधों पर आने वाली पीढ़ी का भविष्य और दो परिवारों की ज़िम्मेदारी होती है... ऐसे में जब महिलाएं सबल व सशक्त होंगी तभी परिवार, क्षेत्र, गांव, शहर और राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर हो पाएंगे, अतः “सशक्त होगी नारी शक्ति तभी बनेगी राष्ट्र शक्ति”।।

महिला सशक्तिकरण के प्रयास

हमारे संविधान ने महिलाओं को पुरुषों के समान एक नागरिक की तरह सम्मान पूर्ण जीवन जीने का अधिकार प्रदान किया है। अनुच्छेद 14, 15, 16, 17 के द्वारा चाहे महिला हो या पुरुष दोनों को समानता के अधिकार के द्वारा लैंगिक भेदभाव समाप्त करने का प्रयास किया गया है। विभिन्न राज्यों द्वारा विभिन्न योजनाएं यथा- किशोरी बालिका योजना, स्वस्थ सखी योजना, अपनी बेटी अपना धन योजना, जननी सुरक्षा, देविरूपक योजना, वात्सल्य योजना, बालिका संरक्षण योजना आदि महिला सशक्तिकरण की दिशा में उठाए गए क़दमों में एक है।

सन् 2021 को महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित कर महिला सशक्तिकरण नीति तैयार की गयी है। राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति 2001 के अनुसार महिलाओं के सभी कार्यक्षेत्रों यथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और न्यायिक में समान भागीदारी सुनिश्चित करना है। लैंगिक भेदभाव की समाप्ति हेतु समुचित क़ानूनी प्रणाली व सामुदायिक प्रक्रिया विकसित करना भी है। महिलाओं की

शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार व सामाजिक सुरक्षा में सहभागिता बढ़ाना है, अतः महिला सशक्तिकरण= आर्थिक + सामाजिक+ राजनीतिक+ न्यायिक सशक्तिकरण।

आर्थिक सशक्तिकरण हेतु योजनाएं

स्वयं सहायता समूह योजना, ग्रामीण महिला विकास परियोजना, किशोरी शक्ति योजना, महिला स्वाधार योजना, बालिका समृद्धि, स्वशक्ति योजना, स्वास्थ्य सखी इत्यादि के साथ ही समर्थ योजना, प्रेरणा व सुकन्या समृद्धि योजनाएं आदि शामिल हैं। सामाजिक सशक्तिकरण हेतु उज्ज्वला, राजीव गांधी सबला योजना, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना संचालित है। न्यायिक सशक्तिकरण हेतु विशेष कुछ कानून यथा-दहेज निषेध अधिनियम(1983), सती निषेध अधिनियम(1987), प्रसवपूर्व निदान तकनीक अधिनियम (1994), घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधि.(2005), विशाखा दिशानिर्देश (1997) व आज पुत्री को भी पिता की सम्पत्ति में समान हिस्सा प्रदान करने वाला क़ानून बन गया है। इस प्रकार हमारे संविधान एवं सरकारों ने समय-समय पर महिला सशक्तिकरण हेतु कई प्रयास किए हैं।

समालोचना

इतने प्रयासों के बावजूद भी आज हमारे देश में पुरुषों के मुक़ाबले मात्र साठ प्रतिशत महिलाएं ही साक्षर हैं। आज भी महिलाएं पुरुषों के मुक़ाबले बीस प्रतिशत कम भुगतान पाती हैं। इसके अलावा संसद में मात्र 11 प्रतिशत, कृषि में 76 प्रतिशत, विनिर्माण क्षेत्र में 10 प्रतिशत, आइटी क्षेत्र में 40 प्रतिशत व क़ानून से जुडे रोज़गार में 32 प्रतिशत महिलाएं ही कार्यरत हैं। इतना ही नहीं, स्वास्थ्य की दृष्टि से देखें तो सर्वाधिक कुपोषण का शिकार बच्चियां और महिलाएं ही होती है। अनेक क़ानून बन जाने के बाद भी महिलाओं के प्रति दुष्कर्म व अपराध के मामले दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। ऐसे में नारी सशक्तिकरण की दिशा में और अधिक प्रयासरत होने की आवश्यकता है।

उपसंहार

जब भी बात नारी सशक्तिकरण की होती है तब हमारे समाज में उन महिलाओं का उदाहरण दिया जाता है जिन्होंने किसी क्षेत्र में महान उपलब्धि प्राप्त की है लेकिन सही मायनों में यह तब ही सार्थक है जब यह आधी आबादी अपने हक व अधिकारों हेतु अपनी आवाज़ बुलंद कर सके। जब भारतीय महिलाएं अपने घरों से निकलकर अपनी ज़िंदगी के निर्णय स्वयं लेने में सक्षम होंगी तभी नारी सशक्तिकरण के वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति हो सकेगी। महिलाओं को स्वयं के अस्तित्व को प्रकाश में लाना होगा, स्वयं को जागरूक बनाना होगा, समाज में बदलाव लाने से पहले स्वयं उस बदलाव को क़ानून के संबल से मजबूत करना होगा।

"नारी तू विधाता की अनमोल रचना है, कोई भी तेरा सानी नहीं,
वक्त ने करवट बदल ली है, नारी तू भी छुपा ले आंखों का पानी,
सिसकने-तड़पने को नहीं मिली है ये ज़िंदगानी तुझे,
सम्माननीय हो, सम्मान पाने की हो अधिकारिणी तुम,
अबला नहीं सबला हो, सशक्त पहचान बनायी है,
विश्व की ऊंचाइयों को छूने की जो सोच तूने बनायी है,
वक्त रहते ना पीछे हटना, तुम ही में तो सृष्टि समाई है,
महिला सशक्तिकरण की अधिकारिणी हो, नारी हो नारीत्व की बधाई है।

उज्जवल गौड़, पीजीपी 37329

सशक्त महिला सशक्त राष्ट्र

आज समाज शिक्षित जरूर हो रहा है लेकिन महिला के अधिकारों को लेकर सोच नहीं बदली है। बेटी अपने पिता तथा पत्नी अपने पति की अनुमति के बिना एक कदम भी घर से बाहर नहीं निकाल सकती। यह घर के मुखिया पर निर्भर करता है कि उसकी बेटी या बहू पढ़ाई या रोजगार के लिए घर से बाहर जाए या नहीं। पढ़ा-लिखा समाज भी महिलाओं का शोषण करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता। महिला के प्रति हिंसा की घटनाएं कम होने की बजाए लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे में महिला सशक्तिकरण की बात करना बेमानी-सा दिखता है। महिला सशक्तिकरण तभी संभव है जब महिलाओं में नेतृत्व की भावना पैदा की जाए तथा उन्हें भी घर का मुखिया बनाए जाए।

लड़कों के बराबर मिलने चाहिए अधिकार

बेटियों को सशक्त बनाने के लिए लड़कों के बराबर अधिकार मिलना चाहिए। पढ़ने के साथ-साथ रोजगार का रास्ता मिलने से ही लड़कियां आगे बढ़ पाएंगी। समृद्ध समाज का निर्माण करने के लिए लड़कियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरुक होना होगा, तभी समाज में मुकाम हासिल होगा। लोगों की मानसिकता में बदलाव लाने की भी बेहद आवश्यकता है। रूढ़िवादी मानसिकता के चलते ही लड़कियां पूरी तरह शिक्षित नहीं हो पाती हैं। शिक्षा के अभाव में वे न ही अपने अधिकारों को पहचान पाती हैं और न ही समाज की मुख्यधारा के साथ जुड़ पाती हैं, इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना अति आवश्यक है।

बदलाव की गति धीमी

आज भी लड़कियों की असुरक्षा का सबसे प्रमुख कारण है आगे न बढ़ने का। लड़कियां शिक्षित जरूर हो रही हैं, लेकिन वे उच्च शिक्षा तक नहीं पहुंच पा रही हैं और यही कारण है कि आज भी महिलाएं उच्च पदों पर बहुत कम संख्या में आसीन हैं। लड़कियां 12वीं या फिर बीए तक ही पढ़ाई कर पाती हैं, करियर की सीढ़ी पर पहुंचने से पहले ही उनकी शादी हो जाती है, जिससे उनकी पढ़ाई घर की चहारदीवारी में ही सिमट कर रह जाती है। शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ उन्हें अधिकारों के प्रति भी जागरूक करना होगा, तभी वे जीवन में कामयाबी हासिल कर पाएंगी। छोटे-छोटे कदमों के जरिये लोगों को जागरूक किया जा सकता है, ताकि लड़कियां सशक्त समाज का हिस्सा बन सकें। नई पीढ़ी को केवल किताबी ज्ञान दिया जा रहा है, उन्हें संस्कारित करना भी बेहद आवश्यक है।

घर-घर चलाना होगा अभियान

बेटियों को सशक्त बनाने के लिए पोलियो मिटाओ अभियान की तर्ज पर घर-घर जाकर जागरूकता अभियान चलाना होगा, तभी समाज में बेटियों को समानता का दर्जा मिल पाएगा। लड़कियां आज शिक्षित जरूर हैं, परंतु वे उस शिक्षा से जीवन को सही दिशा नहीं दे पा रही हैं। जब वे रोजगार की सीढ़ी तक पहुंचती हैं तो शादी या फिर घर की जिम्मेवारी का हवाला देकर पढ़ाई छुड़वा दी जाती है। लिहाजा वह शिक्षा केवल घर की चहारदीवारी तक ही सिमट कर रह जाती है। कुछ लोग पारिवारिक स्थिति का हवाला देकर लड़कियों को घर पर बैठा लेते हैं, इससे वह न तो अपने अधिकारों को पहचान पाती हैं और न ही संघर्ष की लड़ाई लड़ पाती हैं। गांवों में स्थिति बेहद खराब है। लड़कियों के प्रति अपराध बढ़ते जा रहे हैं। चाहे वह बालिका श्रम हो या फिर लड़कियों का शोषण। ये समाज पर धब्बे हैं, जिससे समाज की छवि खराब हो रही है। इस धब्बे को धोने में विभिन्न मंचों से सशक्त नारी-समृद्ध समाज अभियान काफी सार्थक साबित होंगे। यह आज के समय की मांग है। इससे महिलाएं न केवल अधिकारों को जान सकेंगी बल्कि समाज में मुकाम हासिल करने के लिए लड़ाई भी लड़ सकेंगी।

गांवों में बदल रही है स्थिति

लड़कियां घर की चहारदीवारी लांघकर शिक्षा में नया मुकाम हासिल कर रही हैं। वे खुद गांवों में महिलाओं में अक्षर ज्ञान की अलख जगाने के लिए तत्पर हैं। सरकार द्वारा चलाए जा रहे बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के जरिये लोगों को जागरूक किया जा रहा है। बेटियों को स्वावलंबी बनाने व उनकी निरक्षरता को दूर करने के लिए भी ग्राम पंचायत पूरा सहयोग कर रहे हैं। समाज की रूढ़िवादी सोच को बदलने के लिए लोगों का जागरूक होना बेहद आवश्यक है। महिलाओं को नई सोच के साथ समाज में नई शुरूआत करनी होगी।

हम हमेशा महिलाओं के अधिकारों की बात करते हैं, लेकिन सिर्फ सिक्के के एक पहलू को नहीं देखा जा सकता। अगर महिला के अधिकारों की बात की जाएगी तो उसके कर्तव्यों को भी नजरंदाज नहीं किया जा सकता। महिलाओं को चाहिए कि अगर वे पुरुषों के बराबर अधिकार चाहती हैं तो उनको यह कतई नहीं कहना चाहिए कि वे विपरीत परिस्थितियों में कार्य नहीं कर सकतीं। अगर स्वयं ही अबला मान लेना है तो फिर दूसरों का क्या कसूर। इसके लिए महिलाओं को भी स्वयं ही आगे आना होगा। शिक्षा पर फोकस कर महिलाएं आगे बढ़ सकती हैं, लेकिन वह रोजगारपरक होनी जरूर है, क्योंकि बिना आर्थिक सुरक्षा के महिलाओं को सशक्त नहीं किया जा सकता।

बिना परिजनों के तो बाहर ही नहीं निकल सकती हैं महिलाएं

आज भले ही महिलाएं शिक्षित हो गई हों, लेकिन आज भी उन्हें अपने परिजनों से खासकर पुरुषों से पूछकर ही बाहर निकलना होता है। उन्होंने अपने वक्तव्य में खासतौर पर जोर दिया कि पुरानी संस्कृति के अनुसार आज भी ग्रामीण परिवेश में महिलाएं शहरी परिवेश की अपेक्षा सुरक्षित हैं। गांव में अगर छेड़छाड़ की घटना होती है तो कोई न कोई रोकने-टोकने वाला होता है, लेकिन शहरों में भाईचारा कम होने के कारण कोई विरोध नहीं करता। महिला जागरूकता में मीडिया अहम भूमिका निभा सकती है।

गांव से शुरूआत करें महिला सशक्तिकरण

महिलाओं को सशक्त करने के लिए ग्रामीण स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। सरपंच बनाकर बेटियों को आगे बढ़ाने की पहल की गई है, लेकिन उन्हें फैसले लेने का पूर्ण अधिकार होना चाहिए। डॉ. पूनिया ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की कमी के कारण महिलाएं आगे नहीं आ पाती, इसलिए उन लोगों में जागरूकता लाना बेहद जरूरी है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेटियां प्राथमिक शिक्षा ही प्राप्त कर पाती हैं। उसके बाद उनका कार्य परिवार को चलाना ही माना जाता है। कई बार तो महिला को केवल वंश चलाने तक ही सीमित कर दिया जाता है। महिलाओं ने गैर-पारम्परिक क्षेत्रों और व्यवसायों में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की है। देश में परिवर्तन और प्रगति की एक लहर चल पड़ी है और महिलाएं भी इस बदलाव का एक हिस्सा बन लैंगिक पूर्वाग्रह और असमानता से आगे बढ़ रहीं हैं।

हर रोज आसानी से कई भूमिकाओं को निभाने वाली महिलाएं निर्विवादित रूप से किसी भी समाज की रीढ़ की हड्डी होती हैं। प्रेमिल बेटियां, माताओं और सहकर्मियों तथा कई अन्य भूमिकाओं में वह हमारी चारों तरफ रहा करती हैं। महिलाएं बिना किसी दोष और समर्पण के साथ अहम भूमिका निभाती हैं। राष्ट्र के विकास और प्रगति के लिए भी महिलाओं की सहायता और भागीदारी महत्वपूर्ण और आवश्यक है। इस भागीदारी को सुनिश्चित करने और प्रोत्साहित करने के लिए, सरकार लगातार ऐसे कदम उठा रही है। ताकि महिलाएं उद्यमिता प्रशिक्षण लेकर स्वावलंबी बनें, शिक्षित हो और घर परिवार समेत हरेक मोर्चे पर स्वास्थ्य से लेकर वित्तीय सहायता करें। ताकि वह कंधे से कंधे मिलाकर न्यू इंडिया बनाने में बेहतर तरीके से सहभागी बनें।

सौम्या मालवीय, प्रबन्धक (कार्यक्रम), स्नातकोत्तर कार्यक्रम कार्यालय

महिला सशक्तिकरण

नारी तू नारायणी, निज करे विजय का वरण,
अम्बे, अम्बिके, अम्बालिके स्वरुप में होता महिला सशक्तिकरण
मातुश्री अहिल्या बाई के प्रसाशन का विवरण,
गौरवान्वित कर देता है, निज महिला सशक्तिकरण
आनंदी गोपाल जोशी के अध्ययन का प्रस्तुतीकरण,
वैद्य, चिकित्सिका स्वरुप में दर्शाये महिला सशक्तिकरण
रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, है साहस का तेजकरण,
1857 की क्रांति दिखाए वीर महिला सशक्तिकरण
सावित्री बाई फुले ने दी स्त्री शिक्षिका नवीनीकरण,
हर स्त्री की शिक्षा से आरम्भ हुआ ओजस्वी महिला सशक्तिकरण
सरोजिनी नायडू के संयोजित जोशीले शब्दों का संकलन,
भारत कोकिला के रूप में दें संतुलित महिला सशक्तिकरण।

मधुरेन्द्र कुमार, कनिष्ठ लिपिक, कार्मिक अनुभाग

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

सबल का अर्थ है जिसके पास बल है अर्थात् जो बलवान हैं, शक्तिशाली हैं, वही सशक्त है। जिस राष्ट्र की नारी सशक्त हैं उसकी नींव सुदृढ़ है। हमारे देश में जब तक नारियां शिक्षित नहीं होगी, तब तक सबल राष्ट्र का निर्माण नहीं होगा, क्योंकि नारी ही वह प्रथम पाठशाला है, जहां से बच्चे की नींव मजबूत होती है। नारी से ही घर, परिवार और समाज का निर्माण होता है। इसलिए वेदों में भी कहा गया हैं-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

अर्थात जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं।

आज तो हमारे देश की नारियां इतनी आगे निकल चुकी हैं कि वे चाहे जिस क्षेत्र में हो वें अपना परचम लहरा रही हैं, वें अन्तरिक्ष में भी जा रही हैं, सरहद से लेकर संसद तक देश का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। कहीं किरण बेदी बनकर प्रशासनिक सेवा में भी अग्रणी है। वह कदम-कदम पर पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ चल रही हैं। चाहे वह देश के प्रति सम्मान के लिए हो या खुद का बलिदान, किसी से भी पीछे नहीं हटती हैं। रानी लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, दुर्गा भाभी, रानी चेन्नमा, भीकाजी कामा जैसी अनेकों वीरागंनाओं ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भी अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थें। तभी तो किसी ने क्या खूब लिखा है-

साहस, त्याग, दया ममता की, तुम प्रतीक हो अवतारी हो
वक्त पडें तो लक्ष्मीबाई, वक्त पड़े तो झलकारी हो
आधी हो, तूफान घिरा हो, पथ पर कभी नहीं रुकना है
शिक्षा हो, या अर्थ जगत हो, या हो सेवाएं
हर पद की सच्ची अधिकारी हो
तुम्हें नये कीर्तिमान सृजन के, अपने हाथों से गढ़ना है।

स्त्रियां जिस भी क्षेत्र में हो किसी से वह कम नहीं है और न ही वह पीछे हटती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में हो या चिकित्सा के क्षेत्र में या राष्ट्र निर्माण आदि सभी क्षेत्रों में बराबर भाग ले रही हैं। एक अच्छा राष्ट्र निर्माण तभी हो सकता है जब स्त्रियां शिक्षित हो और उन्हें पूरा सम्मान मिले। महिलाएं आज इस अवसर का पूरा लाभ उठा रहीं हैं। खेल के क्षेत्र में लड़कियां ओलम्पिक में स्वर्ण पदक प्राप्त कर रही हैं जिससे अन्य लड़कियों को आगे बढ़ने का गौरव और हौसला प्राप्त हो रहा है।

किसी भी देश को सशक्त बनाने हेतु वहां की महिलाओं को सशक्त बनाने की आवश्यकता होती है। महिला एक मां, पत्नी और बहन के रूप में अपनी भूमिका निभाती हैं तब जाकर एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो पाता है। आज भले ही महिलाओं की उन्नति के लिए बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा लगाया जाता हो और ओजस्वी भाषण दिये जाते हों, लेकिन जिस तरह से आये दिन महिलाओं के साथ घृणात्मक उत्पीड़न, शोषण, छेड़खानी आदि मामले सामने आते हैं तो वह सरकार द्वारा चलायी जा रही महिला सशक्तिकरण की मुहिम पर एक बहुत बड़ा सवालिया निशान खड़ा करता है। देश की सरकार भले ही महिला के विकास में अनेक कार्यक्रम चला रही है, परन्तु जब तक देश का हर नागरिक जागरूक होकर हर महिला को उस तरह इज्जत और सम्मान नहीं देगा जैसा वह खुद के लिए उम्मीद करता है, तब तक ना तो नारी सशक्तिकरण की मुहिम सफल हो पाएगी और न ही देश आगे बढ़ पाएगा। क्योंकि जहां नारी का सम्मान नहीं होगा वहां कभी विकास नहीं होगा।

नारी ही वह शक्ति है जिसकी वजह से विश्व की सभी सांसारिक गतिविधियां गतिमान है। नारी है तो, मां का आंचल है। वह नारी ही है जो सुख-दुख में निःस्वार्थ भाव से सबका साथ निभाती हैं। लेकिन आज भी समाज नारी को वह सम्मान नहीं दे पाया है जिसकी वह सही में हकदार है। अतः हम सबको मिलकर नारी का सम्मान करना चाहिए।

धीरज सिंह, वरिष्ठ शोध सहायक (प्रणाली)

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

महिला सशक्तिकरण के लिए मूल सिद्धांत है कि महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार, वित्तीय सुरक्षा, न्यायिक शक्ति और वे सारे अधिकार जो पुरुषों को प्राप्त हैं वे सभी मिलने चाहिए। सशक्त महिला का मतलब है कि महिलाओं को अपने व्यक्तिगत लाभों के साथ ही समाज के लिए अपने स्वयं के निर्णय ले सकने में सक्षम होना।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था, 'यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है सशक्त भारत माता।' जब लगभग आधी आबादी में योगदान देने वाली महिलाओं को सशक्त बनाया जाएगा तो यह राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगी। शिक्षा को महिला सशक्तिकरण के लिए एक मील का पत्थर माना जाता है क्योंकि यह उन्हें चुनौतियों का सामना करने, अपनी पारंपरिक भूमिका का सामना करने और अपने जीवन को बदलने में सक्षम बनाती है। शिक्षा की बढ़ती पहुंच के बावजूद, भारत में लैंगिक भेदभाव अभी भी कायम है, और भारत में महिला शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कुछ किए जाने की आवश्यकता है। महिलाओं में इतनी अपार संभावनाएं हैं जिनका कभी उचित ढंग से उपयोग नहीं किया गया। चूंकि शिक्षा मानव विकास का इनपुट और आउटपुट दोनों है। ऐसे में यह शैक्षिक समानता, सक्षम और उद्यमशील विकास सुनिश्चित करेगी। 2011 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता का स्तर 65.46% है, जबकि पुरुष साक्षरता दर 80% से अधिक है। साक्षरता से परे भी, महिलाओं के अधिकारों, सम्मान और सुरक्षा के लिए शिक्षा बहुत कुछ कर सकती है। शिक्षा विकास की आजादी के सुनहरे दरवाजे को खोलने की कुंजी है। एलीन मेलोन शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और आय को एक त्रिमूर्ति के रूप में देखते हैं क्योंकि वे बहुत निकट से संबंधित हैं। यह पत्र महिलाओं के शिक्षा सशक्तिकरण के प्रभाव के साथ-साथ उन चुनौतियों और परिवर्तनों पर चर्चा करता है जिनसे हमें इस प्रक्रिया के दौरान निपटना होगा। वांछित परिणाम सुनिश्चित करने के लिए प्रासंगिक, गुणवत्ता और समग्र शिक्षा पर नए सिरे से जोर देने का आह्वान करना होगा।

भारत का विकास पैटर्न शिक्षा जैसे सामाजिक बुनियादी ढांचे के लिए बहुत अधिक शेष है। यह सेवा और इसका प्रभाव तृतीयक क्षेत्र और शेष अर्थव्यवस्था में दिखाई देता है। शिक्षा अपने आप में एक साध्य होने के साथ-साथ अन्य वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने का साधन भी है। सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो व्यक्तियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी पूर्ण पहचान और शक्तियों का एहसास कराने में सक्षम बनाती है। महिलाओं के सशक्तिकरण से महिलाओं को समान दर्जा, अवसर और विकास की स्वतंत्रता मिलती है जिसका अर्थ महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र और व्यक्तिगत रूप से आत्मनिर्भर होने के लिए तैयार करना भी है। उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना महिलाओं को सशक्त बनाने का मौलिक तरीका है जो उन्हें वैज्ञानिक, तार्किक, खुले विचारों वाला और स्वाभिमानी बनाता है और निर्णय लेने में अधिक स्वायत्तता सुनिश्चित करता है या खुद को रीति-रिवाजों, विश्वासों और प्रथाओं द्वारा उन पर लगाए गए बंधनों से मुक्त करता है। महिलाओं में ऐसे गुण विकसित किए बिना सशक्तिकरण का कोई अर्थ नहीं है।

शिक्षा महिला सशक्तिकरण का एक मील का पत्थर है क्योंकि केवल शिक्षित महिलाएं ही हमारे देश के आर्थिक विकास के साथ-साथ जागरूक नागरिक, माता-पिता और परिवार के सदस्य बनने में बहुत प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा की वृद्धि बहुत धीमी है, जिसका अर्थ है कि हमारे देश की बड़ी बहुसंख्यक महिलाएं अभी भी अनपढ़, कमजोर, पिछड़ी और शोषित हैं। इसलिए, 'महिलाओं को शिक्षित करना' सबसे शक्तिशाली उपकरण है जो समाज में महिलाओं की स्थिति में बदलाव ला सकता है और परिवार के भीतर उनकी स्थिति में सुधार के साधन के रूप में असमानताओं और कार्यों में कमी ला सकता है। शिक्षा का तात्पर्य केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं है बल्कि उस ज्ञान को व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास के माध्यम से अनुप्रयोग में बदलना भी है। जेंडर गैप इंडेक्स 2013 (जीजीआई) पुरुषों और महिलाओं के बीच के अंतर को चार मूलभूत श्रेणियों-आर्थिक भागीदारी और अवसर, शैक्षिक प्राप्ति, स्वास्थ्य और अस्तित्व तथा राजनीतिक सशक्तिकरण में मापता है। भारत चीन, श्रीलंका और बांग्लादेश जैसे देशों से नीचे 136 देशों में सबसे कम 101 देशों में से एक है। यह देश में महिलाओं की स्थिति और जीवन-शिक्षा, आर्थिक गतिविधि और सशक्तिकरण के सभी पहलुओं में लैंगिक भेदभाव को दर्शाता है। शिक्षा

महिलाओं की स्थिति के पूर्ण प्रचार और सुधार का आधार है। अमर्त्य सेन इस धारणा के लिए एक रोचक मामला बनाते हैं कि समाज को महिलाओं को मदद के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में कम और सामाजिक परिवर्तन के गतिशील प्रवर्तकों के रूप में देखने की आवश्यकता है। यह सुझाव देते हुए कि महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और स्वामित्व अधिकारों का उनकी क्षमता पर एक शक्तिशाली प्रभाव है। अपने पर्यावरण को नियंत्रित करते हैं और आर्थिक विकास में योगदान करते हैं। भारतीय महिलाओं के लिए साक्षरता और शैक्षिक स्तर बढ़ रहे हैं फिर भी पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच अंतर है।

महिला सशक्तिकरण महिलाओं को उनकी आर्थिक स्वतंत्रता, राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक विकास तक पहुंच बनाने और उत्पादक योगदान देने में सक्षम बनाने की एक प्रक्रिया है। सशक्तिकरण व्यक्तियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी पहचान और शक्तियों का एहसास करने में सक्षम बनाता है। इसमें ज्ञान और संसाधनों तक अधिक पहुंच, और निर्णय लेने में अधिक स्वायत्तता या समाज में रीति-रिवाजों, विश्वासों और प्रथाओं द्वारा उन पर लगाए गए बंधनों से मुक्त होना शामिल है। भारत की नवीनतम जनगणना के अनुसार, महिलाएं देश की आबादी का 47.29% और अनौपचारिक क्षेत्र का लगभग 88% हैं।

यह पाया गया है कि महिलाओं को ज्यादातर मंचों पर तो सम्मानित किया जाता है और मूल्यवान बताया जाता है। फिर भी वे अक्सर विकास परिदृश्य में अदृश्य होती हैं। कहा जाता है कि महिला सशक्तिकरण की बयानबाजी और महिला स्वास्थ्य, शिक्षा आदि से जुड़ी योजनाओं के लिए घटते फंड आवंटन की हकीकत के बीच भारत में महिला विकास की कहानी फंस चुकी है। महिलाओं को सही स्थान, अधिकार और स्थिति तक पहुंच और अवसरों से वंचित करना घर से शुरू होता है और स्कूलों और सीखने और काम के अन्य संस्थानों तक फैलता है। विकास और विकास के रास्ते में अंतर इस प्रकार मुद्दे बन जाते हैं। ये मुद्दे न केवल महिलाओं के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए चिंता का विषय बन जाते हैं।

सशक्तिकरण महिलाओं को ज्ञान, कौशल और तकनीक हासिल करने में सक्षम बनाता है जो उन्हें उनके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में मदद करेगा और साथ ही समाज में समस्याओं के प्रति उनकी संवेदनशीलता को बढ़ावा देगा। महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। महिला लिंगानुपात में सुधार के लिए आर्थिक सशक्तिकरण आवश्यक है लेकिन आर्थिक सशक्तिकरण तभी संभव है जब महिलाएं शिक्षित हों। महिलाओं के शोषण और लापरवाही का मूल कारण शिक्षा का अभाव है। केवल साक्षरता और शिक्षा ही महिलाओं को भारतीय संवैधानिक और विधायी प्रावधानों को समझने में मदद कर सकती है जो उन्हें मजबूत करने के लिए बनाए गए हैं। शिक्षा 'संभावित और प्रदर्शन की पुष्टि' है। लड़कियों का सशक्तिकरण यहीं से शुरू होता है। यहां तक कि उद्यम भी सशक्तिकरण को क्रियान्वित करता है। एक मां के लिए भी यह एक पूर्ण यात्रा हैः एक दर्दनाक स्थिति से एक लाभकारी स्थिति तक जाना। महिलाएं शिक्षित होंगी, तभी वे राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकेंगी। कुछ महिलाएं वर्तमान में भारत और दुनिया में शक्तिशाली पदों पर काबिज हैं, लेकिन अगर अधिक महिलाएं शिक्षित हैं तो अभी भी सुधार की गुंजाइश है। शायद पुरुष-प्रधान राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की बढ़त के साथ, पूरी दुनिया की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति में निश्चित रूप से सुधार होगा। लैंगिक समानता वह है जो महिलाएं चाहती हैं और सशक्तिकरण गरिमा के साथ इसे प्राप्त करने का साधन बन जाता है। भारतीय नारी को शक्ति माना जाता है, जिसका अर्थ है सबल व समर्थवान होना। न्याय के बिना शक्ति क्या है?

महिला विकास और महिला सशक्तिकरण अवधारणात्मक और पद्धतिगत रूप से सहसंबद्ध हैं। इस प्रकार, महिलाओं के बीच शिक्षा को बढ़ावा देना जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के समान अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए उन्हें सशक्त बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। ज्ञान मूल्यवर्धन सामाजिक मुक्ति, राजनीतिक पोषण और आर्थिक सशक्तिकरण के मामले को बहुत मजबूत बनाता है। शिक्षा महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाती है जो अन्य सभी प्रकार के महिला सशक्तिकरण का स्रोत है, अर्थात सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, तकनीकी और राजनीतिक। यह उन्हें बाधाओं को दूर करने में सक्षम बनाता है।

महिला सशक्तिकरण

हिंसाः हिंसा वह प्रमुख कारक है जो महिला सशक्तिकरण का विरोध करती है। प्राचीन काल से ही समाज में शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक प्रताड़ना और पीड़ा की जड़ें गहरी हैं जो स्त्री लिंगानुपात में गिरावट के लिए जिम्मेदार हैं।

लैंगिक असमानताः महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता तक ही सीमित नहीं है; लैंगिक समानता दूसरा पक्ष है।

पारिवारिक प्रतिबंधः अनपढ़ अभिभावक जो अपनी बच्चियों को शिक्षण संस्थानों में भेजने के इच्छुक नहीं हैं।

बाल विवाहः जल्दी विवाह के परिणामस्वरूप स्कूल छोड़ना पड़ता है। स्त्री शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव भी इसका एक कारण है। महिलाओं की स्वयं के प्रति और उनके सशक्तिकरण के प्रति अपनी धारणा को बदलना होगा। उन्हें अपनी छवि को कमजोर, आश्रित और निष्क्रिय के रूप में बदलने का प्रयास करना चाहिए और स्वतंत्र, सक्रिय, मजबूत और दृढ़निश्चयी इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए।

सुझाव : बेटी की शिक्षा के प्रति जागरूकता जरूरी है। ऐसा कहा जाता है कि 'शिक्षित माताएं परिवार को शिक्षित करती हैं जिसके परिणामस्वरूप किसी भी राष्ट्र की जनसंख्या शिक्षित होती है जो एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण करती है'। महिलाओं में यह विश्वास जगाएं कि अगर महिलाएं सामूहिक रूप से काम करें तो बदलाव संभव है।

- स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक भागीदारी को प्रोत्साहित और सुनिश्चित करना।
- आय सृजन गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना। सरकार द्वारा प्रदान की गई योजनाओं का उचित क्रियान्वयन संबंधित एजेंसियों द्वारा किया जाना।
- लैंगिक भेदभाव के आधार पर महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण बदलना।
- महिलाओं में स्वावलंबन की भावना जगाना।
- बाल विवाह रोका जाना।
- लैंगिक असमानता को दूर करना।
- महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। सभी सरकारों में महिलाओं के लिए पचास फीसदी सीटें आरक्षित होना।
- लड़कियों को शिक्षित करने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में प्रभावी योगदान देने के लिए तैयार किया जा सके।
- विशेष रूप से पुरुषों और महिलाओं के बीच वेतन अंतर को समाप्त करने के लिए रोजगार में सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना।
- महिला शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को बदलने और देश की सामाजिक चेतना को बढ़ाने के लिए, राष्ट्रीय मीडिया और संचार प्रयासों में एक सचेत रणनीतिक परिवर्तन की आवश्यकता है।
- शिक्षा महिलाओं की विश्लेषण की भावना को बढ़ाने में सक्षम है जो लैंगिक समानता के समर्थन में व्यापक सुधारों का समर्थन करेगी।
- दूरस्थ बस्तियों के लिए सैटेलाइट स्कूल शुरू करना।
- महिलाओं द्वारा अध्ययन और शोध के लिए आईसीटी उपकरणों और इंटरनेट के उपयोग को प्रोत्साहन।
- राजनीतिक निकायों और शासन संस्थानों में महिलाओं के वास्तविक प्रतिनिधित्व को बढ़ाना ताकि वे कानून की दृष्टि से परिवर्तन के सूत्रधार बन सकें।

निष्कर्ष

जब तक महिलाओं को शिक्षित नहीं किया जाएगा वें अपने अधिकारों और उनके महत्व को नहीं समझ पाएंगी। महिलाओं के सशक्तिकरण का उद्देश्य उच्च साक्षरता स्तर और शिक्षा प्राप्त करने, महिलाओं और उनके बच्चों के लिए बेहतर स्वास्थ्य देखभाल,

उत्पादक संसाधनों का समान स्वामित्व, आर्थिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों में भागीदारी में वृद्धि, उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता, जीवन स्तर में सुधार और स्वयं को प्राप्त करने की दिशा में प्रयास करना है। सरकार ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना शुरू की है जिसका उद्देश्य लड़कियों को सामाजिक और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाना है और जो जागरूकता पैदा करने और महिलाओं के लिए कल्याणकारी सेवाओं के वितरण की दक्षता में सुधार करने में मदद करेगी। वांछित परिवर्तन लाने के लिए ऐसी योजनाओं को देश भर में लागू किया जाना चाहिए। यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि पुरुषों की तरह महिलाओं को आजीवन सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रहने की जरूरत है। यही सच्चा सशक्तिकरण है। समूह सहभागिता और प्रबंधन के माध्यम से पुरुषों के सहयोग से 'विकास के लिए महिलाएं' से 'विकास में महिलाएं' पर ध्यान केंद्रित करने का समय आ गया है। यह वास्तव में समानता के लिए एक गुणवत्ता परिवर्तन होगा। आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण से आकर्षित होते हुए हमें हाशिए पर जाने के लिए ना कहने के लिए आश्वस्त होना चाहिए।

नदीम अख्तर, सहायक, डीन (प्रोग्राम)

नारी सशक्त है

हमारे राष्ट्र की नारी है सशक्त
मत कहना कभी इसे दुर्बल या अशक्त
सशक्त इतनी के ढेरों गम पी जाए
मुस्कराती रहें अकेले में निर्झर आंसू बहाय
हस कर सारे विष पी जाती है
बरछी भालों के समान ताने सह जाती है
इसके बलिदानों की कोई सीमा नहीं
कभी मां कभी बहन तो कभी बेटी तो कभी
पत्नी बनकर अपने अधिकारों से वंचित रही
कभी उफ न किया सब चुपचाप सहती रही,
पुरुष नहीं है सशक्त, वास्तव में सशक्त है नारी
तभी सह जाती है उलाहना अवहेलना ताने,
निभाते हुए हर जिम्मेदारी
स्त्री कभी किसी भी परिस्थिति से हारती नहीं
उसको तो हराया जाता है
जमाना क्या कहेगा, ये बोलकर डराया जाता है
कुदरत ने नारी को सशक्त ही है बनाया
इसी कारण इसके रुप हैं क्षमा, शक्ति, आराध्या,
ममता, तपस्या और माया
स्त्री कभी कमजोर ही नहीं थी कि
उसे सशक्त करने की गरज हो समाज से
इतना अनुरोध कि स्त्री के लिए सबके भाव सकारात्मक हो
झेल जाये यदि कोई पुरुष प्रसव पीड़ा
तब शायद समझेगा वह किसी स्त्री की पीड़ा
ईश्वर और धरती के समतुल्य केवल नारी में ही है सृजन शक्ति
मर के भी वह एक नया जीवन अपने अंदर से है जनती
खुदा ने जब बख्शी है स्त्री को इतनी इज्जत
कि औरत के कदमों तले रख दी है जन्नत
तो क्यों नहीं करता समाज भी इज्जत करने की जहमत
आइये हम अब प्रण लें करने का नारी सम्मान
और बनाएं अपनी सभ्यता को सदियों तक महान।

सुरुचि सक्सेना, प्रशासनिक अधिकारी, पाठ्य सामग्री विभाग

सशक्त नारी से ही संभव है सशक्त समाज

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ पग तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।

– जयशंकर प्रसाद

नारी को मातृशक्ति कहा गया है। नारी का सुन्दरतम रूप मां का रूप ही है। स्त्री हो या पुरुष सबको धरा पर लाने वाली मां ही है। जन्म से लेकर होश संभालने तक मां ही बच्चे की पल-प्रतिपल देखभाल करती है। बच्चे को जन्म के बाद बोलना, चलना, खाना-पीना आदि कुछ नहीं आता। साये की तरह उसके साथ रहने वाली मां ही उसे संभालती, संवारती, पालती-पोसती और बड़ा करती है। नारी अबला नहीं है जैसा कि प्रायः नारी के लिए कह दिया जाता है। वास्तविकता तो यही है कि नारी सबल भी है और यह सबको सबल बनाने वाली भी है।

मां के 9 रूप स्त्री के जीवन चक्र का संकेत देते हैं। इन संकेतों में स्त्री के पैदा होने से लेकर उसकी मृत्यु तक उसके कौमार्य, विवाह, गर्भ धारण करने, बच्चे को जन्म देने, पति की रक्षा करने और घर परिवार में सुख समृद्धि लाने वाली के रूप में देवी के समान मान-सम्मान दिया गया है। जब कन्या का जन्म होता है तो कन्या के इस रूप को शैलपुत्री कहा जाता है। कन्या की कौमार्य अवस्था को ब्रह्मचारिणी का रूप दिया गया है। स्त्री अपने विवाह से पूर्व तक चन्द्रमा के समान निर्मल होने से वह चन्द्रघंटा समान कहलाती है। नए जीव को जन्म देने के लिए गर्भ धारण करने पर वह कूष्मांडा स्वरुप में होती है। संतान को जन्म देने पर वह स्त्री स्कंदमाता कहलाने लगती है। सयम व साधना को धारण करने वाली स्त्री कात्यायनी का रूप होती है। एक स्त्री के लिए उसका घर ही उसका संसार होता है और उस संसार के लिए वो जो भी करती है वो उसका उपकार होता है। इसीलिए वो महागौरी कहलाती है।

धरती को छोड़कर स्वर्ग प्रयाण करने से पहले संसार में अपनी संतान को सिद्धि (समस्त सुख संपदा) का आशीर्वाद देने वाली सिद्धिदात्री कही जाती आज की नारी में जहां मां दुर्गा का ममतामयी रूप सजा है, वहीं कुछ कर गुजरने का जोश भी निहित है। सृजन और संहार के दोनों रूपों को अपनाकर सशक्त हुई है आज की यह नारी। यह सांकेतिक पर्व है जो दुर्गा की शक्ति को रिलेट करता है नारी सशक्तिकरण से...आदिशक्ति हैं मां दुर्गा। इनके तीन गुण हैं सृजन, पालन और संहार। कभी वह सृजन करती हैं तो कभी मां के रूप में पालन करती हैं और कभी अपने भीतर की शक्ति को जागृत कर महिषासुर जैसे दानवों का संहार करती हैं।

आज की नारी देवी दुर्गा के इन्हीं रूपों को साक्षात तौर पर निभा रही है। वह सृजन करती है, मां की हर जिम्मेदारी निभाती है और जब कुछ करने की ठान लेती है तो करके ही मानती है। आज की इस नारी की शक्ति असीम है और अपनी इस काबिलियत को इसने पहचान भी लिया है। आज नारी का निर्बल नहीं सबल पक्ष देखने को मिलता है। वह सहनशील है, मजबूत है, किसी के दबाव में नहीं है। अंतरिक्ष से लेकर राजनीति तक सारे क्षेत्रों में अपनी काबिलियत साबित कर रही है।

नारी सशक्तिकरण के इसी रूप को दुर्गा पूजा के रूप में मनाने की बात होती हैं। सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके... इस श्लोक के साथ जब देवी दुर्गा की आराधना शुरू होती है तो नारी शक्ति का अहसास होता है। उस शक्ति का, जिसकी बदौलत समाज में परिवर्तन आया है। युग बदला है, काल बदला है। यहां तक कि समाज की सोच भी बदली है। इसी बारे में मल्टीनेशनल कंपनी में कार्यरत हेमा कहती हैं, ‘बदलाव तो साफ नजर आने लगा है। बोर्ड रूम में महिलाएं हैं। सशस्त्र सेनाओं में इनकी तादाद बढ़ रही है। संख्या बल में फिशियल्स भी कम नहीं। खेलों में गांव-गांव से लड़कियां आ रही हैं। इनमें कुछ करने का जज्बा है तभी तो सभी रुकावटों को दूर करके आगे बढ़ रही हैं, जो परिवार कल तक लड़कियों के काम करने के पक्ष में नहीं थे, वे आज उन्हें कुछ नया करने या कठिन क्षेत्रों में अपनी शक्ति और सफलता का परचम लहराने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। वह घर का काम संभालती है। घर के बाहर प्रोफेशन में भी वह परफेक्ट है।

आज लड़कियां मां दुर्गा की तरह ही बुराई के खिलाफ खड़ी हो रही हैं। अपनी शक्ति को जागृत कर रही हैं और सफलता की राह में आने वाली हर कठिनाई से जूझ रही हैं। आज इनके सपनों के आसमान की कोई सीमा नहीं है। इनकी जीत को सेलिब्रेट करने का अवसर है नवरात्रि। हमारे देश में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तक बनी हैं महिलाएं। लोगों ने इनके लीडरशिप रोल को स्वीकार भी

किया है। जब-जब महिलाओं को बराबर अवसर मिले हैं तब-तब उन्होंने खुद को साबित किया और आगे निकल गईं। वे अपने सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करती हैं। हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को साबित किया है। खेलों में ही देख लें तो पीटी ऊषा से लेकर सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा तक ऐसे कई उदाहरण हैं जिन्होंने अपनी पूरी शक्ति लगाकर देश का नाम रोशन किया। सफलता के लिए इन्हें संघर्ष भी करना पड़ा तो इन्होंने किया।

इतिहास गवाह है कि मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ "ताकतवर को ही अधिकार" मिला है। और धीरे-धीरे इसी सिद्धांत को अपनाकर पुरुष जाति ने अपने शारीरिक बनावट का फायदा उठाते हुए महिलाओं को दोयम दर्जे पर ला कर खड़ा कर दिया। और औरतों ने भी उसे अपना नसीब व नियति समझकर, स्वीकार कर लिया। भारत में ही नहीं, दुनिया भर में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव और शोषण की नीतियों का सदियों से ही बोल बाला रहा है। इतना जरूर कह सकते हैं कि मापदंड व तरीके अलग-अलग जरूर रहे हैं। सीता से लेकर द्रौपदी तक को पुरुषवादी मानसिकता से दो-चार होना पड़ा है। हर युग में पुरुष के वर्चस्व की कीमत औरतों ने चुकाई है या उसे चुकाने पर मजबूर होना पड़ा है।

जिस समाज में नारी का स्थान सम्मानजनक होता है, वह उतना ही प्रगतिशील और विकसित होता है। परिवार और समाज के निर्माण में नारी का स्थान सदैव ही महत्वपूर्ण रहा है। जब समाज सशक्त और विकसित होता है तब राष्ट्र मजबूत होता है। इस प्रकार एक सशक्त राष्ट्र निर्माण में नारी केंद्रीय भूमिका निभाती है। सशक्त नारी समाज का आधार स्तंभ है। जहां सशक्त नारी है वहीं समाज, परिवार और राष्ट्र भी मजबूत बनेगा। नारी परिवार की धुरी और समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है। माता संतान की प्रथम गुरु है। यदि वह स्वयं शिक्षित है, गुणवान है, समर्थ है, सशक्त है, आत्मबल व आत्मसम्मान महसूस करती है तो वह संस्कार अपने संतान को भी देती है।

नारी को आर्थिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक रूप में स्वयं को सशक्त बनाना होगा। महिला सशक्तिकरण का मतलब यह नहीं है कि हम अपने अधिकारों का दुरुपयोग करें बल्कि हम अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहें। अपने हर कर्म को समाज में बेहतर बनाने का प्रयास करें तभी वे समाज परिवर्तन में सहयोगी बन सकेंगी। हम अपने भूतकाल में जाते हैं तो नारी शक्ति के रूप में पूजी जाती थी लेकिन समय के चलते वह नारी देवी से भोग के रूप में पहचाने जाने लगी है। अभी हमें अपनी सोच बदलने, विचारों में परिवर्तन लाने और अपनी शक्ति को पहचानने की आवश्यकता है। नारी जागी तो समाज जागा और नारी सोई तो समाज सोएगा। बदलते समय के साथ आधुनिक युग की नारी पढ़-लिख कर स्वतंत्र है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है तथा स्वयं अपना निर्णय लेती हैं। अब वह चहारदीवारी से बाहर निकलकर देश के लिए विशेष महत्वपूर्ण कार्य करती है। महिलाएं हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं। इसी वजह से राष्ट्र के विकास के महान काम में महिलाओं की भूमिका और योगदान को पूरी तरह और सही परिप्रेक्ष्य में रखकर ही राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

भारत में भी ऐसी महिलाओं की कमी नहीं है, जिन्होंने समाज में बदलाव और महिला सम्मान के लिए अपने अन्दर के डर को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। आज की महिला, पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिला कर बड़े से बड़े कार्य क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं। फिर चाहे काम मजदूरी का हो या अंतरिक्ष में जाने का। महिलाएं अपनी योग्यता हर क्षेत्र में साबित कर रही हैं। जिस तरह से भारत आज दुनिया के सबसे तेज आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हुआ है, महिला सशक्तिकरण का यह कार्य काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत की सामाजिक-आर्थिक प्रगति उसके महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक प्रगति पर ही निर्भर करती है। महिला सशक्तिकरण महिलाओं को वह मजबूती प्रदान करता है, जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता है। हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए। इक्कीसवीं सदी नारी जीवन में सुखद सम्भावनाओं की सदी है। महिलाएं अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी हैं। आज की नारी अब जाग्रत और सक्रिय हो चुकी है। किसी ने बहुत अच्छी बात कही है "नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों को तोड़ने लगेगी, तो विश्व की कोई शक्ति उसे नहीं रोक पाएगी।"

अंत में मैं यही कहना चाहूंगी नारी को अपनी शक्ति का जब अहसास हो जायेगा तब उसके योगदान से राष्ट्र सशक्त राष्ट्र कहलायेगा।

क्षितिज अग्रवाल, पीजीपी 37491

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

भारतीय संस्कृति में नारी को शुरूआत से ही बराबरी का दर्जा प्राप्त है। पुरुष की पूर्णता नारी के बिना असंभव है। पुरातन काल में ऋषि भृगु, भगवान शिव की अकेले ही तपस्या करना चाहते थे जिससे पार्वती जी रूष्ट हो गईं और भगवान शिव के शरीर का त्याग कर दिया और बोली कि आप बिना शक्ति के शव के समान हैं। तब भगवान शिव ने अर्धनारीश्वर रूप में प्रकट होकर नारी के बराबरी के अधिकार को संसार के सामने सबसे पहली बार उद्‌घोषित किया। वैदिक काल में बहुत सारी वैदिक ऋचाओं की रचना विदुषियों ने की है जैसे लोपामुद्रा, मैत्रेयी, गार्गी आदि।

हमारी संस्कृति में नारी को सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा के रूप में पूजा जाता है। किसी भी प्रकार के ज्ञान को देने से पहले मां सरस्वती की वंदना की परम्परा है। वसंत पंचमी का दिन प्रत्येक वर्ष मां सरस्वती को समर्पित है। जीवन यापन के लिए धन की आवश्यकता होती है। धन की देवी लक्ष्मी का जन्म समुद्र मंथन से कार्तिक अमावस्या को हुआ था। तभी से दीपावली का त्यौहार लक्ष्मी आगमन का दिवस के रूप में मनाया जाता है। आंतरिक और बाहरी सुरक्षा के लिए मां दुर्गा की पूजा का विधान भारत भूमि पर वर्ष में दो बार मनाया जाता है। लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, सीताराम, राधेश्याम जैसे अनेक नाम हमारे लोक जीवन में नारी सम्मान को दर्शाते हैं।

खेती की शुरुआत में ही एक जगह बस्ती बसाकर परिवार का पालन करने में नारी का योगदान सबसे अधिक था। पत्नी को सहधर्मिणी, सहचारिणी, और जीवनसंगिनी कहा गया है। नारी के लिए ऐसी उपमा केवल हमारी संस्कृति और सभ्यता में ही दी जाती है। महाकवि कालिदास की पत्नी विद्योतमा की वजह से महाकवि बन पाए और उन्होंने तीन कालजयी ग्रंथ कुमारसंभव, मेघदूत, रघुवंशचरित जैसे महाकाव्य की रचना की। तुलसीदास जी अपनी पत्नी रत्नावली की बातों से प्रेरित होकर घर छोड़ दिया और रामचरितमानस जैसे महाकाव्य की रचना कर डाली तथा अपनी पत्नी को समर्पित एक पुस्तक रत्नावली भी लिखी।

पुरुष की पहली शिक्षिका मां ही होती है। उसका सबल और शिक्षित होना परम आवश्यक है। जीजाबाई ने बचपन से ही शिवाजी को घरेलू शिक्षा और दीक्षा दी। तभी तो हमें औरंगजेब जैसे ताकतवर बादशाह से टक्कर लेने वाला, चतुर, समझदार, नारी का सम्मान करने वाले छत्रपति शिवाजी जैसे महाराज मिलें, जिन्होंने मराठा साम्राज्य की स्थापना की। मराठा साम्राज्य मुगल साम्राज्य का अंत होने का कारण बना। 1000 वर्षों की हमारी आपसी फूट और बाहरी शासन होने से भारतीय नारी पर सबसे अधिक दुष्प्रभाव नारी का ना पढ़ना-लिखना और पर्दा प्रथा में रहने से हुआ। नारी की सामाजिक स्थिति गर्त में गिरती चली गई। रानी अहिल्याबाई होल्कर और महारानी लक्ष्मीबाई जैसी कुछ वीरांगनाओं को मराठा साम्राज्य की वजह से देश के सम्मान के लिए कुछ करने अवसर मिला। अंग्रेजों के कारण केवल कुलीन वर्ग की कुछ नारियों को अवश्य पढ़ने का अवसर मिला। किंतु देश के आजादी के बाद भी नारी को शिक्षित करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। हम नारी को शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से सबल बनाएं। सरकार तो अपने स्तर पर कार्य कर ही रही है किंतु समाज को भी नारी को हर जगह और हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर देने चाहिए तभी देश और समाज आगे बढ़ पाएगा। यही हमारी संस्कृति और राष्ट्र के लिए गौरव और सम्मान का विषय होगा। हमारी संस्कृति में नारी को अन्नपूर्णा का दर्जा प्राप्त है। पाक कला में निपुण होना भारतीय नारी के लिए गौरव का विषय होता था। आधुनिक युग में नारी अब केवल घर और रसोई तक सीमित नहीं है। पढ़ाई लिखाई ने अनेक क्षेत्रों में कई प्रकार के अवसर प्रदान किये है। इन्द्रा नूई, कल्पना चावला, सायना नेहवाल, शिखा शर्मा, लता मंगेशकर, और अन्य बहुत सी असाधारण प्रतिभा वाली नारी हुईं हैं, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में अवसर मिलने पर अपनी प्रतिभा के दम पर पुरुषों से अधिक नाम कमाया है। अभी भी राष्ट्र, राज्य, समाज के स्तर पर नारी निर्भय और निडर होकर अपना निर्णय ले सकें, ऐसा वातावरण उपलब्ध कराना हमारी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी है। तभी हम विकासशील राष्ट्र से विकसित राष्ट्र बनने का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

नितिन कुमार, कार्यक्रम सहायक, नोएडा परिसर

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

कोमल है, कमज़ोर नहीं तू। शक्ति का नाम ही नारी है।।
जग को जीवन देने वाली। मौत भी तुझसे हारी है।।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही नारी को पुरुष के समान अधिकार प्रदान किए गए हैं। उसे अपने जीवन की गरिमा को सुरक्षित रखने और सम्मानित जीवन जीने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया है। यहां तक कि शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी नारी को अपनी प्रतिभा दिखाने और मुखरित करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गई है। महाभारत काल के बाद नारी की इस स्थिति में गिरावट आयी। उससे शिक्षा का मौलिक अधिकार छीन लिया गया। धीरे-धीरे नारी की स्थिति दयनीय एवं चिंताजनक होती गयी। वर्तमान संदर्भ में देखें तो समय के साथ-साथ महिलाओं की परिस्थितियों में व्यापक बदलाव आ रहा है। समय करवट ले रहा है। दमन और उत्पीड़न से मुक्त होकर नारी जागरूक हो रही है। आज नारी विकास की ओर अग्रसर है। वह हर क्षेत्र में अपनी एक अनोखी पहचान बना रही है। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है। यह आधुनिक युग की नारी का स्वरूप है।

नारी समाज की प्रगति को आगे बढ़ाने में सहायक रही है। समाज का पूर्ण विकास तभी संभव है, जब पुरुष और नारी दोनों का समान विकास हो। दोनों को व्यावहारिक रूप से समान अधिकार प्राप्त हो। मात्र एक वर्ग के विकास से समाज में असंतुलन ही पैदा होगा। इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं में साक्षरता, जागरूकता, आत्मनिर्भरता बढ़ाने के समन्वित, संगठित प्रयास हों क्योंकि वास्तविकता यह है कि आज भी अधिकांश महिलाओं को अपने संवैधानिक अधिकारों और उनके विकास के लिए बनाई गई शासकीय और गैर-शासकीय योजनाओं की पर्याप्त जानकारी नहीं है। ये क्या प्रमाण हैं, इन सबको बताने से पहले मैं यहां यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि नारी को यह महसूस क्यों हुआ कि उसे सशक्त होना है, होना पड़ेगा, और होना ही चाहिए। वो इसलिए कि हमारे समाज में कई लोग उसकी क्षमता को पहचान नहीं पाए, जान नहीं पाए, और जान पाए तो, मान नहीं पाए, या मानना ही नहीं चाहते है कि नारी हर क्षेत्र में, हर काम में, बेहतर हो सकती है।

अब हम सशक्तिकरण की बात करते हैं, तो सबसे पहले हम सब अपने अस्तित्व, अपने वजूद की बात करें तो हमें बनाने वाली कौन है? एक नारी। सृजन शक्ति ईश्वर ने पृथ्वी, और नारी को ही प्रदान की है (हलांकि उसमें बीच तत्व की महिमा को, उसकी आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। इस पर एक कविता याद आती है-

'मां है तो श्री है आधार है
क्योंकि प्रकृति, धरती एक मां का ही तो प्रकार है
मां वो है जो खुद मिट कर, औरों को बनाती है
क्योंकि पत्थर पर पिस कर ही, हिना रंग लाती है।
मां और माटी का सदियों पुराना नाता है
चाह कर भी भला, इन दोनों की हस्ती को कौन मिटा पाता है,
एक जननी है, तो दूसरी मातृभूमि भारत माता है।

नारी हर रूप में एक शक्ति है। वह पुरुष को जन्म देती है, उसका पालन करती है (एक मां के रूप में) आजीवन उसका साथ देती है (एक पत्नी के रुप में) जिम्मेदार बनाती है, सोचने का नजरिया बदलती है, (एक बेटी के रूप में) और जीवन को आलंबन देती है (पुत्र वधू के रूप में)।

महिला सशक्तिकरण के लिए मूल सिद्धांत है कि महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार, वित्तीय सुरक्षा, न्यायिक शक्ति और वे सारे अधिकार जो पुरुषों को प्राप्त हैं वह मिलना चाहिए। मतलब ये कि महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिलना चाहिए। अगर साफ शब्दों में कहें तो लिंग आधारित कोई पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए। हालांकि परंपरागत मानदंड और ये प्रथा तेजी से बदल रही है, फिर भी महिलाओं को ये जानना चाहिए कि उनके मूल और सामाजिक अधिकार क्या है। सशक्त महिलाओं का

मतलब है कि महिलाओं को अपने व्यक्तिगत लाभों के साथ ही समाज के लिए स्वयं निर्णय ले सकने में सक्षम हो।

महात्मा गांधी के अनुसारः "हमारा पहला प्रयास अधिक से अधिक महिलाओं को उनके वर्तमान स्थिति के प्रति जागरूक करना होना चाहिए।''

महिलाओं ने हर समय किसी ना किसी रूप में अपने देश के लिये बढ-चढकर योगदान दिया है चाहे वो युद्ध क्षेत्र हो या खेल क्षेत्र इस सूची में कुछ विशिष्ट नाम उल्लेखनीय हैं- जैसे, पीटी उषा, मैरीकॉम, साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, कमला भसीन, मीरा शिवा, वंदना शिवा आदि। इन विश्वप्रसिद्ध हस्तियों के संबंध में हम सभी जानते हैं। इस कड़ी में और भी नाम जुड़ने का सिलसिला जारी है। भारतीय महिला कल्पना चावला, सुनीता विलियम विपरीत परिस्थिति में अपनी अस्मिता सिद्ध करने वाली सबल नारियां हैं।

- प्रथम महिला शासिकाः रजिया सुल्तान
- भारत रत्न से सम्मानित प्रथम महिलाः श्रीमती इंदिरा गांधी
- प्रथम महिला राष्ट्रपतिः श्रीमती प्रतिभा पाटिल
- प्रथम महिला प्रधान मंत्रीः इंदिरा गांधी
- प्रथम महिला राज्यपालः सरोजनी नायडू
- प्रथम महिला मुख्यमंत्रीः श्रीमती सुचेता कृपलानी
- प्रथम महिला केन्द्रीय मंत्रीः श्रीमती राजकुमारी अमृत कौर
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्षः श्रीमती ऐनी बेसेंट
- प्रथम महिला चुनाव आयुक्तः श्रीमती रमा देवी
- उच्च न्यायालय में नियुक्त होने वाली प्रथम मुख्य न्यायाधीषः न्यायधीश लीला सेठ
- सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीश नियुक्त होने वाली प्रथम महिलाः न्यायाधीश एम फातिमा बीबी

जैसा कि इस विषय में महात्मा गांधी द्वारा कहा गया है कि "विश्व में आप जो बदलाव देखना चाहते हैं, उसकी शुरुआत खुद से कीजिए।" इसका मतलब यह है कि सरकार चाहे जितनी भी योजनाएं बना ले पर वास्तविक बदलाव तभी आयेगा, जब हम खुद में बदलाव लायेंगे। जब हम महिलाओं के प्रति अपने विचारों और कार्यशैली में बदलाव लायेंगे तभी सबल नारी सशक्त राष्ट्र के विषय में सार्थक बदलाव देखने को मिलेगा।

सुरुचि सक्सेना, प्रशासनिक अधिकारी

महिला सशक्तिकरण

यूं तो रहे सदा सदियों से, हम घूंघट के तालों में
नाम हमारा भी शामिल है वक्त बदलने वालों में

खोए केवल नहीं रहे हम, पिया की मीठी बातों में
वक्त पड़ा तो हमने भी, तलवार उठाई हाथों में

हमने भी है रक्त चढ़ाया, नर मुण्डों के प्यालों में
नाम हमारा भी शामिल है वक्त बदलने वालों में

हो चाहे अंग्रेज मुगल, दुर्दांत दस्यु या हत्यारे
आंसू पोंछ उठे जब हम, सब ने देखें दिन में तारे

हमने भी बदला है निपट अंधेरों को उजियालों में
नाम हमारा शामिल है वक्त बदलने वालों में

ममता की आंचल पकड़ा तो, कभी हया आगे आई
लेकिन ठान लिया जब हमने, फटी पल भर में काई

उलझे नहीं वक्त के आकाओं की टेढ़ी चाल में
नाम हमारा शामिल है वक्त बदलने वालों में

दांत शेर के शावकों को हमने ही गिनना सिखलाया
जब-जब भटका पौरुष तो, हमने ही दर्पण दिखलाया

जिसने आंख उठाई, देर नहीं की सबक सिखाने में
नाम हमारा शामिल है वक्त बदलने वालों में।

चित्रा गौतम, अनुक्रमांकः पीएच.डी. 23020

सबल नारी, सशक्त राष्ट्र

'किसी समाज की प्रगति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस समाज में महिलाओं की कितनी प्रगति हुई है।'

- डा. भीमराव आंबेडकर

प्राचीन काल से ही हमारे समाज में महिलाओं की अहम भूमिका रही है। पौराणिक ग्रंथों में महिलाओं को आमतौर पर देवी के समान माना जाता था और उनका सम्मान किया जाता था। हमारी मान्यता है कि जहां पूरी नारी जाति को सम्मान और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता है वहां देवता निवास करते हैं। कोई भी परिवार, समाज या राष्ट्र वास्तविक प्रगति में तब तक आगे नहीं बढ़ सकता जब तक कि महिलाओं के प्रति भेदभाव, अपमान और हीनताबोध को समाप्त नहीं कर दिया जाता। एक समाज जितना प्रगतिशील और विकसित होता है, वहां महिलाओं को उतना ही अधिक सम्मान दिया जाता है। जब मजबूत, विकसित समाज मौजूद होगा, तो राष्ट्र भी मजबूत होगा। इस तरह एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में महिलाएं केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

किसी राष्ट्र के निर्माण में उस राष्ट्र की आधी जनसंख्या की भूमिका के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। यदि आधी आबादी किसी कारण से निष्क्रिय रहती है, तो उस राष्ट्र या समाज की कोई उचित और उल्लेखनीय प्रगति की कल्पना नहीं की जा सकती है। आधुनिकता के उदय और शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं की स्थिति में सुधार करने में मदद की, जिससे विकास के उचित पथ पर राष्ट्र की निरंतर प्रगति हुई। भारतीय महिलाएं आज शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक विकास के मामले में अन्य देशों की महिलाओं से आगे निकल रहीं हैं। चिकित्सा, इंजीनियरिंग, सिविल सेवा, बैंकिंग, पुलिस कार्य और सैन्य सेवा सहित कई क्षेत्रों में महिलाएं तेजी से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं हैं। महिला सशक्तिकरण की पहली सीढ़ी साक्षरता है। एक शिक्षित महिला आत्मविश्वासी, मुखर और निर्णय लेने में सक्षम होती है। खासकर भारत जैसे देश में, अगर महिलाओं को पढ़ने का मौका मिले तो वें माननीया श्रीमती द्रौपदी मुर्मु की तरह राष्ट्रपति, श्रीमती इंदिरा गांधी जी की तरह प्रधानमंत्री, श्रीमती किरण बेदी की तरह आईपीएस, या सुश्री इंदिरा नूयी जैसी मशहूर सीईओ बन सकती हैं। अन्य कई प्रतिभाशाली महिलाएं हैं जिन्होंने अपने क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की हैं। इन महिलाओं में कल्पना चावला, बछेंद्री पाल, संतोष यादव, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, पीटी उषा और कर्णम मल्लेश्वरी उल्लेखनीय हैं। आज महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हैं और देश को आगे बढ़ा रही हैं।

आज महिलाएं तेजी से उन क्षेत्रों में प्रवेश कर रही हैं जो कभी विशेष रूप से पुरुष प्रधान थे। आज की नारी पहले से कहीं अधिक सक्रिय और जाग्रत है। महिलाओं को और सशक्त बनाने के लिए सामाजिक और राजनीतिक अधिकार, वित्तीय सुरक्षा और वे सभी अधिकार दिए जाने चाहिए जो पुरुषों के लिए उपलब्ध हैं। महिलाओं को यह जानने की जरूरत है कि उनके मूल और सामाजिक अधिकार क्या हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने का अर्थ है उन्हें अपने व्यक्तिगत लाभ और समग्र रूप से समाज के लाभ के लिए अपने निर्णय लेने की शक्ति देना। किसी ने ठीक ही कहा है, 'जब एक महिला अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों और जंजीरों को तोड़ने लगती है, तो दुनिया की कोई ताकत उसे रोक नहीं सकती।' आजकल महिलाएं रूढ़ियों को तोड़ने लगी हैं। यह एक खुशी की बात और सकारात्मक संकेत है। हालांकि लोगों की सोच बदल रही है, लेकिन इस दिशा में अभी और प्रयास करने की जरूरत है।

राजेश जैन, पीएच.डी. 19020

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

शक्ति है, उन्नति है, चरित्र है, संस्कृति है
अगर अपने पैरों पर सुदृढ़ खड़ा है
कोई 'सशक्त राष्ट्र' तो 'सबल नारी'
उस राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी है

'सबल नारी सशक्त राष्ट्र'। यह विचार पिछले कुछ वर्षों से नारी की योग्यता और क्षमता को देखते हुए, बदलती सोच का परिणाम है पर, सबल नारी एक सशक्त राष्ट्र का आधार कैसे हो सकती है? यह प्रश्न शायद पुरुष प्रधान सोच रखने वाले या लगातार हर क्षेत्र में नारी को मिल रही उपलब्धियों की अनदेखी करने वालों के मन में जरूर आ सकता है। तो सबल नारी और सशक्त राष्ट्र की परिकल्पना को दो तरह से समझा जा सकता है। कोई भी देश सशक्त और समृद्ध तभी बन सकता है. जब उसका प्रत्येक नागरिक शिक्षित, आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से प्रसन्न हो, तो अगर महिलाओं को भी शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मानसिक रूप से समान अधिकार, निर्णय लेने की स्वतंत्रता, नौकरियों में अवसर, समान वेतन आदि दिए जाएं तो देश को भी उनकी योग्यता, क्षमता और शिक्षा का पूरा योगदान मिलेगा, साथ ही साथ उनकी सामाजिक दशा जैसे घरेलू हिंसा और अन्य अपराध में भी कमी आएगी और यही सब मानक देश को प्रगति के पथ पर आगे ले जाते हैं। अगर प्रत्यक्ष रूप से देखें तो महिलाएं हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा है और अगर एक इतने बड़े हिस्से का सशक्तिकरण नहीं होगा तो कोई राष्ट्र सशक्त कैसे बन पाएगा?

अब अगर एक सशक्त राष्ट्र बनाने में महिलाओं के अप्रत्यक्ष योगदान की बात करें तो एक सबल और शिक्षित महिला ही एक शिक्षित, सुसंस्कृत और सद्चरित्र वाली नई पीढ़ी तैयार कर सकती है जो देश के भावी नागरिक होते हैं। जैसे एक वटवृक्ष को नन्हे पौधे से, फल, छाया और शुद्ध हवा देने वाला विशाल वृक्ष बनाने में मिट्टी, हवा, पानी और धूप की आवश्यकता होती है बस ऐसे ही एक सबल और आत्मविश्वास से भरी मां ही अपने संतान के रूप में राष्ट्र के विकास के लिए समर्पित नागरिक दे सकती है।

हम भारतवासियों का तो अटल विश्वास है कि हमारा तो उद्भव और समय-समय पर उत्थान ही "आदि शक्ति" जो कि नारी का ही रूप है, के द्वारा हुआ है। पर यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सदियों से चली आ रही पुरुष प्रधान परंपरा को तोड़कर नारी सशक्तिकरण में हम अभी भी बहुत पीछे हैं। हालांकि आज हम भी अपनी पुरुष प्रधान सोच को बदलते हुए नारी के सशक्तिकरण के लिए बहुत प्रयास कर रहे हैं ।

आज धरती से लेकर अंतरिक्ष तक, राजनीति से लेकर सशस्त्र सेना तक, खेलकूद से लेकर पर्वतारोहण तक और छोटे-छोटे घरेलू व्यवसाय से लेकर बड़ी-बड़ी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के प्रमुख पदों पर पहुंच कर भारतीय नारी ने अपनी योग्यता और क्षमता को साबित कर दिया है पर अब तक जो हुआ है वह 'नारी सशक्तिकरण' ऊंट के मुंह में जीरा के समान है, क्योंकि महिलाएं हमारी देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा है पर साथ ही प्रसन्नता की बात यह है कि आज यह सोच बदल रही है। हमारे देश और विश्व के कई संगठनों की तरफ से महिलाओं को सफल बनाने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। हमारे देश में घरेलू महिलाओं के रहन-सहन के स्तर को सुधारने से लेकर व्यवसाय शुरू करने के लिए निजी ऋण देने तक की योजनाएं सरकार द्वारा चलाई जा रही हैं जोकि धीरे-धीरे देश के आर्थिक और सामाजिक स्तर को सुधारने में बहुत बड़ी भूमिका निभाएंगे।

किसी भी राष्ट्र में नारी को सबल और सशक्त बनाने के लिए कोई जरूरी नहीं कि उनके लिए अलग से विशेष शिक्षा, नौकरी या सुविधाएं तैयार की जाएं, बस जरुरत इस बात की है कि जो भी विकल्प पुरुषों के लिए उपलब्ध हैं उनमे ही बराबरी या समानता के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए। साथ ही साथ उनके प्रयासों और योग्यता का आंकलन भी समान रूप से किया जाए।

जीतू राणा, एफपीएम 20012

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

प्राचीन काल में, भारतीय समाज में स्त्रियों का पुरुषों के समान स्तर था। स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाने पर अत्यंत बल दिया जाता था। कन्याओं को गुरुकुल में शास्त्र व शस्त्र की शिक्षा दी जाती थी। चाहे अपनी पसंद की विद्या अर्जित करने का अधिकार हो या स्वयंवर के माध्यम से अपनी पसंद का वर चुनने का अधिकार, हर प्रकार की स्वतंत्रता समाज में स्त्रियों को प्रदान की गई थी। चूंकि मां अपनी संतान की प्रथम गुरु होती है, अतः संतान के उत्तम चरित्र निर्माण के लिए भारतीय संस्कृति में मां का शिक्षित होना अनिवार्य था। इतिहास गवाह है कि वह दौर भारत का स्वर्णिम काल था।

परन्तु, समय बीतने के साथ समाज में स्त्रियों की इस स्थिति में भारी गिरावट आई। पितृसत्तात्मक सोच ने स्त्रियों से शिक्षा का मौलिक अधिकार छीन लिया। उनकी सामाजिक एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं पर अंकुश-सा लगा दिया गया। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज़ प्रथा, यौन उत्पीडन, कन्या भ्रण हत्या, घरेलू हिंसा जैसी अनेकानेक कुरीतियों ने समाज को पिछड़ेपन की जंजीरों में जकड़ लिया। कवियों की रचनाओ में देवी स्वरूप नारी 'अबला' बन चुकी थी।

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।

-मैथिलिशरण गुप्त

स्त्री सामाजिक बन्धनों में बंधी मात्र एक कठपुतली बन कर रह गई थी। किन्तु यह पतन केवल स्त्री जाति का नहीं था, अपितु सम्पूर्ण भारतीय समाज में इसके नकारात्मक परिणाम दिखाई दिए। समाज रुढ़िवादी विचारधाराओं से घिरा रहा। भारत में अशिक्षा, गरीबी, जनसंख्या विस्फोट आदि ने जन्म लिया। यहां तक कि आधारभूत सुविधाओं के आभाव में भारत विकासशील देश बना रहा।

समय के साथ कुछ बुद्धिजीवियों ने यह अहसास किया कि जब तक भारत की आबादी का अहम् हिस्सा अशिक्षित और शोषित रहेगा, तब तक भारत का विकास असंभव है। "मैं किसी समुदाय की प्रगति, महिलाओं ने जो प्रगति हासिल की है उससे मापता हूं।" भारतीय संविधान के कर्णधार डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के ये कथन इस बात के साक्ष्य हैं कि वर्तमान भारत की प्रगति का अभिन्न अंग भारत की महिलायें रहीं हैं। आज भारत नई उम्मीदों, नए प्रयासों और नए आयामों का उद्गम है। क्योंकि दमन और उत्पीड़न से मुक्त होकर नारी शक्ति ने आज घर की चार दीवारी लांघ कर खुद को विकास की ओर अग्रसर किया है। आज महिलायें सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति, न्यायपालिका आदि सभी क्षेत्रों में बढ़-चढ़ कर भागीदारी कर रही हैं, और यही कारण है कि आज हमारा समाज महिला सशक्तिकरण जैसे महत्वपूर्ण विषय पर सोचविचार कर रहा है। हालांकि सोचा जाए तो वह स्त्री जो ईश्वर की अद्वितीय शारीरिक व मानसिक क्षमताओं से परिपूर्ण कृति है, जो संसार के सृजन का कारक है, जो खुद शक्ति की परिभाषा है, क्या उसे सशक्तिकरण की आवश्यकता है?

आज जहां एक ओर भारत विश्व भर में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है, वहीं आज भी महिलाओं के प्रति हमारे समाज में बढ़ते भेद-भाव व अत्याचार हमारे देश की छवि को धूमिल कर रहे हैं। रूढ़िवादी सोच होते हुए भी आज भी महिलाओं को परंपरा व मर्यादा के बंधनों में देखना चाहती है। यही कारण है कि तमाम कानूनों के मानमर्दन शिक्षित व प्रतिष्ठित महिलाओं के साथ भी कार्यस्थल पर होता यौन उत्पीड़न, छेड़छाड़, असमानता, घरेलू हिंसा तथा मानसिक, भावात्मक, आर्थिक व शारीरिक शोषण से जुड़े मामले ये सवाल उठाते हैं कि समाज में वह कौन-सा स्तर है, जहां पहुँच कर महिलायें निर्भय होकर सम्मान और स्वतंत्रता का अनुभव कर पाएंगी? किसी ने लिखा है, "नारी में असीमित शक्ति होती है, फिर भी उसे समाज में अबला ही समझा जाता है।"

यह कथन ये सोचने पर मजबूर करता है कि सशक्तिकरण से पूर्व इन संकीर्ण तथा रुढ़िवादी मानसिकताओं से विमुक्तिकरण अति आवश्यक है। अपने बच्चे के पालन-पोषण के साथ-साथ पेशेवर और घरेलू दोनों कर्तव्यों का प्रबंधन करते हुए दोहरी भूमिका का बोझ महिलाओं से बेहतर कोई नहीं निर्वहन कर सकता। अवैतनिक श्रम को भी पूर्ण निष्ठा से करने वाली महिलायें इतनी सक्षम हैं कि वे अपने घर के साथ-साथ अपने समाज, यहां तक कि सम्पूर्ण देश का संचालन कुशलतापूर्वक कर सकती हैं, बशर्ते ज़रूरत है

तो केवल एक सुरक्षित और सभ्य समाज की, जो उन्हें अपनी प्रतिभा और क्षमता के अनुरूप पनपने का वातावरण प्रदान करे, उनको एक ऐसा माहौल प्रदान करे, जिसमें वे अपनी इच्छाशक्ति को विकसित कर सकें तथा बिना किसी भेदभाव व असमानता के मुक्त आकाश में अपने सपनों के पंख फैलाकर उड़ सकें।

जिस दिन वास्तविकता में हमारा समाज आधुनिकता की इस विचारधारा पर चलने लगेगा तथा महिलाओं को पुरुषों से भिन्न नहीं समझा जाएगा, उस दिन सशक्तिकरण जैसे शब्दों की आवश्यकता ही नहीं रहेगी और हमारा भारतवर्ष सही मायनों में एक शक्तिशाली और संपन्न राष्ट्र बन जाएगा; क्योंकि "प्रत्येक देश के दो पंख होते हैं, एक स्त्री और दूसरा पुरुष और देश की उन्नति सिर्फ एक पंख से उड़ान भरने पर नहीं हो सकती"।

मधुरेन्द्र कुमार, कनिष्ठ लिपिक, कार्मिक अनुभाग

नारी सशक्तिकरण

पहले वाली हूं नहीं, आज की नारी हूं मैं
किसी के ऊपर बोझ नहीं, फिर हर रोज क्यों घोटी जाती हूं
अब इस घुटन से निकलने लगी हूं,
क्योंकि खुद को समझने लगी हूं
क्या कर सकती हूं अब इस बात से परिचित हो चुकी हूं
क्योंकि पहले वाली हूं नहीं, आज की नारी हूं मैं

सतीप्रथा में पति के साथ जलकर मरने वाली नहीं हूं मैं
अब तो पति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाली हूं मैं
कैद नहीं कर सकते दीवारो में,
अन्तरिक्ष में उड़ने वाली कल्पना हूं मैं
कन्धों पर सितारों से सुसज्जित किरण बेदी हूं मैं
क्योंकि पहले वाली हूं नहीं, आज की नारी हूं मैं

जो हमें कुछ समझते नहीं, उनके लिए प्रश्नचिह्न हूं मैं
और जो समझते है, उनके लिए मिसाल हूं मैं
तुम जो जुल्म सदियों से करते आ रहे हो
हृदय की जो आग जला रहे हो,
उससे निकली हुई चिंगारी हूं मैं
क्योंकि पहले वाली हूं नहीं, आज की नारी हूं मैं
आओ अब कर लो मुकाबला, किसी से कम नहीं हूं मैं

तुम्हारे घर में तो क्या, देश के सरहद पर भी हूं
मैं जहां न्याय मिलता है, उस अदालत की न्यायाधीश हूं मैं
जहां जीवनदान मिलता है, उस अस्पताल में भी हूं मैं
क्योंकि पहले वाली हूं नहीं, आज की नारी हूं मैं

अब मुझसे मेरे अधिकार कोई छीन नहीं सकता
अब कोई मरने के लिए मजबूर कर नहीं सकता
अब मुझे कोई दहेज के लिए जला नहीं सकता
क्योंकि उनको पता है उनके लिए काली हूं मैं
क्योंकि पहले वाली हूं नहीं, आज की नारी हूं मैं

कुछ लोग हमें समझते कमजोर हैं
उनको पता नहीं कि उनकी सोच की बहार हूं मैं
उनके अत्याचारों एवं यातनाओं की तूफान हूं मैं
प्रतियोगियों के लिए द्वन्द्व की ललकार हूं मैं
क्योंकि पहले वाली हूं नहीं, आज की नारी हूं मैं

एक मां, एक बहन, एक बेटी का न अपमान करो
आओ हम सब मिलकर नारी का सम्मान करे,
नारी का सम्मान करें।

कमलजीत, यूडीसी, सम्पदा विभाग

महिला सशक्तिकरण

हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत में महिलाओं का अति प्राचीनकाल से ही सम्मानजनक स्थान रहा हैं। वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा और सामाजिक क्षेत्रों में पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त थे। लेकिन उत्तरवैदिक काल आते-आते पर्दा प्रथा, अशिक्षा तथा अन्य कुरितियां फैलती गईं और नारी सिर्फ घर की चहारदीवारी में कैद होने लगी तथा पुरुषों के निजी स्वामित्व वाली वस्तु मानी जाने लगी। सामाजिक अंधविश्वास, पाखंड, अशिक्षा तथा पितृ प्रधान समाज में महिलाओं की स्थति बद से बदतर होती चली गई।

आधुनिक काल में शिक्षा के प्रचार, समाज सुधारकों के प्रयासों से महिला के सम्मान तथा अधिकारों के लिए आवाज उठने लगी। महिला सशक्तिकरण जोर पकड़ने लगा। महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं की सकारात्मक सहभागिता आवश्यक है। महिलाओं के प्रति समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाकर पुराने नकारात्मक सामाजिक मूल्यों को परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ

महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य ऐसा वातावरण सृजन करने से हैं जिसमे प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करते हुए अपने जीवन व कार्यों के लिए निर्णय स्वयं ले सके। वर्तमान में नारी विकास के लिए हमारे सविधान में मूल अधिकारों व नीति निर्देशों में भी कई प्रावधान हैं, जिनमे नारी को पुरुष के समान अधिकार दिए हैं। 2005 में हिन्दू उत्तराधिकार कानून में संशोधन से बेटियों को भी बेटों के बराबर अधिकार प्रदान किये गये हैं। राजनितिक क्षेत्र में भी नारी ने पुरुषों के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर अपनी पहचान बनाई हैं।

देश के प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति व राज्यों के मुख्यमंत्री, लोकसभा के अध्यक्ष आदि पदों पर प्रतिष्ठित रही हैं। सामाजिक क्षेत्र में भी नारी आगे रही हैं। जिनमें रमाबाई पंडित ने स्त्री शिक्षा पर कार्य किया तो मदर टेरेसा ने सर्वधर्म समभाव से सभी गरीबों के लिए मुक्तभाव से सेवा कार्य किया है। आर्थिक क्षेत्रों में भी पुरुषों के बराबर व्यापार में हाथ आजमा रही हैं व सफल भी हो रही हैं। इनमे इंद्रा नूरी आदि महिलाओं के नाम आते हैं। साहित्यिक क्षेत्र में मानवीय संवेदना को गहराई तक महसूस कर लिखने में महादेवी वर्मा, सरोजनी नायडू जैसी महिला लेखिकाओं के नाम मुख्य हैं। खेल के क्षेत्र में भी सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, अपूर्वा चन्देल जैसी खिलाड़ियों ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं।

भारत में नारी सशक्तिकरण का इतिहास

भारत के स्वतंत्र होने का इतिहास भी इस तथ्य का साक्षी हैं। वर्ष 1857 से वर्ष 1947 तक लम्बे स्वतंत्रता संघर्ष में देशवासियों के हृदय में देशभक्ति एवं क्रांति की भावों को आरोपित करने वाले युवाओं के साथ युवतियों की भूमिका भी सराहनीय रही। वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायकों में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई भी थी। उनके समान अद्भुत साहस, शौर्य, पराक्रम एवं जज्बा आज भी किसी में देख पाना संभव नहीं हैं. जबकि रानी लक्ष्मीबाई तो तब मात्र 30 वर्ष की थी। उनकी सेना की एक और जाबाज झलकारीबाई युवती ही थी। उन्ही की प्रेरणा से सुंदर, मुंदर, जूही, मोतीबाई जैसी नृत्यांगनाएं क्रांति की वीरांगनाएं बन गई। स्वाधीनता की बलिवेदी पर स्वयं का सर्वस्व लुटाने वाली ये वीरांगनाएं आज भी किसी प्रेरणा से कम नहीं हैं।

महिला सशक्तिकरण के प्रयास

सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए 8 मार्च 2010 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय मिशन राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल द्वारा शुरू किया गया था । राज्य सरकारों ने भी महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाए शुरू की गईं. जैसे स्वास्थ्य सखी योजना, कामधेनु योजना, स्वावलम्बन योजना, स्वशक्ति योजना आदि वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण के

बारे में स्वयं महिलाए भी जागरूक हो गईं हैं। यह शिक्षा के प्रचार का प्रभाव हैं।

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान

आदिकाल से हमारा देश नारी-पूजक रहा हैं, तभी तो नारायण से पूर्व लक्ष्मी, शंकर से पूर्व भवानी, राम के पूर्व सीता और कृष्ण के पूर्व राधा का नामोच्चार होता हैं। भारतीय समाज में विदुषी महिलाओं की कोई भी कमी नहीं रहीं। रणभूमि में भारतीय नारी ने अपने जौहर दिखाए, लेकिन दैनिक जीवन में भारतीय नारी कभी नर के समकक्ष सम्मान की अधिकारिणी नहीं बन पाई।

नारी की वास्तविक स्थिति

समाज का लगभग पचास प्रतिशत वर्ग नारी वर्ग है किन्तु समाज के निर्माण में उसकी भूमिका को प्रायः नजरअंदाज किया जाता हैं। सच तो यह है कि समाज का पुरुष वर्ग नारी की भूमिका का विस्तार नहीं चाहता है। उसे भय है कि नारी अभ्युदय से उसका महत्व और एकाधिकार समाप्त हो जाएगी। अशिक्षा और रूढ़िवादी दृष्टिकोण ने नारी की भूमिका की स्थिति को शोचनीय बना रखा है।

नारी शिक्षा का महत्व

शिक्षित नारी तो दो कुलों का उद्धार करती हैं। नारी को अशिक्षित रखकर राष्ट्र की आधी क्षमता का विनाश किया जा रहा है। शिक्षित नारी ही बच्चों का लालन-पोषण ठीक ढंग से कर पाती हैं। वह बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित कर सकती हैं। उसे समाज में सभ्य ढंग से जीना आता हैं। शिक्षा, नारी में आत्मविश्वास पैदा करती हैं। और बुरे दिनों में उसकी सबसे विश्वसनीय सहायिका बनती है।

शिक्षित नारी की भूमिका

नारी शिक्षा का देश में जितना प्रचार प्रसार हुआ हैं। उसका श्रेष्ठ परिणाम सभी के सामने है। आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने की क्षमता रखती हैं। शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, धर्म, समाज सेवा और सेना में भी आज नारी प्रशंसनीय भूमिका निभा रही हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में आज नारी चेतना करवट ले रही है। उनको स्थायी स्वशासन में 30 प्रतिशत भागीदारी का अधिकार मिल गया हैं। किन्तु यहां भी अशिक्षा ने उसकी भूमिका को पृष्टभूमि में डाल रखा हैं। पंचायतों में उनके प्रतिनिधि ही भाग ले रहे हैं।

नारी आज सफल व्यवसायी हैं, प्रबन्धक, अध्यापक, वकील, मंत्री, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री तथा वैज्ञानिक है तथा साहसिक अंतरिक्ष अभियानों में पुरुषों से होड़ लेती दिख रही हैं। कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

वर्तमान समाज में नारी की स्थिति

स्वतंत्र भारत में नारी की गरिमा अगड़ाई ली है। वह फिर से अपने पूर्ववत गौरव को पाने के लिए बैचेन हो उठी हैं। शिक्षा व्यवस्था, विज्ञान, सैन्य सेवा, चिकित्सा, कला, राजनीति हर क्षेत्र में वह पुरुष से कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं। वह सरपंच है, जिला अध्यक्ष है, मेयर है, मुख्यमंत्री है, प्रधानमंत्री है, राष्ट्रपति है। लेकिन अभी तक तो यह सौभाग्य नगर निवासिनी नारी के हिस्से में ही दिखाई देता है। उसकी ग्रामवासिनी करोड़ों बहिनें अभी तक अशिक्षा, उपेक्षा और पुरुष के अत्याचार झेलने को विवश हैं। एक और नारी के सशक्तिकरण की, उसे संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण देने की बातें हो रही हैं तो दूसरी और पुरुष वर्ग उसे नाना प्रकार के पाखंडों और प्रलोभनों से छलने में लगा हुआ हैं।

सशक्तिकरण हेतु किये जा रहे प्रयास- भारतीय नारी का भविष्य उज्ज्वल है। वह स्वावलम्बी बनना चाहती हैं। अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाना चाहती हैं। सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज कराना चाहती हैं ।

हमारे देश में पुरुषों के मुकाबले मात्र 60 प्रतिशत महिलाएं ही शिक्षित हैं। शहरी क्षेत्रों में केवल 30 प्रतिशत महिलाएं कंपनियों में कार्यरत है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र तो में महिलाएं कम पैसों में दैनिक मजदूरी कर रही हैं ।

एक रिपोर्ट के मुताबिक, आज भी महिलाएं पुरुषों से 20 प्रतिशत कम भुगतान पाती हैं। और तो और आज भी शक्ति प्रदर्शन के क्षेत्र में भी महिलाओं का योगदान मात्र 28.5 प्रतिशत है। बात की जाएं राजनीति में महिलाओं की स्थिति की, तो संसद में महिलाएं केवल 11% हैं। इसके अलावा जारी रिपोर्ट के मुताबिक, कृषि में महिलाओं का प्रतिशत 76%, विनिर्माण के क्षेत्र में 10%, इंजीनियरिंग के क्षेत्र में 28%, आईटी क्षेत्र में 40%, प्रबंध के शहर में 35%, कानून से जुड़े रोजगार में 32% महिलाएं कार्यरत हैं। जो कि पुरुषों के मुकाबले काफी कम है। इतना ही नहीं, स्वास्थ्य दृष्टि से देखें तब भी हर साल ना जाने कितनी ही महिलाएं सही ना मिलने की वजह से एनीमिया की शिकार हो जाती हैं। तो वही कुछ महिलाएं आज भी अपने स्वास्थ्य और माहवारी के दिनों को लेकर जागरूक नहीं है, जिस वजह से उनकी रोग-ग्रस्तता के आंकड़े भी हैरान कर देने वाले हैं।

वह आज भी घर और बच्चों की देखरेख में अपने सपनों का बलिदान कर रही है। इतना ही नहीं कुछ जगहों पर तो, महिलाओं को अपने तरीके से उठने-बैठने, कपड़े पहनने और अपनी आजादी से जीने के अधिकार से भी वंचित रखा गया है। और अगर कोई स्त्री अपने अधिकारों के लिए आगे आती है तो उसे सबक सिखाने के उद्देश्य से उसके साथ दुष्कर्म और शारीरिक शोषण जैसे जघन्य अपराध को अंजाम दिया जाता है।

ऐसे में स्त्री समाज का पतन किसी भी देश के भविष्य की नींव को हिला सकता है। इसलिए हमें आज भी नारी सशक्तिकरण के दिशा में अधिक प्रयासरत होने की आवश्यकता है। नारी शक्ति की अनूठी मिसाल हमारे देश का इतिहास सदैव ही नारियों के शौर्य और विजय की गाथाएं सुनाता है। प्राचीन भारत में देश में गार्गी, अनुसूया, वैदेही, आम्रपाली, रजिया सुल्तान, रानी लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, दुर्गावती, मीराबाई, एनी बेसेंट, कस्तूरबा गांधी, विजय लक्ष्मी पंडित, सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, मदर टेरेसा, एम फातिमा बीबी, लक्ष्मी सहगल आदि कई शक्तिशाली नारियों ने जन्म लिया।

नारी स्वालंबन की दिशा में उठाए गए महत्वपूर्ण

भारत सरकार द्वारा ग्रामीण और शहरी महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन के लिए फ्री सिलाई मशीन योजना, उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन देना, कामगार महिलाओं के लिए सुरक्षित मातृत्व अश्वासन सुमन योजना, लड़कियों की पढ़ाई और शादी के उद्देश्य से सुकन्या समृद्धि योजना, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए बेटी बचाओ बेटी बचाओ योजना, लड़कियों और महिलाओं को छेड़छाड़ से बचाने के लिए स्पेशल कानून और वूमेन हेल्पलाइन जारी करना समेत राजीव गांधी सबला योजना, इंदिरा गांधी मातृत्व योजना, लड़कियों की शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना, किशोरी शक्ति योजना, प्रेरणा योजना, राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति, स्वयं सहायता समूह, महिला बाल विकास परियोजना आदि का संचालन किया जा रहा है। साथ ही सरकार महिलाओं के आर्थिक विकास के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रमों का आयोजन भी करती है। ताकि महिलाएं आत्मनिर्भर बनकर देश के विकास में अपनी भूमिका निभा सकें।

उपसंहार

पुरुष और नारी के संतुलित सहयोग में ही दोनों की भलाई हैं। दोनों एक दूसरे को आदर दें तथा एक दूसरे को आगे बढ़ाने में सहयोग करें। इससे ही भारत का भविष्य उज्ज्वल होगा।

माला चौधरी, अधीक्षक, वित्त लेखा विभाग

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण का मतलब महिला की शक्ति से होता है। आज के समय में हर देश यही चाहता है की उसके देश की महिला खुद अपनी रक्षा कर सके। आज हम सब जानते हैं कि हमारे समाज की महिलाएं किसी भी पुरुष से कम नहीं है। आज की महिलाएं वह सब काम कर रही है जो पुरुष करते हैं। अगर बात शिक्षा की करे तो हमारे भारत में हर एक परीक्षा और प्रतियोगिता में प्रायः महिलाएं ही टॉप कर रही हैं। हमारे देश में नारी का महत्त्व प्राचीन काल से है। प्राचीन काल में हमारे समाज में नारी का बहुत महत्व था। लेकिन आज बहुत से ऐसे लोग है जो नारी को एक बोझ समझते है। अगर हम नारी को एक बोझ ना समझते तो हमारे समाज की नारियां ऐसा-ऐसा काम कर सकती है जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते है। हमारे समाज में महिला सशक्तिकरण के लिए सबसे पहले लोगों की सोच को बदलना होगा।

हम सभी को मिलकर महिला सशक्तिकरण पर बल देना होगा ताकि महिलाएं हमारे देश की अर्थव्यवस्था में पुरुषों के जितना अपना योगदान दे सकें। महिला सशक्तिकरण के बिना किसी भी परिवार का पूरी तरह से विकास होना बहुत मुश्किल है। अगर हमारे समाज में महिलाएं सशक्त हो जाती हैं तो हमारा पूरा का पूरा समाज पूरी तरह से सशक्त हो जायेगा। जिस देश में महिलाएं सशक्त है वह देश दुनिया में अपनी छाप छोड़ रहा है। आज हमारा समाज और देश बहुत से चीजों में दूसरे देशों से पीछे है इसका एक मुख्य कारण महिला सशक्तिकरण का न होना भी है। अगर किसी परिवार की महिला पूरी तरह से सशक्त है तो उस परिवार में होने वाली किसी भी समस्या को महिला और पुरुष बहुत ही आसनी से हल कर सकते हैं। ठीक इसी प्रकार यदि हमारे देश की सभी महिलाएं पूरी तरह से सशक्त हो जाये तो इस देश में होने वाली किसी भी प्रकार की कोई भी समस्या को हम लोग मिलकर बहुत ही आसान तरीके से हल कर सकते हैं अगर भारत में सभी महिलाएं सशक्त हो जाये तो भारत को सबसे बड़ा ये फायदा होगा की भारत की जनसंख्या इतनी तेजी से नहीं बढ़ेगी। अगर हम बात करें महिलाओं की तो महिलाएं किसी भी प्रकार की पारिवारिक अथवा सामाजिक समस्या का समाधान पुरुषों की अपेक्षा बहुत अच्छी तरह से करती हैं।

अबला नहीं सबला है नारी

स्त्री समाज का आधार होती है। एक समाज के निर्माण में स्त्री की मुख्य भूमिका होती है। हमारे ग्रंथों में स्त्री को संसार की जननी कहा गया है। उसे देवी की तरह पूजा व आदर दिया जाता है। धर्म ग्रंथों में स्त्री को पुरुष की सहधर्मचारिणी कहा गया है, जो उसके धर्म आदि कार्यों में उसका बराबर का सहयोग करती है। उसे पुरुषों के समान ही जीवन का मजबूत आधार स्तंभ माना गया है।

शिक्षा ने स्त्री की परिभाषा बदलकर रख दी है। पहले स्त्री को अबला माना जाता था। परन्तु आज की नारी अबला नहीं है, वह सबला है। हर क्षेत्र में उसने अपनी सफलता के झंडे गाड़ दिए हैं। वह आज नौकरी करने लगी है। हर क्षेत्र में उसकी योग्यता को सराहा जाता है। नौकरी के साथ आज वह अपना परिवार भी बहुत अच्छी तरह से संभाल रही है। बीते समय में स्त्री का घर से निकलकर नौकरी करना बहुत बुरा माना जाता था। उसे घर में रखी वस्तु के समान ही समझा जाता है। लेकिन जबसे वह शिक्षित हुई है, उसने इस धारणा के खण्ड-खण्ड कर दिए हैं। आज बेटों के स्थान पर वह पूरी निपुणता के साथ घर की ज़िम्मेदारियां संभाल रही है। नौकरी ने उसके अस्तित्व को सम्मान और गौरव दिया है। आज वह किसी पर आश्रित नहीं है। नौकरी को वह उतनी ज़िम्मेदारी के साथ निभा रही है जितनी ज़िम्मेदारी के साथ घर-परिवार संभाला करती थी।

वर्तमान समाज में नारी की भूमिका

एक बार एक महिला ने एक संत से पूछा की कोई भी स्त्री अपनी होने वाली संतान को सुसंस्कारी और ज्ञानवान कैसे बना सकती है? तो संत ने कहा की स्त्री स्वयं ज्ञानी और संस्कार वान होकर ऐसा कर सकती है और साथ ही, यह भी कहा कि किसी भी स्त्री

में ही वह शक्ति होती है, कि वह समाज को सही दिशा दे सके लेकिन शुरुवात उसे स्वयं से तथा अपनी संतान से करनी होगी।

नारी को ही बच्चों का पथ प्रदर्शक और पहला गुरु माना गया है। नारी ही शिशु के संस्कार और शिक्षा के लिए उत्तरदायी है। जहां एक तरफ नारी अपने घर परिवार को एकता के सूत्र में बांधने की अहम भूमिका निभाती है तो वहीं दूसरी तरफ नारी बच्चों को एक आदर्श और अच्छा इंसान बनने की शिक्षा प्रदान करती है। नारी में जो संवेदना और सहनशीलता होती है, वह किसी और में नहीं हो सकती है। यह भी कह सकते हैं, कि नारी की भूमिका के बिना हमारा समाज आत्महीन सा प्रतीत होगा।

नारी और नौकरी

भारत सरकार ने नारी को पुरुष के सदृशः लाने के लिए अपना पूरा जोर लगा दिया है। नारियों को नौकरी में आरक्षण दिया, प्रत्येक विभाग में उनके पदों की संख्या बढ़ायी, ताकि नारी की स्थिति में परिवर्तन हो इसके परिणामस्वरूप हम देख सकते हैं कि आज की भारतीय नारी हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर ही सेवाएं दे रहीं हैं। इस दृश्य को देखकर बहुत से पुरानी रीति-नीतियों वाले मनुष्यों की आंखे भी खुल गयी हैं और वे भी अपनी बच्चियों को पढ़ा-लिखा कर एक अच्छे पद पर नौकरी करता देखना चाहते हैं। अमीर हो या गरीब सभी अपनी बच्चियों को बेहतर शिक्षा देने की इच्छा जता रहे हैं।

आधुनिक काल में नारियों की स्थिति आशाजनक है, स्वतंत्रता संग्राम में नारियों की अभूतपूर्व भूमिका रही रानी लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई आदि नारियों ने अपनी वीरता और त्याग का परिचय दिया। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि ने नारियों की दशा सुधारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिससे आज की नारी को समाज तथा देश के प्रत्येक विषय में बोलने के पूर्ण अधिकार है, अब वे केवल भोग विलासिता की वस्तु मात्र नहीं रही, आज उनका स्वतंत्र व्यक्तित्व है और स्वतंत्र सत्ता है। जो क्षेत्र सिर्फ मजबूत पुरुषों के लिए माने जाते थे, जैसे आर्मी, नेवी या एयरफोर्स इत्यादि आज इन सभी में नारियों की ऊंचे-उंचे पदों पर मौजूदगी है। यहीं नहीं हमारे देश में जब स्त्रियों को घरों में बंद रखने का रिवाज चरम पर था, तब एक स्त्री ही देश के सबसे ऊंचे पद प्रधानमंत्री बनकर देश का संचालन किया था।

नारीशक्ति का विकास

आज भी स्त्री प्रताड़ना तथा बलात्कार जैसे हेय कृत्य की ख़बरों से अखबार और न्यूज़ चैनल भरे होते हैं। इसलिए नारी सशक्तिकरण सिर्फ नारों से नहीं बल्कि कुछ क्रांतिकारी कदम उठाने से पूर्ण होगा। क्योंकि जहां के अपराधी प्रवृत्तियों के लोगों को कानून का डर न होगा, तो वे स्त्रियों को सिर्फ खिलवाड़ की वस्तु ही समझेंगे। अगर वास्तव में नारी को अपनी जगह बनानी है, तो नारी शक्ति को अपनी ताकत का आभास करना ही पड़ेगा। क्योंकि कोई अन्य व्यक्ति किसी को सिर्फ सहानुभूति ही दे सकता है।

शक्ति उसे स्वयं प्राप्त करनी होती है। ठीक उसी प्रकार स्त्रियों को भी अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों का विरोध करना ही होगा और अपनी सुरक्षा के स्थान पर अपने हक की बात करनी होगी, क्योंकि सुरक्षा उनका अधिकार है। आज स्त्रियों को पुरुषों की भांति समान अधिकार देना ही होगा यह उनका हक है और उनके हक के अनुसार उन्हें समाज में उचित स्थान मिलना ही चाहिए। हमें शुरुआत अपने घर की नारियों से करना होगा और उन्हें सहायता के साथ प्रोत्साहन भी देना होगा। तब जाकर कहीं नारी शक्ति का उदय हो सकेगा।

संगीता श्रीवास्तव, आरटीआई प्रकोष्ठ

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

शिक्षा जीवन के लिये परम आवश्यक है। चाहे पुरुष हो या नारी, सबल नारी तभी हो सकती है जब वह शिक्षित हो। शिक्षित नारी सबल राष्ट्र। नारी और पुरुष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये है जिसमें सामंजस्य होने पर ही गाड़ी राष्ट्र के विकास के लिये सरपट दौड़ सकती है। शिक्षा से वंचित नारी राष्ट्र के विकास के अवसरों को वंचित करती है। भारतीय समाज में नारी को अनेक दृष्टियों से सम्मानजनक स्थान दिया गया है यदि नारी शिक्षित है तो कोई भी स्थिति उसके लिए दयनीय कतई नहीं हो सकती।

आज की नारी अपने अधिकारों के लिये जागरूक है, उसमें नारी चेतना का प्रादुर्भाव हुआ है। देश के अनेक समाज सुधारकों, वर्तमान सरकारों में महिलाओं के नियोजित एवं संगठित प्रयासों के फलस्वरूप नारियां सबल हो पाई हैं जिससे राष्ट्र मजबूत हो रहा है।

समाज में नारी का स्थान

भारतीय समाज में नारी की भूमिका को अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना तथा उच्च स्थान प्रदान किया गया है। उसके सशक्त रूप को स्वीकारते हुए कहा गया हैः यंत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वही देवता का भी निवास होता है। एक नारी ही गृहस्थी को उचित प्रकार से चला सकती है, संतान का पालन पोषण करके अपने सहयोग, धैर्य, परिश्रम, प्रेम, स्नेह ममता हर प्रकार के वातावरण को जीवन्त एवं प्रगतिशील बनाने की दिशा में नारी का विशेष महत्व होता है और वह उसमें भरसक प्रयत्नशील रहती है। यह नारी राष्ट्र के विकास में कंधे से कंधा मिल कर आगे बढ़ रही है।

नारी को सबल बनाने हेतु प्रयास

प्राचीन समय में नारी का स्थान बहुत ही सम्माननीय था। स्त्री के बिना कोई यज्ञ अपूर्ण माना जाता था। उन्हें शिक्षा प्राप्ति, शास्त्रार्थ और अपने विभिन्न कौशलों का विकास करने की स्वतन्त्रता प्राप्त थी। पस्तु मध्यकाल में पुरुषों की स्वार्थपरता, काम लोलुपता आदि के कारण, नारी को प्राप्त स्वतंत्रता में गिरावट दर्ज की गई। उसके अधिकारों पर कुठाराघात होने लगा। विलियम शेक्सपियर, अंग्रेजी नाटककार ने तो यहां तक लिखा कि Frailty! Thy name is Women (दुर्बलता! तेरा नाम औरत है)। इस प्रकार से औरत को अपमानित किया जाने लगा।

समय के साथ नारी जागरूक हुई और उन अत्याचारों के खिलाफ नारी सशक्ति का बिगुल बज उठा। संविधान ने नारी को सशक्त बनाने के लिये समान अधिकार दिये, मत का अधिकार, पिता की सम्पति में भी अधिकार दिया है। संविधान निर्माताओं ने सही ही समझा कि नारी से ही एक समृद्ध और सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। महिला आरक्षण एवं शिक्षा ने उनमें नये आत्मविश्वास का संचार किया और अब परिणाम यह है कि प्रत्येक क्षेत्र में नारी सक्रिय भूमिका निर्वाह कर रही हैं। आज तो नारी बड़े-बड़े पदो पर आसीन है और सुचारू ढंग से कार्य कर रही हैं जिसमें पुलिस प्रशासन, न्याय, ब्यूरोक्रेसी, इजीनियरिंग, मेडिकल, राजनीति आदि शामिल है। नारी अंतरिक्ष में जाने से लेकर हर क्षेत्र में अपने झण्डे गाड़ रही हैं। राजनीति में इन्दिरा गांधी, सुषमा स्वराज्य, निर्मला सीतारमण राष्ट्र के गौरव को बढ़ाया है। अंतरिक्ष यात्री बनकर कल्पना चावला ने सिद्ध किया कि नारी सबल है।

हमारा राष्ट्र शक्तिशाली व विकासशील देशों की सूची में निरंतर आगे बढ़ता जा रहा है। आज की नारी केवल महिला मुक्ति आंदोलन तक ही सीमित नहीं है। वह साकार साक्षात रूप से राष्ट्र के विकास में योगदान दे रही हैं। प्रत्येक क्षेत्र में सिद्ध कर रही है कि उसका कार्यक्षेत्र और क्षमता समर्थ से भरा है जो विकास में अहम भूमिका निभा सकता है। जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में नारी का गौरव प्रतिष्ठित करते हुए नारी के सम्पूर्ण सशक्त व्यक्तिव को एक ही पंक्ति में परिभाषित किया है :

नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में

राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका

आज महिलायें परिवारों के लिए धनोपार्जन में भी सहायक है। उनका प्रोत्साहन और सहभागिता इस दिशा में गौरव की बात है।

पारिवारिक जीवन को सम्पन्न बनाने में भी योगदान दे रही है। इसका सकारात्मक परिणाम यह कि भारत जैसे विकाशील देश में महिलाएं रोजगार भी कर रही हैं। हमारी कला और संस्कृति ने हमारी लोक धरोहर में, हमारे गृह उद्योगों में आज महिलाओं को एक नई भूमिका दी है जिससे वह सशक्त राष्ट्र के निर्माण में सहयोग प्रदान कर रही हैं। 18 दिसंबर 1971 को संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में नारी जाति के विरुद्ध सभी प्रकार के भेदभाव की समाप्ति पर प्रस्तुत अधिनियम को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। भारत सहित विश्व की अन्य महिला प्रधानमंत्रियों में यह सिद्ध कर दिखाया है कि सबल राष्ट्र बनाने की बागडोर को अपने हाथो में लेकर उन्होंने उत्कृष्ट नेतृत्व व समृद्धि प्रदान की है।

देश की सीमाओं पर नारी शक्ति

दुनिया का सबसे ऊंचा युद्ध क्षेत्र सियाचिन हो या अरुणाचल प्रवेश का खतरनाक पहाड़ी इलाका विजयनगर, भारतीय वायु सेना की महिला पायलट अपनी शक्ति से देश का मस्तक गौरव से ऊंचा कर रही है। भारतीय वायुसेना में इस समय लगभग 1300 महिला अधिकारी ग्राउड और एयर ड्यूटी कर रही है। सुखोई एसयू-30 एमकेआई फाइटर जेट की महिला शस्त्र सिस्टम ऑपरेटर फ्लाइट लेफ्टिनेंट तेजस्वी का कथन है कि हमारी सेना में एक से बढ़कर एक बुद्धिमान महिलाएं है। पुरुष और महिलाओं का प्रशिक्षण एक जैसा ही होता है। अंतरिक्ष हो या पृथ्वी पर मौजूद बेस सबसे पहले हम वायु योद्धा हैं। भारतीय वायुसेना में तीन फाइटर महिलाओं को शामिल किया गया है जो क्रमशः 1-अवनी चतुर्वेदी, 2-भावना कांत 3-शिवांगी सिंह हैं। भावना कांत ने मिग-21 उडाया। शिवांगी सिंह ने राफेल फाइटर, फलाइट लेफ्टिनेंट अवनी अवस्थी और ए. एन. अरुणाचल प्रदेश में चीन की सीमा के पास एलएसी के आसपास घने जगलो में एएलएच ध्रुव हेलीकॉप्टर उड़ाती है।

सरकार की अग्निवीर योजना में सेना में युवतियों को भी भर्ती किए जाने की तैयारी है। शिक्षित नारी अपने पैरों पर खड़ा होकर समाज का एक उपयोगी अंग बनती है। शिक्षित व विचारवान नारी सबल और मजबूत इरादों वाली होती हैं जिसकी अहम भूमिका से राष्ट्र भी सशक्त बन समृद्ध बनता है।

राम बरन, अधीक्षक

महिला सशक्तिकरण

उतारो मुझे जिस क्षेत्र में
सर्वश्रेष्ठ कर दिखाऊंगी,
औरो से अलग हूं
चाह नहीं है किसी अलग नाम की
कुछ अलग ही करके जाऊंगी
इसी को महान बनाऊंगी,
नारी हूं मैं इस युग की
जो सदियों में देखा तुमने
नारी की अलग पहचान बनाऊंगी
लिपटी साड़ी में कोमल तन को
हर घर में रहती थी वो
झुकी हुई सी नजरे थी

वाणी मध्यम मधुर सी थी
पर जान न सके थे उसके मन को
फिर भी तानो के आवाज प्रबल थी
हिम्मत न थी उफ करने की
अब बदल गई है ये पहचान
नारी की न साड़ी परिभाषा
वाणी अब भी मध्यम मधुर सी
पर कुछ कर गुजरने की है प्रबल सी
चाहे जो भी मैं बन जाऊंगी
गर्व से नारी ही कहलाऊंगी
चाहे युग कोई आए
मैं ही जगत जननी कहलाऊंगी।

राम बरन, अधीक्षक

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

सबल नारी राष्ट्र शक्ति का अभिन्न अंग होती है जिसे सशक्त और शामिल किये बिना कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नहीं हो सकता। सबल से अभिप्राय है जिसके पास बल है अथार्थ जो बल सहित है, बल वाला है, बलवान है, वही सबल है। अतः कहा जा सकता है कि जिस राष्ट्र की नारी सबल है बलवान है उसके लिए वह निश्चित रूप से समृद्ध और मजबूत है। जिस राष्ट्र की नींव सबल और मजबूत है तो दुनिया की कोई ताकत उसे हिला नहीं सकती। दूसरे शब्दों में कहें तो हम कह सकते हैं कि जिस राष्ट्र कि नारी ने कदम दर कदम सफलता की सीढ़ी चढ़ कर अपने आप को सफल सिद्ध कर दिया हो उस राष्ट्र को निर्बल नहीं कहा जा सकता वह राष्ट्र निश्चित रूप से सशक्त अर्थात प्रबल है क्योंकि नारी किसी भी राष्ट्र कि इकाई ही नहीं बल्कि उसकी जन्मदात्री, प्रथम गुरु, मार्गदर्शक, ममता स्वरूपा, सरंक्षक, जीवन का आकर्षण और सभ्यता और संस्कृति की संवाहक भी है।

भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा महिलाओं को पुरुषों के बराबर अवसर प्रदान करने का प्रयास किया गया है जो सुरक्षा के पांच पहलुओं पर आधारित एक व्यापक मिशन है। ये पांच पहलू है- मां एवं शिशु की स्वास्थ्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, वित्तीय सुरक्षा, शैक्षणिक एवं वित्तीय कार्यक्रमों के माध्यम से भविष्य की सुरक्षा तथा महिलाओं की सलामती। इस प्रकार हम पाते हैं कि जब भी राष्ट्र को सशक्त करने की बात आती है तो महिला सशक्तिकरण के पहलू को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

किसी संस्कृति को अगर समझना है तो सबसे आसान तरीका है कि उस संस्कृति में नारी के हालात को समझने की कोशिश की जाए। किसी भी देश के विकास संबंधी सूचकांक को निर्धारित करने हेतु उद्योग, व्यापार, खाद्यान्न उपलब्धता, शिक्षा इत्यादि के स्तर के साथ ही इस देश की महिलाओं की स्थिति का भी अध्ययन किया जाता है। नारी की सुदृढ़ एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत, समृद्ध तथा मज़बूत समाज के संकेतक है।

वर्तमान में नारी प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही हैं। शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं में नई चेतना भर दी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका में वृद्धि हो रही है। आज महिलाएं राजनीति, बिज़नेस, कला तथा खेल सहित रक्षा क्षेत्र में भी नए आयाम गढ़ रही हैं। सेना जैसे संवेदनशील क्षेत्र में भी महिलाएं अपनी भूमिका का पुरुषों के साथ कदम मिलाकर निवर्हन कर रही हैं। यह उनकी कार्यक्षमता का संकेतक है, क्योंकि प्रायः कमज़ोर समझी जाने वाली महिलाएं आज कठिन माने जाने वाले क्षेत्रों में भी अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं। गांधी जी ने कहा था, ''महिलाएं पुरुषों से बेहतर सैनिक साबित हो सकती हैं। बस उनको मौका देने की ज़रूरत है।'' कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, अवनी चतुर्वेदी जैसी अनेक नारियां आज समाज में महिलाओं की मज़बूत छवि प्रस्तुत कर रही हैं। अग्नि मिसाइल के विकास में प्रमुख भूमिका निभाने वाली टेंसी थॉमस को 'मिसाइल वुमेन' के नाम से जाना जाता है।

नारी का सबल होना, समाज और अर्थव्यवस्था में उनकी प्रभावी भागीदारी एक सशक्त राष्ट्र की कसौटी है। इसका जीता-जागता उदाहरण झारखण्ड में सखी मॉडल का गठन और उनके द्वारा पंचायतों में मिनी बैंक चलाकर ग्रामीण महिलाओं को सखी बैंक से जोड़ा जा रहा है और उनको प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। महीने में प्रत्येक मिनी बैंक में लगभग 10 लाख रुपए का लेन-देन होता है, जिससे समूह को लगभग 5 हजार रुपए का लाभ मिलता है। महिला समूह के सदस्य को पैसा जमा करने के लिए बैंक नहीं जाना पड़ता है। मिनी बैंक की सखी महिलाओं के पास जाकर पैसा जमा और निकासी करती है। यह देश में महिला विकास से जुड़ा बहुत साकारात्मक उदाहरण है।

शीर्ष क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपनी सफलता की कहानी दुनिया के सामने रखी है। आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के कारण महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है। देश के कई आर्थिक संस्थानों के शीर्ष पदों पर महिलाएं कार्यभार संभाल रही हैं तथा देश के विकास में अपना योगदान दे रही हैं। अरुंधति महाचार्य, शिखा शर्मा, नैनालाल किदवई, सावित्री जिंदल आदि आर्थिक क्षेत्र में शीर्ष पदों पर काबिज हैं।

इन सबके बावजूद सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि आज भी महिला कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा अन्याय एवं शोषण का शिकार होता है। भारत में आज भी कई कार्यस्थलों पर महिलाओं का यौन शोषण होता है। 'मी टू' अभियान यह सिद्ध करता है कि महिलाएं किस प्रकार से कार्यस्थल पर प्रताड़ित की जाती हैं। परंतु सभी सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ते हुए उन्होंने इसके खिलाफ

अपनी आवाज भी बुलंद की है। महिलाओं को अपने स्वतंत्र अस्तित्व का निर्माण करने और उसे कायम रखने हेतु स्वावलंबी और आत्मनिर्भर होना बहुत जरूरी है। साथ ही जो समाज और रिवाज स्त्रियों के विकास को उचित नहीं समझता उसे बदल देना आवश्यक है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा है, 'एक राष्ट्र हमेशा ही अपने यहां की महिलाओं से सशक्त बनता है, वह मां, बहन और पत्नी की भूमिकाओं में अपने नागरिकों का पालन पोषण करती है और तब जाकर यह सशक्त नागरिक, एक सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाते है।"

नारी वो शक्ति है, सबल है, वो भारत की नारी है,
न ज्यादा में, न कम में, वो सब में बराबर की अधिकारी है।

बाबूलाल, अधीक्षक, उद्यान

महिला सशक्तिकरण

मैं हूं आज की नारी अबला नहीं, हूं चिंगारी
मेरी चुप्पी की कमजोरी न समझो,
मुझे अपने ही समान समझों
जो मैं बोलूं तो फर्श पर आ जाये,
परिवार की माला टूटकर बिखर जाये
पर मेरा स्वभाव नहीं है तोडना, खुद टूटकर अखिल विश्व जोडना

तकलीफे मैं सहती हूं रोज, फिर भी बढती हूं जीवन पथ पर रोज
मुझे गर्व है मैं नारी हूं, हे परमात्मा तुम्हारी आभारी हूं
मैं सबसे सुन्दर कृति तुम्हारी मैं ही लक्ष्मी काली अवतारी हूं
मैं हूं नारी अबला कहती है दुनिया सारी, न है साहस,
ऐसा समझती है दुनिया सारी
इज्जत को सदा दागदार करती है, ऐसी ही है बेरहम दुनिया हमारी

मां काली दुर्गा की अभिव्यक्ति हूं, नाश असुरों का मैं करती हूं
सृष्टि का सृजन भी मैं करती हूं, ऐसा जतन निज नित करती हूं
है मूर्ख जो ये कहता कि तू है अबला नारी,
है मर्द कहता खुद को तू, तो सून ले व्यथा हमारी

झेल जा बस एक बार प्रसव पीडा हमारी
नानी तेरे याद आ जाएंगे, थर-थर कांपेगी भूजा भारी
यदि देख सब तू समझेगा कि, क्या होती है एक नारी,
तब पुरुष कहेगा, गलती ही थी हमारी

समझ बैठा, जो इस सशक्त स्त्री को तू अबला नारी,
जहां सम्मान हो नारी का, वहां आये खुशियां सारी ।

भोला दत्त पाण्डेय, यूडीसी, विभाग पीजीपी

महिला सशक्तिकरण

माना गया जिन्हें बोझ सदियों से, आज वह सब पर भारी है
दबाया था कभी जिन्हें पैरों तले,
आज उनके इंसाफ की बारी है
अपमान मत करना नारियों का, इनके बल पर जग चलता है
पुरुष जन्म लेकर तो, इन्ही की गोद में पलता है
नारी बेचारी कह कहकर, शोषित बहुत कर डाला
खुद को सशक्त कर उसने, नारी सशक्तिकरण कर डाला
चूल्हा चौका करती हैं पर, वहीं तक सीमित नहीं रहना उन्हें
चाहें करना नौकरी तो, फिर हक से सबको कहना उन्हें
वें बोझ नहीं बनना चाहती, वें सोच से आगे जाएंगी
तुम तोड़ो तो जंजीरें उनकी, वें जग में नाम कमाएंगी
संस्कृति संभाल कर रखने वाली परिवार को जोड़कर चलने वाली
सम्मान करो तुम उसका हर घर एक नारी है
अपने कर्तव्यों संग नारी भर रही है अब उड़ान,
ना कोई शिकायत ना कोई थकान
यह है नारी की पहचान, सशक्त नरी सबल जहान।

भोला दत्त पाण्डेय, यूडीसी, पीजीपी

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

सबल नारी सशक्त राष्ट्र "नारी के जीवन को न समझो बेकार असल में समाज का यही है आधार"

एक पुरुष के प्रति अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरुष-समाज उस स्त्री से प्रतिशोध लेने को उतारू हो जाता है और एक स्त्री के साथ क्रूरतम अन्याय का प्रमाण पाकर भी सब स्त्रियां उसके अकारण दंड को अधिक भारी बनाए बिना नहीं रहती। इस तरह पग-पग पर पुरुष से सहायता की याचना न करने वाली स्त्री की स्थिति कुछ विचित्र सी है। वह जितनी ही पहुंच के बाहर होती है, पुरुष उतना ही झुंझलाता है और प्रायः यह झुनझुलाहट मिथ्या अभियोगों के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

वैदिक काल में, भारत में महिलाओं का बहुत सम्मानपूर्ण स्थान था। वे देवियों की तरह पूजी जाती थीं। किंतु, बाद में समय ऐसा आया जब चीजें बदल गईं। हमारा समाज पुरुष प्रधान बन गया। महिलाओं को उतना सम्मान नहीं दिया जाता था, जिसकी वे पात्र थीं। उन्हें बहुत-सी जिम्मेदारियां दी जाती थीं किंतु सम्मान बिलकुल नहीं। उन्हें स्वतंत्र रूप से आने-जाने की अनुमति नहीं थी। सामान्यतया, उन्हें अपने विचारों को साझा करने या अभिव्यक्त करने की अनुमति नहीं थी। हमारे भारतीय समाज में नारी की स्थिति में विरोधाभास है। इसका कारण है की एक तरफ नारी को पूजा जाता है और उन्हें नारी शक्ति कहकर उनका सम्मान किया जाता है। तो दूसरी तरफ नारी को एक बेचारी के रूप में देखा जाता है।

भारत में महिलाएं सैकड़ों वर्षों से शोषित होती रही हैं। बालविवाह, मादा भ्रूण हत्या, दहेज-प्रथा, सती प्रथा, मंदिरों में दासी प्रथा आदि ने उनकी स्थिति को काफी बदतर बनाया। एक विधवा को समाज में सामान्य जीवन जीने की अनुमति नहीं थी। एक स्त्री को उसके परिवार की इच्छाओं से परे जाने का अधिकार नहीं था। इस देश में जहां नारी को देवी के रूप में पूजा जाता है, वही दूसरी ओर उन्हें कमज़ोर भी समझा जाता है। नारियों के साथ समाज में कई लोगो ने अपने गलत दृष्टिकोण के कारण, दुर्व्यवहार भी किया। आज भी कई घरो में लड़के को वंश का चिराग माना जाता है और लड़की को बोझ माना जाता है। प्राचीन समय में लोग समझते थे, कि लड़की तो विवाह करके चली जायेगी और लड़के खानदान का नाम रोशन करेंगे और वंश को आगे बढ़ाएंगे। नारी को पराया धन समझा जाता है। लड़का-लड़की में भेदभाव भी किया जाता है। लड़कों को हर मामले में छूट है और शिक्षा पर उनका ज्यादा अधिकार होता है। लड़कियों को घर का काम काज करना सिखाया जाता है। तब लोगों की सोच थी कि लड़कियां पढ़ लिखकर क्या करेंगी, उन्हें तो शादी करके रसोई ही संभालना है। परंतु, अब समय बदल रहा है। हमलोगों ने भारत में महिलाओं की स्थिति में विकास होते देखा है। वे अध्ययन और अपनी जीविका के चयन के लिए स्वतंत्र हैं। वे एक स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर रही हैं। हमलोग महिला चिकित्सक, अभियंता, वैज्ञानिक, पायलट, व्यवसाय प्रमुख, शिक्षिका आदि को देखते हैं। महिलाएं राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के पद तक भी पहुंच चुकी हैं। उन्होंने साबित कर दिया है कि वे सभी क्षेत्रों में बेहतर कर सकती हैं। वे घर के साथ-साथ कार्यालयों में भी उपयुक्त हैं।

कुछ क्षेत्रों में तो महिलाओं ने अपने को पुरुषों से ज्यादा सक्षम साबित किया है। भारत की बेटी कल्पना चावला ने अंतरिक्षयात्री बनकर भारत का नाम रोशन किया। मदर टेरेसा ने समाज की उन्नति के लिए बहुत सारे कार्य किये। उन्होंने गरीबों और ज़रूरतमंदो के लिए अनगिनत कार्य किये, वह एक मिसाल है। सरोजिनी नायडू देश की प्रथम महिला गवर्नर थी। उन्होंने एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में कार्य किये थे। इस क्रांति का श्रेय सिर्फ शिक्षा को जाता है। इसने लोगों की संकुचित मानसिकता को बदल दिया है। इसने लोगों की बंद आंखें खोल दी है। इसने उन्हें दिखाया है कि विश्व में चारों ओर क्या हो रहा है। अब समाज सिर्फ पुरुषों के सहारे ही नहीं चल सकता। विकसित समाज के लिए महिलाओं का योगदान भी आवश्यक है। प्राचीन काल में नारी को उनका उचित स्थान नहीं दिया जाता था। नारी ने रिश्तों को निभाने के लिए और परिवार को सहज कर रखने के लिए कई अत्याचार सहे। घर पर भी लड़कियों को लड़कों के समान अधिकार नहीं दिए जाते थे।

आज की जरूरत है कि महिलाओं के आरक्षण में पिछड़े और आदिवासी वर्ग की महिलाओं को अलग से कोटा दिया जाए जिससे कि पिछड़े और दबे-कुचले वर्ग की महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिल सके। भारत की विधायिका में महिलाओं को आरक्षण दिलाने के लिए सभी दलों को दलगत राजनीति से उठकर महिला आरक्षण विधेयक का समर्थन करना चाहिए। कोई भी राष्ट्र महिलाओं के बिना शक्तिहीन है। क्योंकि राष्ट्र को हमेशा से महिलाओं से ही शक्ति मिलती है। किसी भी जीवंत और मजबूत राष्ट्र के निर्माण में

महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी से लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होती है।

आज जरूरत है कि समाज में महिलाओं को अज्ञानता, अशिक्षा, कूपमण्डुकता, संकुचित विचारों और रूढिवादी भावनाओं के गर्त से निकालकर प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए उसे आधुनिक घटनाओं, ऐतिहासिक गरिमामयी जानकारी और जातीय क्रियाकलापों से अवगत कराने के लिए उसमें आर्थिक, सामजिक, शैक्षिक, राजनैतिक चेतना पैदा करने की। जिससे की नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज को आगे बढ़ाने में सहयोग कर सकें। साथ-साथ आज जरूरत है कि समाज की जितनी भी रूढ़िवादी समस्याएं हैं हमें उनका समाधान खोजते हुए हठधर्मिता त्यागकर शैक्षिक, सामजिक, सौहार्दपूर्ण, व्यावसायिक और राजनितिक चेतना का मार्ग प्रशस्त करते हुए महिलाओं के सामजिक उत्थान का संकल्प लेना चाहिए, क्योंकि हजारों मील की यात्रा भी पहले एक कदम से शुरू होती है।

यह हमारी पौरुषिक वृत्ति है कि हम महिलाओं को कमज़ोर और अबला समझते हैं। हमारे पौराणिक समाज की रचना दरअसल परिवार के जिम्मेदारियों का बटवारा है। जहां पुरुषों को परिवार के भरण पोषण की जिम्मेदारी दी गयी। वहीं महिलाओं को घरबार की व्यवस्था का भार सौंपा गया। जिम्मेदारियों के इस बंटाव ने जहां पुरुषों को आज़ाद कर दिया वहीं महिलायें घर के भीतर केंद्रित हो गयी। इस स्थिति ने समाज में विषमताओं को जन्म दिया, भेदभाव को जन्म दिया, अपराध को जन्म दिया, निरंकुशता को जन्म दिया, बुराइयों को जन्म दिया और इसी से समाज में बंधन ,बेड़ियां और रूढ़ियां उत्पन्न हुई। यहीं से समाज पुरुष प्रधान हो गया। पुरुष स्वच्छंद होता गया और नारियां बंधनों में जकड़कर घर की चौखट के भीतर कैद कर दी गयीं। दरअसल यह सब स्त्री शक्ति के खिलाफ एक तरह से दुष्प्रचार था जो मान्यता बन गयी। उन्हें स्वच्छंद और स्वतंत्र नहीं रहने दिया गया, उन्हें कमज़ोर, अशक्त, अबला जैसे न जाने कितने काराग्रही वृत्तों के भीतर दूषितवृत्ति से रखा जाने लगा।

स्त्री और पुरुष समाज के दो अंग है, सर्वशक्ति ने मानव की उत्पत्ति कर उसकी शक्ति, सोच और क्षमताओं में भेद नहीं किया लेकिन समाज के रचनाकारों ने मानव को मानव से बांट दिया। पुरुष स्वच्छंद और स्वतंत्र होता गया और स्त्रियां उनकी पराधीन हो गयीं। काल बदलते गए लेकिन हालात नहीं बदले। आधुनिक समय में, आधुनिक हालातों में जिन नारियों ने रूढ़ियों और बेड़ियों से बाहर निकल कर स्वच्छंदता से अपना स्वतंत्र मार्ग तैयार किया है उन्होंने अपनी पहचान पुरुषों से कम नहीं बनायीं है। इसलिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर यह प्रण कीजिये कि सामाजिक रूढ़ियों और बेड़ियों को तोड़कर नारियों को स्वच्छंदता और स्वतंत्रता से कार्य करने देकर उन्हें अपने अवसरों से निर्मित मार्ग बनाने देने की सम्पूर्ण छूट देंगें और पुरुष या स्त्री प्रधान समाज नहीं मानव प्रधान समाज की नवसंरचना करेंगे।

नारी मानव की प्रिया है और सम्पूर्ण जगत् की माता है। नारी प्रेरणा की अनुभूति को मधुर मातृत्व में डालकर अपने प्राण न्यौछावर करके मानव जाति को जीवित रखती है। नारी ही मानवता की धुरी है और मानवीय मूल्यों की संवाहक है। मानवता की गरिमा और लावण्य भी नारी का ही रूप है। धरती का पुण्य उनकी सुषमा में व्यक्त होती है। सृष्टि का पुण्य नारी में ही विराजमान है।

अज़मी सलमान, कार्यक्रम सहायक, पाठ्यक्रम सामग्री विभाग

कौन समझे

कौन समझे कि मोहब्बत हमें क्या देती है
जिन्दगी जीने के आदाब सिखा देती है
मेरी हमदर्द है हमराज है
दोस्त है वो हौसला जीने का हमको सदा वो देती है
नेक बीवी का जिसको रब ने दिया है तोहफा
उसकी दुनिया भी वो जन्नत बना देती है
हुस्न-ओ-सुलूक से वो सबको अपना बना लेती है
मेरी हर बात सलीके से बता देती है

उसके हर रुप में रखी है खुदा ने बड़ाई
बनके बेटी भी वो घर को सजा देती है
रब को करना है जो राजी तो करो मां की इज्जत
मां की ख़िदमत ही तो जन्नत का पता देती है
कितने बुजदिल हैं जो औरत को ना समझे
जिन्दगी उन्हें हर काम में सजा देती है
कौन समझे कि मोहब्बत हमें क्या देती है
जिन्दगी जीने के आदाब सिखा देती है।

अज़मी सलमान, कार्यक्रम सहायक

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

प्राचीन काल से ही भारत भूमि पर स्त्रियों को देवी तुल्य माना गया गया है। प्राचीन काल की नारियां समाज तथा देश के महत्वपूर्ण कार्यों में भी अपना विशेष स्थान रखती थी। मध्यकाल में नारी भोग्या और दासी बनकर केवल वासनापूर्ति का साधन मात्र बन गई। किन्तु आधुनिक काल में नारी ने हर क्षेत्र में विकास किया है एवं वर्तमान युग में आज की नारी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में कहा गया है कि कानून के सामने स्त्री और पुरुष दोनों बराबर हैं। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय महिला की स्थिति में काफी सुधारात्मक परिवर्तन हुए हैं।

एक ओर तो रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, सुगरा बीबी, झलकारी बाई, अवंती बाई आदि वीरंगनाओं ने राष्ट्र के हित के लिए वीरता, साहस और सक्रिय भूमिका निभाकर समाज में कुछ कर गुज़रने के जज्बे की एक अद्‌भुत मिसाल क़ायम की है। और दूसरी तरफ आज भी महिलाएं सामाजिक और पेशेवर रूप से पुरुषों के बराबर मान्यता प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही हैं। भेदभाव के परिणामस्वरूप उच्च शिक्षित और कामकाजी महिलाओं के बढ़ते आंकड़े भी हमारे समाज की सोच को नहीं बदल पाए हैं। नेतृत्व के कार्य और निर्णायक भूमिकाओं में स्त्रियों की खूब अनदेखी की जाती है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद स्त्री और पुरुष को समान दर्जा देता है किंतु आंकड़ों से स्पष्ट है कि यह स्थिति काग़ज़ों तक ही सीमित है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत एक पुरुष प्रधान देश है जहां हर क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व है और महिलाओं को केवल परिवार की देखभाल के लिए ज़िम्मेदार माना जाता है। आज भी स्त्री के भाग्य-विधाता उसके पिता और पति ही हैं। क्या कुछ नहीं सहना पड़ता नारी को, कहीं जाति से बाहर विवाह किया तो आनर किलिंग में जान गंवानी पड़ती है तो कहीं दहेज न लाने के आरोप में पति या ससुराल वालों के हाथों जला दी जाती है। जो पेशेवर पत्नी हो तो व्यय का निर्णय पति का, उच्च वर्गीय स्त्री हो तो सौन्दर्य की वस्तु बनने की मांग और यदि कहीं निम्नवर्गीय स्त्री हो तो मशीन बनने की मांग, जो कभी नहीं थके।

यदि हमारे देश में घटित होने वाले महिलाओं के प्रति अपराधों का विश्लेषण करें तो स्पष्ट होता है कि प्रति 6 मिनट पर महिलाओं के साथ छेड़छाड़, सार्वजनिक अपमान, हत्या का प्रयास, बलात्कार, उत्पीड़न और अश्लीलता जैसी घटनाएं घटती हैं। नारी पर हो रहे इन सभी अत्याचारों पर रोक लगाना और उन्हें अपने अधिकारों से रूबरू करवाना 'महिला सशक्तिकरण' विषय का पहला अध्याय है। यदि हम अपने देश को एक विकसित देश बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले पुरुषों, सरकार, कानूनों और महिलाओं के प्रयासों से भी महिलाओं को सशक्त बनाना बहुत आवश्यक है। यह मानना या समझना मूर्खता है कि हमारा देश भविष्य में अपनी आधी आबादी के सशक्तिकरण के बिना विकसित होगा। वास्तव में आवश्यकता एक संतुलन की है, समन्वय की है। वर्तमान समय में नारी सशक्तिकरण विशेष चर्चा का विषय है। महिला सशक्तिकरण के बिना देश व समाज में नारी को असली स्थान नहीं मिल सकता, जिसकी वह हमेशा से हकदार रही है।

लोगों को जगाने के लिये महिलाओं का जागृत होना ज़रूरी है। हमें समाज में ही नहीं, बल्कि परिवार के भीतर भी महिलाओं और पुरुषों के बीच भेदभाव को रोकना होगा। महिलाओं को खुद से जुड़े फैसले लेने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, सही मायने में हम तभी नारी सशक्तिकरण को सार्थक कर सकते हैं। एक बार जब नारी अपना कदम उठा लेती है तो उसके पीछे-पीछे परिवार आगे बढ़ता है, गांव आगे बढ़ता है, शहर आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है।

विज्ञान, अनुसंधान, खेल, शिक्षा, प्रशासन, कला, राजनीति, समाज, नर्सिंग, चिकित्सा, ऑफिस के कार्य हो या अध्यापन, जीवन के हर क्षेत्र में आज भारतीय महिलाएं अपनी सेवाएं दे रही हैं जो कल तक केवल पुरुषों के ही क्षेत्र माने जाते थे। भारतीय नारी ने अपनी प्रतिभा को प्रमाणित किया हैं। कुछ महिलाएं शिक्षित होने का अर्थ कतिपय हास्यास्पद क्रियाकलापों से जोड़ लेती हैं, उनके

अनुसार विशेष वेशभूषा अपनाना, फैशन परेडों और किटी पार्टियों में भाग लेना ही शिक्षा और प्रगतिशीलता की निशानी हैं, जबकि ऐसा बिलकुल नहीं है।

अंत में इतना कहकर अपनी बात पर विराम दूंगी कि महिलाओं, अपने आपको बगीचे की तरह न संवारो कि वहां हर कोई टहल सके बल्कि, खुले विस्तृत आकाश की तरह संवारो, जहां हर किसी की पहुंच संभव न हो। युवा नारी को स्वयं को सबल बनाकर अपने शौर्य पराक्रम को राष्ट्रहित में लगा देना चाहिए, महिला सशक्तिकरण जिसकी उचित राह है और जिसके फलस्वरूप हमारे समाज में एक नये युग का आरम्भ होगा, इसी से ही भारत का भविष्य उज्ज्वल होगा और हम इसी प्रकार इस राष्ट्र को, इस विश्व को, संयुक्त करके सुजलाम, सुफलाम व मलयज शीतलाम् बना सकेंगे।

अतुल शुक्ला, आईपीएमएक्स *15068*

मेरी कोरी कल्पना

मेरी कोरी कल्पना,
स्वेत पृष्ठों पर बिखेर रहा हूं
इस पूर्णमासी के नभ तल
आत्म कण– मन कुरेद रहा हूं
मेरी कोरी कल्पना
स्वेत पृष्ठों पर बिखेर रहा हूं
पूर्णिमा के शीतल प्रकाश में भीगकर
प्रेम रस–ज्ञान रस को तरस रहा हूं
वेदनाओं के चंचल प्रकोप में
प्यासा मैं ...
मन धन घन मन से बरस रहा हूं
मेरी कोरी कल्पना
स्वेत पृष्ठों पर बिखेर रहा हूं
कल्पनाओं के सागर तल बैठा मैं
अपनी काया को समेट रहा हूं
स्वेत काव्य लताओं में उलझी
घड़ियों में स्वयं को बिखेर रहा हूं,
सुनेगी ईश क्या माया तेरी
क्या ? मेरी कोरी कल्पना ?
मेरी कोरी कल्पना ...
जिसे आज मैं स्वेत पृष्ठों पर बिखेर रहा हूं।

प्रोफेसर प्रियंका शर्मा, संकाय सदस्य

मैं हूं महिला का स्वाभिमान

मैं हूं महिला का स्वाभिमान
मैं हूं महिला का स्वाभिमान

पर्वत से जन्मी पार्वती
शिव भाल चढ़ी श्रृंगार–सती
वेदोंकार में गायत्री –
भारत–रण की मैं पार्श्व रथी
मैं हूं समान, मैं हूं प्रमाण,
मैं हूं महिला का स्वाभिमान
मैं हूं महिला का स्वाभिमान

सामंत, यवन, पश्चिम बल से
स्तर जो गिरा मेरा छल से
बाहर अब, मन, बल, श्रम से
मैं न्याय सरित का शुभ उफान
मैं हूं महिला का स्वाभिमान
मैं हूं महिला का स्वाभिमान

मेरी न किसी से जीत–हार
मैं स्नेहप्रदा, निर्माण – सार
मैं सबको लेकर चली, उठी
ले मनु–संस्कृति का अनघ भार
मैं जग को विधि का वरद दान
मैं हूं महिला का स्वाभिमान।

जोहरा खातून, कार्यक्रम सहायक, पीजीपी एसएम कार्यालय

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

सशक्तिकरण एक बहुत व्यापक शब्द है और प्रत्येक के लिए उसका अपना अर्थ है। हालांकि, सशक्तिकरण का सामान्य विचार उन लोगों को शामिल करना है जिन्हें अक्सर निर्णय लेने की प्रक्रिया में उपेक्षित किया जाता है। ऐसे में महिलाओं को ऐसी भूमिकाओं में शामिल करना और स्वीकार करना ही सशक्तिकरण है।

महिलाएं ही हैं जो पर्दे के पीछे इतना काम कर रही हैं और इसके लिए उन्हें कभी श्रेय नहीं दिया जाता है। हमारी दादी, माता और बहनें हमारे जीवन में इतनी महत्वपूर्ण और अभिन्न भूमिका निभाती हैं और दुख की बात है कि वे बस उसी तक सिमट कर रह जाती हैं और कोई भी उन्हें महत्व नहीं देता या सराहना नहीं करता है। उन्हें सशक्त बनाकर और उनकी आवाजों पर ध्यान देकर उन्हें महत्व देना बहुत जरूरी है। तभी हम वास्तविक परिवर्तन देखेंगे और विकास होगा।

पहले समाज में पुरुषों द्वारा तय की गई महिलाओं की भूमिका घर चलाने, कम उम्र में शादी करने और दहेज जैसी समस्याओं और विवाहित जीवन में कई तरह के दुर्व्यव्यहारों को सहन करने की दी गई थी। अब, भारत में महिलाएं काम करने के लिए घरों से बाहर कदम रख रही हैं और अपने और अपने परिवार का समर्थन करने के लिए जीविकोपार्जन कर रही हैं। इसलिए आधुनिक समय में भी नियम और कार्यप्रणाली में बदलाव होना चाहिए। बेशक, यह बदलाव रातोंरात नहीं होगा, कोई भी बदलाव धीरे-धीरे होता है। पहला कदम आर्थिक क्षेत्र में उनके योगदान को स्वीकार करना और उनके लिए अधिक अवसर पैदा करना होना चाहिए। कॉर्पोरेट, आईटी, पाक कला, कानून, बैंकिंग, रचनात्मकता और प्रदर्शन कला जैसे किसी भी क्षेत्र में हो।

महिलाओं को सशक्त करना है, मानवता में नया रंग भरना है।

शैक्षिक सशक्तिकरण सबसे महत्वपूर्ण रूप है क्योंकि शिक्षा वास्तव में एक स्तर है जो यह सभी को समान स्तर पर लाती है। जब कोई शिक्षित होता है तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे पुरुष हैं या महिला। इसीलिए लड़कियों को शिक्षा से वंचित नहीं किया जाना चाहिए जो कि भारत के कई हिस्सों में अभी भी एक दुर्भाग्यपूर्ण सच्चाई है।

ये शिक्षित लड़कियां ही आत्मविश्वास, बुद्धि और विवेकवाली महिला बनती हैं जो हर क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करती हैं और विभाग की प्रमुख और निर्णय लेने वाली भी बन सकती हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा एक महान उपकरण है क्योंकि यह हमारे समाज में अन्य सभी अंतरालों को पाट देगा और हम एक राष्ट्र के रूप में समृद्ध होंगे।

महिलाओं को अपना स्वाभिमान जगाना है, देश को तरक्की के ओर बढ़ाना है।

जब महिलाओं के लिए शिक्षा और पेशे के मामले में उनके हितों के क्षेत्र में बिना किसी प्रतिबंध या सीमाओं के अवसर पैदा किए जाते हैं, तो यह सशक्त होता है। यह सभी लड़कियों और महिलाओं को यह चुनने और निर्णय लेने की शक्ति देता है कि समाज में उनकी स्थिति क्या है। अब समय आ गया है कि लैंगिक भूमिकाओं की सीमाओं को चुनौती दी जाए और मानदंडों को तोड़ा जाए।

सशक्त महिलाओं का मतलब है कि महिलाओं को अपने व्यक्तिगत लाभों के साथ ही साथ ही समाज के लिए अपने स्वयं के निर्णय ले सकने में सक्षम होना। महिला सशक्तिकरण का मतलब है कि अब ये महिलाएं के साथ पितृसत्ता की बेड़ियों को तोड़ रही हैं। प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने महिला विकास पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, लड़कियों के कल्याण के लिए जन जागरूकता लाने के लिए भारत सरकार का एक सामाजिक अभियान है, जिसे 2014 में अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर कन्या भ्रूण हत्या के उन्मूलन के लिए प्रधान मंत्री द्वारा शुरू किया गया।

राज्य सरकारों ने भी महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएँ शुरू की गईं। जैसे स्वास्थ्य सखी योजना, कामधेनु योजना, स्वावलम्बन योजना, स्वशक्ति योजना आदि वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण के बारे में स्वयं महिलायें भी जागरूक हो गईं हैं। यह शिक्षा के प्रचार का प्रभाव हैं कि महिलाओं ने गैर पारम्परिक क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं।

बाबूलाल, अधीक्षक, उद्यान विभाग

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

नारी शक्ति है, सम्मान है,
नारी गौरव है, अभिमान है
आदि शक्ति का दूजा नाम है
नारी के ही द्वारा रचा ये विधान है
नारी शक्ति तुझे शत-शत प्रणाम है

नारी समाज का एक अभिन्न अंग है। नारी के बिना हम समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। नारी के अंदर सहनशीलता धैर्य, प्रेम ममता और मधुर वाणी जैसे अनगिनत गुण विद्यमान होते है। वह बहुत से क्षेत्रों में पुरुषों से बेहतरीन कर अपनी शक्ति का परिचय देती है। नारी हमारे समाज और राष्ट्र का विकास असम्भव है इसीलिए नारी को जगत जननी कहा जाता है। नारी ही माता के रूप में बच्चों का पालती, पत्नी और बेटी के रूप में सेविका का कार्य करती है और देश की आन-बान शान के लिए वीरांगना के रूप में रक्षा भी करती है। इसीलिए सम्पूर्ण नारी जाति को शक्ति की संज्ञा दी जाती है। अगर हम थोड़ा पीछे जाकर देखें तो राजनीति की लड़ाई में भी महिलाओं ने अपनी भागीदारी को दर्शाया था जैसे श्रीमती एनीबेसेन्ट, सुचेता कृपलानी, सरोजनी नायडू, भीकाजी कामा, अरुणा आसिफ अली आदि। लेकिन आजादी के इतने समय बाद भी उनको उनके अधिकार नहीं मिल पाते हैं। यहां तक की हमारे संविधान में भी महिलाओं के लिए समानता के अधिकार दिए गये है परन्तु आज भी वह समाज में एक बोझ की तरह ही देखी जाती है इसीलिए महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सरकार समय समय पर अनेक योजनाएं लाती हैं। महिलाओं को समाज की मुख्य धारा से जोड़ रहे हैं। सामाजिक विकास की बात करें तो कई योजनाएं हैं जो महिलाओं के लिए लाभकारी है।

प्राचीन समय से ही स्त्री ने समाज के विकास एंव संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हांलाकि उस समय दासी प्रथा बहुत शोचनीय थी। बहुत सी सामाजिक कुरीतियां उनपर थोपी गयी थी। उस समय राजा राम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे महान समाज सुधारकों ने नारी स्वाधीनता हेतु आवाज उठाई, जिससे स्त्रियां जाग्रत हुई एंव अपनी विद्या, बुद्धि एवं कर्तव्य शक्ति के बल पर उन्होंने समाज में विशेष पहचान बनाई। कल्पना चावला और इंन्दिरा गांधी जैसे बहुत सी महिलाएं रही हैं जिन्होंने समय-समय पर नारी शक्ति का परिचय दिया है और समाज को बताया है कि नारी अबला नहीं सबला है।

अबला नहीं सबला है, शक्ति का नाम नारी है जग को जीवन देने वाली मौत भी उससे हारी है।

आधुनिक युग में भी महिलाओं ने अपने अधिकारों के बारे में जाना है और अपने जीवन से जुडे निर्णय स्वंय लेने लगी है। आज की महिला कोमल और मधुर होने के साथ-साथ जागरूक भी है। उसने अपने अदंर की नारी शक्ति को जागृत किया है और अन्याय का विरोध करना शुरू किया है लेकिन फिर भी वह आज पूर्णतया सुरक्षित नहीं है। आज भी पुरूष वर्ग के कुछ लोग नारी को कमजोर और निस्सहाय ही समझते हैं वह नारी को मानसिक व शारीरिक प्रताड़ना देते हैं। नारी का पल पल अपमान करते हैं लेकिन ऐसे लोगों को यह कदापि नहीं भूलना चाहिये कि अगर नारी की सहनशीलता कहीं खत्म हो गई और नारी ने शक्ति का रूप ले लिया तो उसके अस्तित्व को मिटाने से कोई भी नहीं बचा सकता।

इतिहास गवाह है जब जब नारी का सब्र टूटा है तब-तब प्रलय आई है। आज रूढिवादी मान्यताओं और पुरुष प्रधान विचारों को महिलाएं लगातार चुनौती दे रही हैं और हर क्षेत्र में अपने हुनर को आजमा रही है। आज समाज के पढ़े लिखें लोग लड़कियों को शिक्षा के प्रति जागरूक हो रहे हैं और शिक्षित महिलाएं देश के विकास में अपना अहम योगदान दे रही हैं।

माननीय प्रधानमंत्री नरेद मोदी के नेतृत्व में में केंद्र सरकार ने नारी विकास पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। भारत की नारी राष्ट्र की प्रगति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, और सरकार उनके योगदान और क्षमता को पहचानती है। सरकार ने नारी सशक्तिकरण को लेकर कई मजबूत कदम उठाए है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं से लेकर बेहतर स्वास्थ्य और उनकी दीर्घकालिक संभावनाओं को सुधारने के लिए कई पहल की है। केंद्र सरकार ने अपने कामकाज की बदौलत एक तरह से महिलाओं को एक साथ जोड़ दिया है।

बेटी बचाओ, बेटी पढाओं, न केवल लिंग समानता की दिशा में परिवर्तनकारी पहल हैं बल्कि इसने जनता और सरकार के बीच विश्वास को मजबूत भी किया है। इस योजना के माध्यम से, राष्ट्र की सरकार का उददेश्य नारी को सुरक्षा और शिक्षा के बारे में जागरूकता लाकर समाज को बेहतर बनाना है। ये योजना सदियों पुरानी धारणओं और प्रथाओं को समाप्त करने की दिशा में भी काम करती है, जाहिर है ये सब गतिविधियां महिलाओं के विकास के लिए सहायक हैं।

देश में महिलाओं को देवी के रूप में पूजा जाता था। वेद पुराणों में कहा गया है किसी देश की संस्कृति को समझना है तो सबसे पहले हमें उस देश की महिलाओं के बारे में जरूर जानना चाहिए। आज के युग में नारी शक्ति एक अहम विषय बन चुका है। जिस देश की महिलाओं का विकास नहीं हुआ, वह देश विकास ही नहीं कर सकता है। देश और समाज की उन्नति का एक ही रास्ता है वह है महिलाओं और बेटियों का जागरूक करना।

"उतारों मुझे जिस क्षेत्र में, सर्वश्रेष्ठ कर दिखाऊंगी
औरों से अलग हूं दिखने में, कुछ अलग करके ही जाऊंगी
चाह नहीं है एक अलग नाम की, इसी को महान बनाऊंगी
नारी हूं मैं इस युग की, नारी की अलग पहचान बनाऊंगी
दुनिया के इस कठिन मंच पर एक प्रदर्शन मैं भी दिखलाऊंगी
कठपुतली नहीं किसी खेल की, अब स्वतंत्र मचंन कर परचम लहराऊंगी"

आशीष एच.के. झा, पीएच.डी. *22001*

पूर्णिमा

मैं नहीं चाहती की तुम मेरा वीरानापन दूर करो
क्योंकि मैं अपने आप में ही पूर्ण होना जानती हूं

मुझे पता है की तुम फिर से हंस रहे हो मेरी बातों पे
एक बार फिर मेरी इच्छाओं का उपहास बनाया है
लेकिन अब कुछ नया नहीं मिलता तुमसे हारने में
अब अपनी परीक्षा खुद से उत्तीर्ण होना जानती हूं

क्योंकि मैं अपने आप में ही पूर्ण होना जानती हूं
मुझे एक नए आका की कतई जरूरत नहीं है
क्योंकि आका, मदारी और मालिक दोनों होते है
थक गयी हूं अब मैं इस डमरू पे पैर थिरका के
अब धुला, खुला नीला आसमान होना जानती हूं
क्योंकि मैं अपने आप में ही पूर्ण होना जानती हूं

मैं शोषित हूं, कुंठित हूं, आहत हूं – क्योंकि मां जो हूं
मैं भावुक हूं, चाहत हूं, ममता हूं – क्योंकि मां जो हूं
टूटी इतना गिर के कि देखो नए पंख उग आये है
अब नव-पंखों से एक ऊंची उड़ान भरना जानती हूं

क्योंकि मैं अपने आप में ही पूर्ण होना जानती हूं
फेरे, बंधन, बच्चे मेरे, तेरा समस्त परिवार मेरा,
मेरा जो एक नाम भी था, वो भी तुमने मुझसे ले लिया
ईश्वर बन के तो देख लिया, अब तलाश बस अपनी है
अब अपने बुने व्याकरण पे, आसान होना जानती हूं

मैं नहीं चाहती की तुम मेरा वीरानापन दूर करो
क्योंकि मैं अपने आप में ही पूर्ण होना जानती हूं।

सुरजीत सिंह, पीजीपी 38155

सबल नारी सशक्त राष्ट्र

भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने कहा है कि ''एक राष्ट्र हमेशा ही अपने यहां की महिलाओं से सशक्त बनता है, वह मां, बहन, और पत्नी की भूमिकाओं में अपने नागरिकों का पालन पोषण करती है और तब जाकर ये सशक्त नागरिक, एक सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाते है''।

अर्थात महिला ईश्वर की वह अनोखी देन है जो मां अन्नपूर्णा, मां सरस्वती, मां लक्ष्मी और मां दुर्गा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उसके दिल में स्नेह व त्याग का अथाह सागर तो हिलोरे मारता ही है लेकिन अगर जरूरत पड़े तो वह मां काली, चण्डी व दुर्गा का रूप भी धारण कर लेती हैं। फिर भी महिलाओं को अबला कहा जाता है।

व्यक्तित्व को निखारने में जब प्रकृति लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करती तो फिर मनुष्य को यह अधिकार किसने दिया है। आज अगर हम एक सशक्त राष्ट्र चाहते है तो जरूरत है, महिलाओं को सबल बनाने की। किसी राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है जब उस राष्ट्र की महिलाएं सबल हों। सबल महिला से तात्पर्य है कि स्त्री को अपने जीवन से संबंधित समस्त निर्णय स्वयं लेने का अधिकार होना चाहिए। वह स्वयं की भाग्य निर्माता बने। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं पारिवारिक समस्त क्षेत्रों में उसे समान अधिकार मिलने चाहिए।

भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, भारत की वर्तमान राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू,प्रथम महिला राज्यपाल स्वर कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू, आई.पी.एस. अधिकारी किरण बेदी, स्वर्ण पदक विजेता विश्वप्रसिद्ध निशानेबाज तेजस्विनी भारत की वे गौरवशाली महिलायें हैं जिन्होंने सारे भूमंडल पर भारत को गौरवान्वित किया। विश्वपटल पर तिरंगे के मान सम्मान को बढ़ाया।

इतिहास के झरोखे में झांक कर देखें तो सावित्री, अपाला, गार्गी, महारानी लक्ष्मीबाई के चित्र आंखों के सामने उभरते हैं। सावित्री ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण तो वापस छीने थे। साथ ही साथ अपनी बुद्धि की चतुराई से अपने ससुर का राज्य और उनके नेत्र ज्योति भी वापस दिलाई। ऋषि वाचकन्वी की पुत्री गार्गी ने ब्रहमज्ञानी ऋषि याग्वल्क्य के साथ शास्त्रार्थ कर अपने ज्ञान से परम ज्ञानी ऋषियों की सभा में अपनी बुद्धि का लोहा मनवाया था।

मातृभूमि को गौरवान्वित करने वाली झांसी की रानी वीरांगना लक्ष्मी बाई ने अबोध पुत्र को कमर से बांधकर, घोड़े की लगाम को दांतो में दबाकर, दोनों हाथो में नंगी तलवार लेकर अंग्रेजो के साथ युद्ध करते हुए दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए और मातृभूमि की रक्षा हेतु शहीद हो गईं। 18 मई 1974 को बुद्ध जयंती के दिन पोखरण में परमाणु परीक्षण करवाकर स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने संसार को चौंका दिया। अमृता प्रीतम, महादेवी वर्मा जैसी कवयित्रियों ने साहित्य को समृद्ध बनाया।

फिर भी नारी अबला कहलाती है। युगों से महिला यौन हिंसा, वेश्यावृति बलात्कार की शिकार बनती आई है। दहेज प्रथा की आग में झुलसती रही है। परम्पराओं के नाम पर वह सब अत्याचार सहती है। परिवार तथा बच्चों की खातिर मन ही मन कराहकर मौन धारण कर लेती है। जो जिंदगी को जन्म देती है कोख में ही मार दी जाती है। अतः आज समाज व राष्ट्र के हित में जो सबसे बड़ी जरूरत है वह है– 'महिला सशक्तिकरण'। महिलाएं अगर सशक्त व सबल होंगी तो राष्ट्र भी सशक्त बनेगा। अतः महिलाओं को समाज के समस्त बन्धनों से मुक्त कर अपने निर्णय स्वयं लेने का अधिकार देना आवश्यक है जिससे वे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ और मजबूत बन सके।

उत्तम शिक्षा की शुरुआत घर से ही होती है और मां ही प्रथम श्रद्धेय गुरु होती है, जो अबोध बालक का सर्वोत्तम मार्गदर्शन कर स्वस्थ परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण करती है। अतः आइये, हम सब मिलकर महिलाओं के प्रति होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा को रोकें। नारी को उसके अधिकार दें, जिससे नारी बने सबल एवं राष्ट्र बनें सशक्त।

अनुराधा मंजुल, जनसंपर्क अधिकारी

आभानेरी की अनूठी संरचना - हर्षद माता मंदिर

राजस्थान में कई ऐतहासिक विरासतें हैं। जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, उदयपुर, के बारे में तो बहुत सुना जाता है पर यहाँ कई ऐसी जगह भी है जो अनजानी है।

हमने कई बार आगरा जयपुर हाईवे यानी NH21 (या बीकानेर आगरा NH21) पर यात्रा की थी और मार्ग की सुंदरता से हमेशा मंत्रमुग्ध रहते थे। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से हमने कुछ अद्‌भुत स्थानों की जांच करने के लिए कभी भी छोटे मोड़ लेने या रुकने के बारे में नहीं सोचा था।

हम जयपुर से वापस आ रहे थे, आमेर में पन्ना मीना का कुंड (बावड़ी) नहीं जा पाने पर थोड़ा निराश हुए थे। हम जयपुर से जल्दी निकल गए थे और हमें यकीन था कि हमारे पास अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए पर्याप्त समय है। इसलिए हमने तय किया कि हम हाईवे से कम से कम एक डायवर्जन ले सकते हैं - आभानेरी और भानगढ़ के बीच चुनाव करना था। वोट विभिन्न कारणों से आभानेरी को गया - हमें मुख्य राजमार्ग (दौसा से) से लगभग 35 किलोमीटर (लगभग 22 मील) की यात्रा करनी थी, आभानेरी में राजस्थान की सबसे पुराना बावड़ी है (हमने इसके बारे में पढ़ा था)। तय हुआ कि पूरी जगह की जांच करने के लिए हमें एक घंटे से अधिक समय नहीं देंगें। पर तब तक हम आभानेरी में नहीं थे, आभानेरी पहुँचने पर हम अपने आप को समय में बाँध नहीं पाए।

आभानेरी पहुंचना मुश्किल नहीं है। NH21 पर ड्राइव करें, दौसा को पार करें और सिकंदरा की ओर बढ़ें। इंडियन ऑयल पंप के ठीक बाद (यदि जयपुर से आ रहें है) बाएं मुड़े सिकंदरा-टोडा भीम रोड पर (वही सड़क जो बांदीकुई और अलवर को जाती है।

बाएं मुड़ने से पहले आभानेरी के बारे में स्पष्ट संकेत हैं, आप उन्हें चूक नहीं सकते। सड़क आंशिक टोल रोड है। ड्राइव करें, पीचुपारा कलां में बाणगंगा नदी पार करें, आगे ड्राइव करें, नवीन किराना स्टोर गुलेर से आभानेरी रोड पर दाएं मुड़ें। आभानेरी रोड एक खूबसूरत सड़क है (बहुत चौड़ी नहीं) जिसके दोनों तरफ खेत हैं। एचपी पेट्रोल पंप को पार करें और आप अपने गंतव्य पर पहुंच गए।

पहली चीज जो हमने दाईं ओर देखी, वह थी पत्थरों से निर्मित एक जीर्ण-शीर्ण मंदिर जैसी संरचना। हमने अपना वाहन पार्क किया (हाँ, बाईं ओर एक आधिकारिक पेड पार्किंग स्थल है जिसे वर्तमान में आभानेरी ग्राम पंचायत द्वारा प्रबंधित किया जाता है)। हमने सड़क पार की और उस संलग्न क्षेत्र में पहुँचे जिसे हमने देखा था। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा एक छोटे से बोर्ड के साथ एक गेट वाला क्षेत्र था जो सूचित करता था कि यह हर्षद माता मंदिर था। यह मंदिर एएसआई संरक्षित स्मारक है।

मंदिर 8-9वीं शताब्दी का है और इसका निर्माण निकुंभ वंश के राजा चंद या चंद्र द्वारा किया गया था। ऐसा कहा जाता है कि इसी राजा ने आभानेरी (जिसे पहले आभा नगरी के नाम से जाना जाता था - चमक का शहर) की स्थापना की थी।

महमूद गजनी ने मंदिर को काफी नुकसान पहुंचाया था। जो कुछ बचा था वह उसकी अधिरचना से दूर गर्भगृह था जो दो सीढ़ीदार बरामदों पर खड़ा है।

यह पूर्वमुखी मंदिर (महमेरु शैली का एक उदाहरण) एक ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया है । गर्भगृह पंचरथ योजना पर है (एक हिंदू मंदिर त्रिरथ, पंचरथ, सप्तरथ या नवरथैन योजना पर हो सकता है) स्तंभित मंडप के साथ (एक मंडप मंदिर का प्रवेश द्वार है, यह शायद एक पोर्टिको या क लोनडेड (नियमित अंतराल पर रखे गए स्तंभों की श्रृंखला) है। एक हॉल है जिसमें बड़ी संख्या में

उपासकों के लिए जगह है)। मंदिर की दीवार के प्रत्येक किनारे पर एक तराशा हुआ आला है।

दक्षिण, उत्तर और पश्चिम में कार्डिनल आलों में विष्णु (वासुदेव), बलराम (सनाकर्षण) और प्रद्युम्न की प्रतिकृतियां हैं। यह दर्शाता है कि मूल मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित था। वर्तमान में यहाँ स्थानीय रूप से प्रसिद्ध हर्षद माता (खुशी की देवी) की एक मूर्ति स्थापित है।

यह मंदिर मूल रूप से देवी का मंदिर नहीं था। वर्तमान में मंदिर में जो मूर्ति है, वह किसी भी तरह से 10 वीं -12 वीं शताब्दी की मूर्तिकला शैली से संबंधित नहीं है। आपको उत्तर भारत में कई मंदिरों में इसके समान संगमरमर की मूर्तियां मिलेंगी (कुछ मंदिर तो एक या दो साल पुराने हैं)।

कई स्थानीय लोग (स्वयंभू गाइड) आपको हर्षद माता (सदियों पहले से) के बारे में स्वयं पकी पकाई पकाई हुई कहानियाँ बताएंगे, यह ऐतिहासिक तथ्यों के करीब नहीं हैं ।

आप तस्वीरें क्लिक करने के लिए स्वतंत्र हैं (कृपया स्थानीय लोगों के बहकावे में न आएं यदि वे आपको बताते हैं कि आपको तस्वीरें क्लिक करने की अनुमति नहीं है)। कुछ लोग आपको बताएंगे कि मंदिर का जीर्णोद्धार जयपुर के राजा ने 18 ई. में कराया था (यह एक और कहानी और इसमें कोई सच्चाई नहीं है। जो भी जीर्णोद्धार और रखरखाव किया जा रहा है, वह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (जयपुर सर्कल) द्वारा किया जा रहा है।

जब हम वहां गए तो मंदिर में एक पुजारी था और गांव की एक स्थानीय महिला भी। शुक्र है कि न तो पुजारी ने और न ही स्थानीय लोगों ने हमें कुछ अनुष्ठान करने के लिए कहा और हमें तस्वीरें लेने से नहीं रोका।

हमने गर्भगृह और हॉल में जूते पहन कर प्रवेश नहीं किया था जूते हमने बाहर रखे थे, शायद हमारी धार्मिक मान्यतों की वजह से।

मंदिर एक छिपा हुआ रत्न है। मुख्य आकर्षण इसकी सुंदर मूर्तियां हैं जो मुख्य प्लिंथ, दीवारों और खंभों के चारों ओर की नक्काशी में और यहां तक कि टूटे हुए पत्थरों पर भी पाई जा सकती हैं।

मूर्तियां उस समय के धर्मनिरपेक्ष समाज को दर्शाती हैं। मूर्तियों के विषय धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों हैंय इनमें नृत्य, संगीत, उद्यान-खेल और समृद्ध विलासिता के चित्रण साथ चित्रित प्रेम चित्रित हैं। प्रेम के विषय पर बनी कुछ मूर्तियां कामुक प्रेंति की हैं।

यह मंदिर निश्चित रूप से सुंदर मूर्तियों के लिए एक यात्रा के लायक है जो उस समाज पर एक प्रतिबिंब है जो हमारी सुंदर विरासत थी।

हमने यात्रा का आनंद लिया क्योंकि मूर्तियों ने न केवल हमें हमारी विरासत की समृद्धि दिखाई, उन्होंने हमें धर्म का एक अलग और सुंदर दृष्टिकोण दिखाया, जो हममें से कई लोग समझने में असफल रहे हैं।

पवन तिवारी, कार्यालय सहायक

महिला सशक्तिकरण

हां मैं नारी हूं ममतामयी, करुणामयी दुर्गा काली हूं
हां मैं नारी हूं
चांद पर जाना मैंने सीखा, सीखा दुविधाओं से लड़ना
दु:ख जगत के मैंने ले कर है जीना सीखा
हां मैं नारी हूं
सती प्रथा व बाल विवाह कुप्रथाएं भी देखी है
सीखी मैंने युद्ध कला और प्यार जगत में बांटा है
हां मैं नारी हूं
हरेक की चिंता चिंतन कर मैंने अपना भविष्य संवारा है
देश के खातिर मर मिटने का जुनून हमारा है
हां मैं नारी हूं
पतिव्रता बनकर पति की रक्षा की है
संतति को छाती से दूध पिलाया है
हां मैं नारी हूं
बात जब आयी देश की तो नारी ने हुनर दिखाया है
बनकर कुशल खिलाड़ी देश का मान बढ़ाया है
हां मैं नारी हूं
शिक्षित होकर जब नारी ने अपना पद भार सम्हाला है
कुप्रथाओं, जातिवाद को जड़ से फेंक निकला है
हां मैं नारी हूं

रामचन्द्र, पुस्तकालय सहायक, नोएडा परिसर

महिला सशक्तिकरण

नारी सशक्तिकरण जरूरी है
वर्तमान युग में,
एक मजबूत समाज के लिए
जरूरी है नारी को शिक्षा की ओर उन्मुख करना
उनके अपने अधिकारों के ज्ञान के लिए
जरूरी है नारी की
स्वतंत्रता और उनका सम्मान
समाज में एक नई पहचान के लिए
जरूरी है नारी को
हर क्षेत्र में अवसरों को प्रदान करना
एक नये निर्माण के लिये
जरूरी है नारी के
विचारों को महत्व देना और समझना
उनकी भावनाओं के मान के लिए
जरूरी है नारी की
आवश्यकताओं का ध्यान रखना
उनके उत्तम स्वास्थ्य के लिए
जरूरी है नारी की
सक्षम और शक्तिशाली बनाना
उन्हें स्वयं की सुरक्षा में मजबूत करने के लिए।

कमलजीत, सम्पदा विभाग, यूडीसी

ममतामयी नारी

इस पुरुष प्रधान समाज में ऐ नारी पाने को अपने अधिकार,
स्वयं ही जतन से तुमको, स्वयं के लिए लड़ना होगा
तुफानों में भी तुमको, अपनी राह बनानी होगी,
त्याग बंधनों को तुमको, आगे कदम बढ़ाना होगा
अपनी ममतामयी छवि छोड़कर, गुलामी की जंजीर तोड़ कर
लेकर रण चंडी का रूप, सब अत्याचार को मिटाना होगा
बहुत बन चुकी अब बेचारी, अब तुमको काली बन जाना होगा
देने को स्वयं को एक नई पहचान,
और पाने को कामयाबी का आसमान
पंख लगाकर सपनों के, अब तुमको उड़ना होगा
बनना होगा तुमको शक्तिशाली,
रखने को अपने मान और सम्मान
गौरवशाली जीवन जीने के लिए स्वयं ही बदलना होगा।

सुरजीत सिंह, पीजीपी 38155

महिला सशक्तिकरण

घर समाज व देश बने सुदृढ़
आज अगर हम ले लें ये प्रण
सुसभ्य राष्ट्र का गौरव नारी
आओ इसकी करें हिफाजत
हम सबकी ये जिम्मेदारी है
अब नारी सशक्तिकरण की बारी है

स्नेह, मर्यादा की ये प्रतिमूर्ति
करें घर का आर्थिक प्रबन्धन
शालीनता से परिवार समेटे
मिलजुल तोड़े इसके बन्धन
इसको मत कहना ये बेचारी है
अब नारी सशक्तिकरण की बारी है

गरिमा और समर्पण के संग
ये जन्म जिन्दगी को देती है
फिर भी कोख में मारी जाती
वो मूक बनी पीड़ा सह जाती
नहीं जिसकी वो अधिकारी है
अब नारी सशक्तिकरण की बारी है

जकड़ी हुई है युगों से नारी
यौन हिंसा व वेश्यावृति में
बलात्कार की आग में झुलसी
दहेज प्रथा में ये नित जलती
सोचो इसकी क्या लाचारी है
अब नारी सशक्तिकरण की बारी है

तू दीन नहीं तू हीन नहीं अब
ना ही अब तू अबला नारी है
तू मां लक्ष्मी मां सरस्वती तू
तू ही मां अन्नपूर्णा हमारी है
तेरे चरणों में दुनिया वारी है
अब नारी सशक्तिकरण की बारी है

नारी तू रानी लक्ष्मी बाई है
तू सावित्री और महादेवी
मशाल हाथ में ले संघर्ष की
दरिन्दों के तू चीर दे सीने
तू साहस की दबी चिनगारी है
अब नारी सशक्तिकरण की बारी है

बनो स्वयं की भाग्य निर्माता
जीने का तुमको भी हक है
राष्ट्र निर्माण के हर एक क्षेत्र में
तेरी तो सक्रिय भागादारी है
उन्नति के शिखर को छूने की
अब तो नारी तेरी बारी हैं
अब नारी सशक्तिकरण की बारी है।

आलोक कुमार सिंह, कनिष्ठ अभियंता (विद्युत), परियोजना अनुभाग

आजादी और सम्मान

नारी को हो पूरी आज़ादी
नारी को दो पूरा सम्मान
मिले शिक्षा मिले अवसर
तो बने परिवार की पहचान
है वो ज्योति शक्ति
रखती है सबका ध्यान
नारी को हो पूरी आज़ादी
नारी को दो पूरा सम्मान
नारी को ना समझो बचारी
वो तो है बस अवसर की मारी
मिला अवसर तो हर मंजिल छू लेगी
नारी को हो पूरी आज़ादी, नारी को दो पूरा सम्मान
सशक्त नारी है, अच्छे समाज की पहचान
नारी को हो पूरी आज़ादी, नारी को दो पूरा सम्मान।

अतुल कुमार शुक्ला, आईपीएमएक्स 15068

दो क़दम

मैं मीरा, मैं गंगा, मैं ही मां
मैं ही ममता धारा

मैंने ही सृष्टि संजोई
बस पूछ रही हां
कहां खोया है... सोया है?
आधा हक हमारा

अगर मैं चलना चाहूं
आत्म निर्भर होकर
दो क़दम
तो क्या तुम चलने दोगे?
मेरी आत्म तृष्णा के पंखुड़ियों को
स्वतंत्रता के उड़ान भरने दोगे?

अगर मैं एकला चलूं
और अपनी कोशिकाओं में
अपने लक्ष्य की धार भरुं
तो क्या मुझे गहरी झूठी दयालुता
के पिंजरों से मुक्त करके
मुझे अपने तकदीरों से लड़ने दोगे?

अगर मैं चलना चाहूं
निर्भिक आत्म केन्द्रित होकर
स्वावलंबन के दो क़दम
तो क्या चलने दोगे?
उठने दोगे क्या
मेरे शीश मेरे प्रयत्नों के
तुम्हारे अहंकार के क्षितिज से ऊपर?
हिन्द सागर जैसा साहस लहरा कर
अपने रक्त से बेड़ियां पिघलाकर
क्या मुझे नए स्वरूप नव स्वप्नों में
सत्यता के रंग भरने दोगे?

अगर मैं चलना चाहूं दो क़दम
तो क्या मुझे चलने दोगे?

बस पूछती हूं तुमसे
एक परतंत्रता की प्रतिनिधि,
मुझे क्या अपने
रंग तरंग और सप्तरंग
में स्वयं का रंग चुनने का हक़ हैं?

मांग इतना रही हूं
इस जीवन में बस
क्या मणिकार्णिका, द्रौपदी और कल्पना के धरती पर
मुझे स्वतंत्र और सशक्त होकर चलने दोगे?
मुझे मेरे कदम दो क़दम।

अभय कांत श्रीवास्तव, ईएफपीएम 10001

महिला सशक्तिकरण

नारी तू ममता की मारी, हर कोई पाता तुझसे ममता
पर दर्द तुझे हमेशा मिलता, नारी तू ममता की मारी
तेरे हैं रूप अनेक, सब में अलग-अलग मूरत तेरी,
बहन बन कर देती भाई को प्यार, प्रेयसी बन कर करती तू स्नेह का श्रृंगार
पत्नी बन कर देती पति को पहचान, मां की ममता का कोई नहीं मोल
हर रूप में होती तेरी पूजा, पर ज़माने भर से मिलती है तुझे सजा

आज अतीत को भूलना है, तुझको जग को दिखलाना है
भविष्य हमारा है, कुछ कर के दिखलाना है
नारी के जीवन में आये कष्ट अनेक, पर
सब झेलकर तू देती है ममता सबको एक
ममता देते-देते, खुद ही खो चुकी है तू ममता सारी
नारी तू ममता की मारी

प्यास बुझाते-बुझाते तू रही गयी है प्यासी
सब देने के बाद भी सब रखते हैं तुझसे ही आशा
आंखों में है ममता का दर्द, बेड़ियों की कड़िया हैं इतनी जर्द
नारी तुझे आना होगा, नारी की पहचान बताना होगा
नारी तुझे स्वयं को आगे बढ़ाना होगा, अपना उत्थान दिखाना होगा
नारी तू ममता की मारी

जग को ये बतलाना होगा, तूफानों में दौड़ लगाना होगा
समंदर की लहरों से जूझना होगा, हवाओं को मोड़ना होगा
पिता, भाई, पति, प्रेमी, पुत्र को देती पहचान, ना भूल तू अपनी शान
ना भूल तू अपनी शान, ना भूल तू अपनी शान

रीति रिवाज़ की जंजीरो से निकलकर, आकाश छूने की चाहत पर बढ़ती तुम
अबला नारी को सबला बना कर, कदम कदम पर ख्वाबों के लिए लड़ती तुम
अब नहीं रहना घुट-घुट कर, नहीं सहना बंदिशों की दीवारी को,
विश्वास से नाता जोड़कर, सपनों को बुनकर, तुझे अपनी पहचान बनाना है

प्रथम महिला बनकर करती राष्ट्र उत्थान, उद्योग जगत में देती सबल पहचान
बापू, दिनकर, प्रसाद, निराला, सबकी कविता को चरितार्थ करती तेरी पहचान
नभ जल थल में पुरुषो के साथ कदम मिलकर देश सेवा का आदर्श जज्बात
सशक्त राष्ट्र निर्माण में कदम से कदम मिलकर देती समाज को नए युग की आवाज़
बतला सबको, नहीं है तू ममता की मारी, नहीं है तू ममता की मारी।

संगीता श्रीवास्तव, यूडीसी, आरटीआई प्रकोष्ठ

महिला सशक्तिकरण

हिम सी कठोर और पिघलने वाली तुम नारी हो
तुम वात्सल्य और क्षमाशील सहनशील तुम नारी हो
इस जग की जननी और रचयिता तुम ही आस विश्वास हो
अमृत धारा सी बहती हो जन जन के मन में तुम नारी हो
तुम गार्गी लक्ष्मीबाई अहिल्या बाई सी हो अड़िग इरादों की
तुमने जन्म दिया महापुरुषों को जो महान योद्धा है भारत के
बाल गंगाधर, गांधी, विवेकानंद, सुभाष चंद्र बोस की जननी हो
इस धरा की सर्वश्रेष्ठ अकल्पनीय रचना हो तुम ईश्वर की
नारी तेरे रूप अनेक रचयिता हो तुम नर नारी की
मत भूलों अपने इरादों के साथ लड़ी थी लक्ष्मीबाई मर्दों से
इंदिरा, सुषमा स्वराज सी शासक शासन करने वाली हो
इस धरती पर राम, कृष्ण की महतारी तुम ही नारी हो
बड़ी–बड़ी अपार विषमताओ से भिड़ने की आदी हो
सीता सावित्री राधा मीरा सी पवित्र पतिव्रता नारी हो
तुम काली दुर्गा चंडी सी काल से लड़ने वाली हो
धरती से चांद तक पहुंचने वाली तुम नारी हो
कल्पना चावला हो या सरोजिनी नायडू तुमने साबित किया तुम सबला हो
लाख कठिनाइयों और बाधाओं के आगे तुम मुस्कुराती हो तुम नारी ही हो
नारी तेरे रूप अनेक पल क्षण में बदलते रहते हैं तुम नारी ही हो
नारी ने ही रचा विधान उस शक्तिशाली ममतामयी अद्भुत रचना है
अलौकिक अकल्पनीय उड़ान वाली रचना को नमन तुम नारी हो
नारी तुम दिए की लौ बनकर घर आंगन रोशन करती हो
मत खेलो उसके अस्तित्व से आग सी बन जाती है वो नारी है
कदम से कदम मिला कर चलना सैन्य पराक्रम से न हटने वाली हो
नीरजा बेदी, अरुणिमा जैसी कड़क, ऐश्वर्या, सुष्मिता जैसी प्यारी हो
मां का मान पिता का सम्मान हो पति और रिश्तों की आन हो
लड़की हो तुम तुमसे नहीं होगा, यह सब बातें अब धुंआ है
ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिसकी बुलंदियों को तुमने न छुआ हो
अपनी काया को काट सब बंधन हटाने है तुम नारी हो
अपनी पहचान बना जग–समाज को अद्भुत रूप दिखाने वाली हो
शतशत नमन तुमको अद्भुत ईश्वर की इस कारीगरी को तुम वो नारी हो।

अंकित पाण्डेय, सहायक

महिला सशक्तिकरण

बीते समय की बात हुई अब, नारी कहलाती थी अबला तब
बदल रहा दृष्टिकोण लोगों का, नारी को कह रहे हैं सबला सब
ऐसे कितने उदहारण, कथा, कहानी और किस्से हैं,
गर्व होगा सुनकर कि हम भी इसी भारत देश के हिस्से हैं
ऐसा भी नहीं है कि नारी कभी सशक्त नहीं हुआ करती थी,
प्रेमा माथुर के रुप में पहली महिला पायलट भारत को 1947 में मिली थी
किसी ने तो महिलाओं के विश्वास और उसके सम्मान को तोड़ा था,
1963 में लेफ्टिनेंट जनरल से वाईस एडमिरल बनी उनका नाम पुनीता अरोड़ा था
पता नहीं किसने नारी को बेचारी की उपाधि दे दी थी,
वरना 1979 में पहली भारतीय महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी थी
माना कि बीते समय में महिलाओं का ना अच्छा हाल था,
भूलो मत 1984 में एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला का नाम बछेंद्री पाल था
हर क्षेत्र में महिलाओं को प्रसिद्धि मिली थी,
1989 में फातिमा बीबी के रूम में भारत को सुप्रीम कोर्ट की पहली न्यायधीश मिली थी
मंच कोई भी हो, हर स्तर पर महिलाओं का प्रदर्शन शानदार है,
एक बिलियन कुल मूल्य वाली पहली भारतीय व्यावसायिक महिला किरण मजूमदार हैं
उदहारण बहुत हैं, नाम बहुत हैं, सब कुछ तो इस कविता में लिख नहीं सकते,
भारत कि प्रथम राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल जी को हम भूल नहीं सकते
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी, नाम कभी यह अनसुना नहीं होगा,
वर्तमान में कारगिल गर्ल वीरांगना गुंजन सक्सेना का नाम किसने ना सुना होगा
उच्च शिक्षण संस्थानों में भी महिलाएं सम्मान और प्रतिष्ठा को बढ़ा रहीं हैं
प्रोफेसर अर्चना शुक्ला भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ में जिम्मेदारी से निदेशक का कर्तव्य निभा रहीं हैं
महिलाएं हो रहीं सशक्त अब हर क्षेत्र और परिवेश में,
नहीं है कमी सबल, सशक्त, शक्तिशाली महिलाओं की हमारे देश में
महिलाएं सशक्त हैं और सशक्त बनाना होगा, बेटिओं को बचाना और उनको खूब पढ़ाना होगा
भावनात्मक और ममतामई छवि को अब छोड़ना होगा, स्वयं पर हो रहे अत्याचारों पर चुप्पी अब तोडना होगा महिला
जितनी सशक्त, सबल और शक्तिशाली होगी, उस देश में उतनी ही समृद्धि और खुशहाली होगी
और भी अधिक सशक्त, सबल और शक्तिशाली हो महिला हम विश्वास करते हैं,
अंत में इस कविता के माध्यम से करबद्ध होकर उनके सम्मान को हम नमस्कार करते हैं।

राहिला तबस्सुम, कार्यालय सहायक

महिला सशक्तिकरण

हो समाज तब ही सशक्त, जब नारी शक्ति स्वरुपा हो
स्वाहा, स्वधा सरीखी हो, काली, कल्याणी रुपा हो
वेदों की अनुपम ध्वनि हो, दर्शन की मधुर ऋचायें हो
बीज मंत्र जिसमें आह्लादित, गीतों की क्षणिकायें हों
घोषा और अपाला हों, गार्गी हो या मैत्रेयी हो
विद्योत्मा और विदुषी हो, रत्नावलि, वैदेही हो
जो समाज को दिशा दे सके, ऐसी अनुपम नारी हो
घर-परिवार करे संचालित, नहीं स्वेछाधारी हो
जिनमें हो बौधिक कौशल, जिनमें हो विद्धता भरी
जो पावन हो गंगा जैसी, चारित्रिक शुद्धता भरी
पति माथे पर तिलक लगाकर, युद्धभूमि में भेज सके
जो पुत्रों को शिव बनाकर, धर्म क्षरण को रोक सके
मातृभूमि पर जब विपत्ति हो, तब जौहर व्रत कर डाले
ले कटार, घुस शत्रुपक्ष में, नरमुंडों को हर डाले
जीवन के आपत्ति काल में, सहज लक्ष्मी बन जाये
पति के जीवन की रक्षा को, सावित्री सी तन जाये
जब नारी की भरत भूमि पर, घर-घर में पूजा होगी
नारी तभी सजग बनेगी, नारी तभी सशक्त बनेगी।

माला चौधरी, वित्त लेखा विभाग, अधीक्षक

नारी तुम अबला नहीं हो

करुणा के सागर को धार बना के, तुम भी लहरों सी हुंकार भरो
अबला नहीं हो तुम नारी इस बात का अभिमान करो
दिखाए कोई आंख अगर तो, न तुम सहम सी जाना
चाहे पकड़े कोई हाथ तुम्हारा, न डर कर तुम चुप रह जाना

उठो लड़ो और आगे बढ़ो,
अपनी समस्याओं का खुद समाधान बनो
अबला नहीं हो तुम नारी, इस बात का अभिमान करो
माना कि दुनिया का मंच कठिन है,

पर इसपर डट कर बनी रहना
चाहे लगे कोई राह कठिन, नेपथ्य में न खड़ी रहना
हिम्मत को साथी चुन कर हर, मंजिल को तुम फतह करो
अबला नहीं हो तुम नारी, इस बात का अभिमान करो

जन्म से लेकर मृत्यु तक, आखिर कब अपने लिए जिया
समाज के ठेकेदारों के लिए,
कब तक अपनी इच्छाओं को कुचलेगी
समाज के कल्याण का हिस्सा, अब इज्जत से तुम भी बनो

अबला नहीं हो तुम नारी, इस बात का अभिमान करो
तुम्हें भी जीने का अधिकार मिला है, इस जीवन को व्यर्थ न करो
उठो चलो और आगे बढ़ो, और नारी जीवन को सार्थक करो

सदियों से महान हो तुम, सदैव सर्वोच्च बनी रहो
अबला नहीं हो तुम नारी, इस बात का अभिमान करो।

आयोजन

आईआईएम लखनऊ का 36वां दीक्षांत समारोह

02 अप्रैल, 2022

स्नातक बैच के छात्रों के लिए वर्ष 2020-22 एक मिश्रित अनुभव वाला वर्ष रहा। विविध चुनौतियों का सामना करते हुए दीक्षांत समारोह का आयोजन पूरे कोविड नियमों को ध्यान में रखकर किया गया। इस दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि हिंदुस्तान यूनिलीवर के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री संजीव मेहता थे।

संस्थान की निदेशक प्रोफेसर अर्चना शुक्ला ने संस्थानिक गतिविधियों का सार प्रस्तुत किया। दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, आईआईएम लखनऊ के अध्यक्ष, श्री नटराजन चंद्रशेखरन ने छात्रों को बधाई दी और सतत विकास, सुरक्षा, डेटा और प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य देखभाल जैसे विभिन्न भविष्य तथा वर्तमान रुझानों के बारे में चर्चा की।

आईआईएम लखनऊ के 36 वें दीक्षांत समारोह में उपाधि से सम्मानित 724 प्रबंधन के छात्र-छात्राओं ने डिग्री ओर डिप्लोमा के क्षेत्र में ऊर्जा का संचार किया। संस्थान परिसर में शनिवार को हुए दीक्षांत समारोह में जब उत्तीर्ण छात्रों को पदक ओर मेडल मिल रहे थे तो भविष्य की उड़ान की खुशी भी दिखी। दीक्षांत समारोह में 724 उम्मीदवारों को डिग्री और डिप्लोमा दिए गए। प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के 36वें बैच के 441 छात्र, कृषि-व्यवसाय प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के 17वें बैच के 47 छात्र, आईपीएमएक्स के 14 वें बैच के 109 छात्र, सस्टेनेबल मैनेजमेंट में पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम से 27 छात्र, वर्किंग एक्जीक्यूटिव के लिए पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम से 63 छात्र, मैनेजमेंट में फेलो प्रोग्राम से 22 छात्र और मैनेजमेंट में एग्जीक्यूटिव फेलो प्रोग्राम से 15 छात्र शामिल रहें। दीक्षांत समोराह में चेयनमैन गोल्ड मेडल मनुग गुप्ता, डायरेक्टर्स मेडल शौरी आनन्द, पीजीपी चेयरमैन मेडल हीत

शाह को मिला। इसके साथ ही हरिशंकर सिंहानिया मेडल फॉर बेस्ट ऑलराउण्डर सत्या सहाय को मिला। इसके साथ ही पीजी में प्रथम रैंक अर्जित करने वाली छात्रा पल्लवी प्रिया को चेयरमैन गोल्ड मेडल, आईपीएमएक्स पाठ्यक्रम 2021-22 में टॉपर रहे अखिल कुमार गुप्ता को चेयरमैन गोल्ड मेडल एवं दूसरे स्थान पर रहें। अखिल कुमार गुप्ता को डायरेक्टर मेडल प्रदान किया गया। पीजीपीडब्लूई पाठ्यक्रम 2021-22 प्रथम रहे अतुल तयाल को चेयरमैन गोल्ड मेडल, दूसरे स्थान पर मधुकर पाण्डेय को डायरेक्टर मेडल से दिया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि यूनिलीवर के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री संजीव मेहता ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर डाला कि 'भविष्य निश्चित रूप से अलग होने जा रहा है।' उन्होंने कहा कि फिर से कई रुझान सामने आए हैं। उनमें से कुछ महामारी के कारण हैं, कुछ अन्य भू-राजनीतिक व्यवस्था के कारण और कुछ पिछले दो वर्षों में कारकों के संयोजन के कारण हैं। स्पष्ट रूप से, दुनिया स्वयं को संतुलित कर रही है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आईआईएम बिरादरी के लिए यह दिन खास बताया।

उन्होंने कहा कि सफलता पाने के कई रास्ते हैं, अभी तक आपने कई लोगों को अपनी कमजोरी को पहचानने और उस पर काम करने की सलाह देते सुना होगा, लेकिन सफलता पाने का फार्मूला अब बदल गया है। अपनी कमजोरी पर काम करके समय बर्बाद करने से कुछ नहीं मिलेगा अपनी खूबियों को और निखारें। उन्होंने कहा कि प्रयास ही सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। आप प्रयास करें, सफलता मिलेगी, हार से न डरें, शुरुआत करें, यह मायने नहीं रखता कि आप को हार कितनी बार मिली, मायने यह रखता है कि आप कितनी मजबूती से हर बार उठें। चुनौतियों के बीच भी तमाम अवसर हैं। मुख्य अतिथि ने मैनेजमेंट छात्रों को सफलता के 9 सूत्र दिए।

सम्मान

संस्थान के बीओजी, अध्यक्ष को पद्म भूषण सम्मान

26 जनवरी, 2022

श्री नटराजन चंद्रशेखरन अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ को इस वर्ष का व्यापार और उद्योग में उल्लेखनीय योगदान के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। यह संस्थान के लिए गौरव की विषय है।

पद्म पुरस्कार - देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक, तीन श्रेणियों में प्रदान किया जाता है, अर्थात् पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री। पुरस्कार विभिन्न विषयों/गतिविधियों के क्षेत्रों में दिए जाते हैं, जैसे- कला, सामाजिक कार्य, सार्वजनिक मामले, विज्ञान और इंजीनियरिंग, व्यापार और उद्योग, चिकित्सा, साहित्य और शिक्षा, खेल, सिविल सेवा आदि। 'पद्म विभूषण' असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए दिया जाता है। उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए 'पद्म भूषण' तथा किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए 'पद्म श्री' से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कारों की घोषणा हर साल गणतंत्र दिवस के अवसर पर की जाती है। ये पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

कार्यक्रम

आईआईएम लखनऊ का 38वां स्थापना दिवस

27 जुलाई, 2022

लखनऊ परिसर

भारतीय प्रबन्ध संस्थान के 38वें स्थापना दिवस का आयोजन पूरे उत्साह के साथ किया गया। इसके तहत विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धा, कंट्री रन, उमंग भवन में सौना बाथ का अनावरण, सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे- गीत, शायरी, नाटक आदि आयोजित किए गए।

स्थापना दिवस की संध्या पर एक्सिस बैंक में समूह कार्यकारी और प्रमुख (भारत बैंकिंग) श्री मुनीश शारदा ने 38वां स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। वह 1997 बैच के लखनऊ के पूर्व छात्र हैं। उन्होंने बताया कि कैसे छोटी शुरुआत और बड़ी आकांक्षाएं महान परिणाम दे सकती हैं।

उन्होंने वित्तीय सेवा के क्षेत्र में अपने 30 साल के शानदार करियर के नेतृत्व के सबक को सभी के साथ साझा किए और रेखांकित

किया कि कैसे नैतिकता, विनम्रता, धैर्य, कड़ी मेहनत, ग्राहकों के प्रति जुनून और आजीवन सीखने जैसे गुणों ने उनके करियर में जबरदस्त मदद की है।

उन्होंने रेखांकित किया कि भारत के अर्ध-शहरी और ग्रामीण (एसयूआरयू) बाजारों में विभिन्न सरकारी योजनाओं, कृषि तकनीक कंपनियों के उदय, जनसांख्यिकीय लाभांश, अर्थव्यवस्था के औपचारिककरण, विनिर्माण के उदय, एकत्रीकरण मॉडल के आने से मजबूत अनुकूल माहौल बना है।

उन्होंने यह भी बताया कि कैसे एक्सिस बैंक एसयूआरयू बाजारों से लगातार संपर्क कर रहा है और ग्राहक के नेतृत्व आधारित रणनीति बनाकर एक विशिष्ट मॉडल का निर्माण कर रहा है। सघन साझेदारी के माध्यम से एक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहा है। वितरण मॉडल में स्थानीय बारीक समझ को जोड़ रहा है। साथ ही, डिजिटल मानसिकता के साथ काम भी कर रहा है, और विशिष्ट क्षमताओं का निर्माण कर रहा है। श्री मुनीश शारदा के अध्यक्षीय संबोधन को काफी सराहा गया।

नोएडा परिसर

आईआईएम लखनऊ के नोएडा परिसर में 27 जुलाई 2022 को अपना 38वां स्थापना दिवस बड़ी ही धूमधाम से मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रोफेसर नीरजा पांडे, अधिष्ठता (नोएडा परिसर), ने किया व इस अवसर पर सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा परिसर मे पौधोरोपण किया गया। इस अवसर पर भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताओ का भी आयोजन किया गया, जिसमें संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों व उनके बच्चों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। बच्चों के लिये कला प्रतियोगिता, दौड व अन्य के लिये अंताक्षरी प्रतियोगिता, रस्साकशी, नीबू दौड़, आनलाईन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के साथ-साथ एक लकी ड्रा का भी आयोजन किया गया। प्रोफेसर नीरजा पांडे, अधिष्ठता (नोएडा परिसर तथा कर्नल (से.नि.) रंजीत राय हांडा, प्रशासन प्रमुख, ने विजोताओ को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया।

सम्मान

बिजनेस वर्ड एजूकेशन की प्रतिष्ठित सूची में संस्थान निदेशक शामिल

8 मार्च, 2022

भारतीय प्रबन्ध संस्थान की निदेशक प्रोफेसर अर्चना शुक्ला को बिजनेस वर्ज एजूकेशन द्वारा 15 सबसे प्रभावशाली महिलाओं की सूची में स्थान दिया गया। सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर युवाओं को नेतृत्व प्रदान करने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों को इस सूची में स्थान दिया गया है।

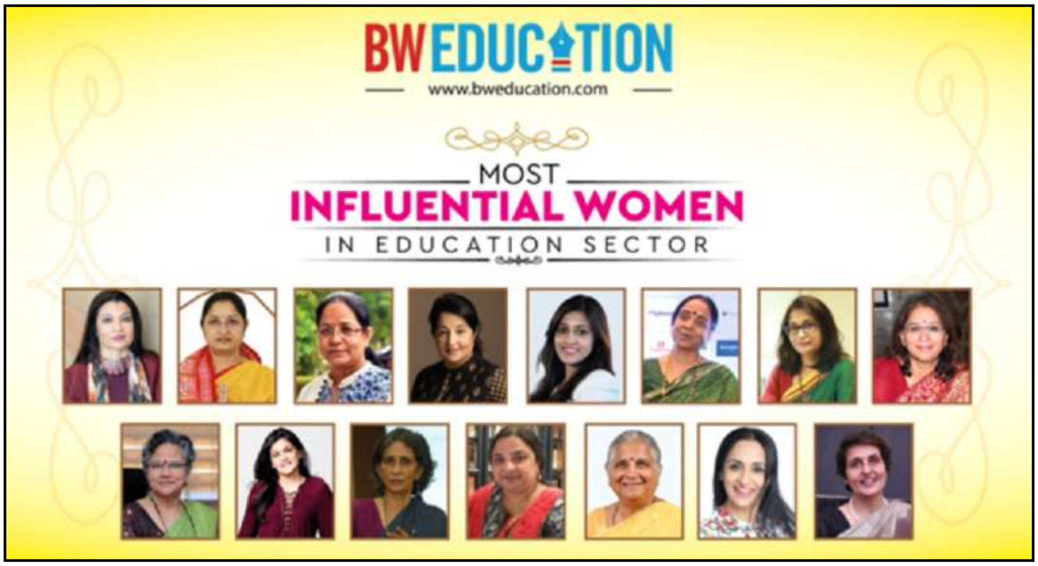

तिमाही न्यूजलेटर स्किलवार्ता का विमोचन

8 मार्च, 2022

भारतीय प्रबन्ध संस्थान महात्मा गांधी नेशनल फेलोशिप योजना में महत्वपूर्ण योगदान देने वाला संस्थान है। इसी क्रम में योजना से जुड़ी अहम घटनाओं को रेखांकित करने के उद्देश्य से स्किलवार्ता पत्रिका का विमोचन संस्था की निदेशक प्रोफेसर अर्चना शुक्ला द्वारा किया गया। इस अवसर पर डीन संकाय प्रो. अजय गर्ग एवं प्रो. क्षितिज अवस्थी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के साथ वैचारिक चर्चा
21 अप्रैल, 2022

प्रो. अर्चना शुक्ला निदेशक, प्रो. अजय के गर्ग, डीन (फैकल्टी) और प्रो. क्षितिज अवस्थी, अध्यक्ष सीपीपी ने उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय मुख्यमंत्री से मुलाकात की। उत्तर प्रदेश के आम हित के क्षेत्रों पर चर्चा करने के लिए भारतीय प्रबन्ध संस्थान ने राज्य के विकास के लिए अपने योगदान का आश्वासन दिया। इसी क्रम में, पूर्व में पूरे मंत्रिमंडल को प्रबंधकीय गुर सिखाने के लिए परिसर में उनकी कक्षाएं लगाने का गौरव संस्थान को प्राप्त हुआ था।

आयोजन

73वां गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी, 2022

सभी कोविड प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रबन्ध संस्थान में 73वां गणतंत्र दिवस पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। निदेशक प्रोफेसर अर्चना शुक्ला द्वारा ध्वजारोहण के बाद सभा को संबोधित किया गया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि गणतंत्र दिवस मनाते हुए हमें उन लोगों को नहीं भूलना चाहिए जो स्वतंत्रता संग्राम के हिस्सा थें और जिन्होंने इस आजादी को संभव बनाया। उन्होंने कहा कि आज भारत ने एक राष्ट्र के रूप में दुनिया के सामने खुद को साबित कर दिया है, चाहे वह कोविड महामारी से निपटने का मामला हो, या टीकों के अनुसंधान और विकास और उसके बाद बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान, हमने दिखाया है कि हम किसी से कम नहीं हैं।

उन्होंने अपने भाषण में एक महत्वपूर्ण बात पर प्रकाश डाला कि आज हर कोई अपने अधिकार के बारे में बात करता है जो संविधान ने हमें दिया है, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि संविधान अधिकार के साथ-साथ हमारे कर्तव्यों के बारे में भी बात करता है। आदर्श नागरिक को रूप में हमें अपने कर्तव्यों का पालन अवश्य करना चाहिए।

इस शुभ अवसर पर की वार्षिक हिंदी पत्रिका पलाश के दूसरे संस्करण को भी जारी किया गया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2022
लखनऊ परिसर

15 अगस्त, 2022

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह की शुरुआत निदेशक प्रोफेसर अर्चना शुक्ला द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुई। इस सुअवसर पर बोलते हुए उन्होंने राष्ट्र ध्वज में तिरंगे के अर्थ और महत्व के बारे में बताया और यह भी कि हमें इसे अपने जीवन में कैसे शामिल करना चाहिए। आजादी का अमृत महोत्सव सिर्फ एक औपचारिकता भर नहीं है, यह भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष हमारे धैर्य, संकल्प और शक्ति का उत्सव है। इस उत्सव को हमें प्रत्येक दिन मनाते हुए उन अमर शहीदों के सपने को साकार होने तक हमें प्रयासरत रह कर अपने-अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए।

इस अवसर पर आईआईएमएल समुदाय के मेधावी बच्चों को निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं व कार्मिकों ने मनभावन सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

नोयडा परिसर

15 अगस्त, 2022

भारतीय प्रबंधन संस्थान लखनऊ, नोएडा परिसर, में आजादी का 75वां स्वतंत्रता दिवस “आजादी के अमृत महोत्सव”, के रूप में पूरे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर समारोह का शुभारंभ प्रोफेसर नीरजा पांडे, डीन (नोएडा परिसर), कर्नल (सेवानिवृत्त) रंजीत राय हांडा, प्रशासन प्रमुख, ने संयुक्त रूप से किया।

प्रोफेसर नीरजा पांडे, डीन (नोएडा परिसर) के द्वारा ध्वजा-रोहण किया गया। ध्वजा-रोहण समारोह के बाद राष्ट्र-गान ‘जन-मन-गण’ गाया गया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुये प्रोफेसर नीरजा पांडे, ने अपने संबोधन में स्वतंत्रता दिवस को आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में राष्ट्र की उपलब्धियों व आजादी के लिये दिये गये बलिदानों का उल्लेख कर अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कर्नल (सेवानिवृत्त) रंजीत राय हांडा, प्रशासन प्रमुख ने अपने संबोधन में देश की आजादी में हमारे पूर्वजो के बलिदान व देश को आगे बढ़ाने में उनका योगदान का उल्लेख कर अपने भाव प्रकट कर कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

आयोजन

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत आयोजित कार्यक्रम

लखनऊ से ग्रामीण महाराष्ट्र वाया यूएसए - एक स्थानीय लड़के की यात्रा

1 मार्च, 2022

'लखनऊ से ग्रामीण महाराष्ट्र वाया यूएसए - एक स्थानीय लड़के की यात्रा' शीर्षक से एक उत्साहवर्धक वार्ता का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. अनिल के. राजवंशी, पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित सत्र का संचालन किया। यह आयोजन जूम के माध्यम से किया गया जिसमें निदेशक महोदया के साथ ही डीन (संकाय) ने भी भाग लिया।

प्रो. शुभदा अरोड़ा द्वारा पैनल चर्चा का आयोजन

8 मार्च, 2022

इस आयोजन के तहत भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के सबसे प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों के साथ एक पैनल चर्चा की गई। पैनल :-

- ज्योतिर्मयी डाकुमल्ला, फैब्रिक मोंडे के सह-संस्थापक और सीईओ ज्योतिर्मयी फैब्रिक मोंडे के सह-संस्थापक और सीईओ हैं और वह 2016 बैच की पूर्व विद्यार्थी रही हैं फैब्रिक मोंडे फैशन उद्योग में एक बी2बी कंपनी है जो कपड़े का व्यापार करती है।
- निधि मिश्रा, बुकोस्मिया के संस्थापक सीईओ, निधि मिश्रा 2006 बैच की विद्यार्थी हैं। 10 वर्षों तक बैंकिंग में काम करने के बाद, उन्होंने 135+ वैश्विक स्थानों पर बुकोस्मिया (किताबों की महक) - भारत का सबसे बड़ा प्रकाशक 'बच्चों के लिए, बच्चों द्वारा' शुरू करने के लिए प्रेरित किया।
- प्रेरणा भूटानी, संस्थापक जेमे, प्रेरणा 2008 बैच की विद्यार्थी हैं। उन्होंने आदित्य बिड़ला समूह में यंग लीडर्स प्रोग्राम में काम करने के कुछ साल बाद अपनी उद्यम यात्रा शुरू की।

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत आयोजित इस महिला दिवस कार्यक्रम में उक्त तीनों दिग्गजों ने अपने अनुभव व यात्रा से श्रोताओं को प्रोत्साहित व संवेदित करने का कार्य किया। यह पैनल चर्चा इस बात को लेकर सफल रही कि इसने अपने उद्देश्य-भारत के विकास में नारी शक्ति का योगदान पर सार्थक चर्चा की।

नशा मुक्ति हेतु ऑनलाइन शपथ

3 अगस्त, 2022

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत, भारतीय प्रबन्ध संस्थान की निदेशक माननीय अर्चना शुक्ला द्वारा नशा मुक्ति शपथ की ऑनलाइन उद्घोषणा की गई। यह एक ऑनलाइन शपथ अभियान था जिसमें संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ ही विद्यार्थियों व शोधार्थियों ने भी प्रण लिया कि नशे को अपने जीवन में कोई जगह नहीं देंगे। इसके साथ ही नशे से दूर रहने के लिए दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हर घर तिरंगा अभियान

13 अगस्त, 2022

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर छात्र समिति ने युवा उत्साह दिखाते हुए हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाने की पूरजोर कोशिश की गई। इसके तहत विद्यार्थियों ने पूरे संस्थान को तिरंगे से सजाया तथा आसपास के गांवों में तिरंगे का वितरण भी किया। समिति ने इस बात का पूरा खयाल रखा कि तिरंगा शान से लहराए और उसकी गरिमा बनी रहे।

आईआईएम लखनऊ में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

08 मार्च, 2022

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस और उसके तहत आयोजित होने वाली विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी आईआईएमएल समुदाय के बीच व्यापक रूप से प्रसारित की गई। जारी कोविड-19 महामारी के मद्देनजर, सभी कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के पालन के साथ आयोजित किए गए थे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - 2022 पर पूरे संस्थान में निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गएः

1. आईआईएम लखनऊ में कार्यरत महिलाओं के बीच जागरूकता पैदा करने का कार्यक्रम

   निम्नलिखित विषयों पर स्वास्थ्य केंद्र में आईआईएम लखनऊ के द्वितीयक कार्यबल (संविदाकर्मी) के साथ काम करने वाली महिलाओं के लिए जागरूकता पैदा करने वाले कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें स्त्री स्वास्थ्य से संबंधित जानकारियां स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर एस.पी. सिंह और डॉ. खुश्बू द्वारा दी गई।

2. दूसरे सत्र में महिला कर्मियों को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए बचत खाता खोलने की विशेषताओं और लाभों पर श्री दीपिका मिश्रा, एसबीआई द्वारा चर्चा की गई।

3. माध्यमिक कार्यबल के कल्याण के लिए सामाजिक पहल समिति, आईआईएमएल द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे में जागरूकता से संबंधित सूचनाएं प्रदान की गई।

इस आयोजन के दौरान मुख्य प्रशासनिक, विशेष कार्य अधिकारी, डीन (कार्यक्रम), चिकित्सा अधिकारी, एसबीआई मैनेजर, संस्थान के अधिकारी, कर्मचारी और महिला कर्मचारियों ने भाग लिया।

महिला कर्मचारी कार्यक्रम प्रारंभ होने की प्रतिक्षा करते हुए

सीएओ, ओएसडी, डीन (कार्यक्रम), चिकित्साधिकारी, एसबीआई कर्मी एवं महिला कर्मचारी

टिकाऊ कल के लिए महिला मुद्दों और उद्यमिता पर चर्चा

नोएडा परिसर

1. महिला मुद्दों की प्रख्यात विशेषज्ञ सुश्री सुनीता थवानी, जो juscowomen@work की संस्थापक अध्यक्ष हैं द्वारा सेमिनार हॉल लेक्चर हॉल नंबर 2, आईआईएम लखनऊ नोएडा परिसर में 'एक स्थायी कल के लिए आज लैंगिक समानता' विषय पर अतिथि व्याख्यान दिया गया।

2. प्रतिष्ठित महिला उद्यमी और आईआईएम लखनऊ के पूर्व छात्रों द्वारा उद्यमिता पर वार्ताः इस अवसर पर निम्नलिखित तीन प्रतिष्ठित पूर्व छात्रा सुश्री निधि मिश्रा, संस्थापक सीईओ, बुकोस्मिया, सुश्री प्रेरणा भूटानी, संस्थापक जेमे, सुश्री ज्योतिर्मयी दक्कुमल्ला, सह-संस्थापक और सीईओ, फैब्रिक मोंडे के साथ एक पैनल चर्चा ऑनलाइन मोड के माध्यम से आयोजित की गई जिसमें उन्होंने पूरे आईआईएम लखनऊ समुदाय के साथ अपने अनुभव साझा किए।

कार्यक्रम

विश्व पर्यावरण दिवस

6 जून, 2022

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान में वृक्षारोपण अभियान निदेशक, प्रोफेसर अर्चना शुक्ला ने निर्देशन में चलाया गया। इस अभियान में परिसर के विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, प्रशासनिक अधिकारियों के साथ ही कर्मचारियों ने भी भाग लिया। पर्यावरण को स्वच्छ रखने के उद्देश्य से परिसर में गत वर्ष औषधीय पौधों और पेड़ों की वाटिका लगाई गई है जो अब विकसित हो चुकी है।

जलवायु परिवर्तन को रोकना वर्तमान की आवश्यकता है जिसे लेकर संस्थान हमेशा संवेदित व तत्पर रहता है। इसी क्रम में यह अभियान आयोजित किया गया था। इसकी झलकियां निम्नानुसार हैं :

आयोजन

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आयोजन

22 जून, 2022

लखनऊ परिसर

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के पहले ही परिसर में विविध योग से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए गए। संस्थान द्वारा एक योग प्रशिक्षक की सेवाएं वर्ष पर्यंत ली जाती है। समय-समय पर संस्थान प्रशासन द्वारा कार्मिकों के मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने व मजबूती देने के लिए विभिन्न आयोजन किए जाते है। इसी उद्देश्य से कुछ समय पूर्व तक हमारे कार्यालयों में ऑनलाइन छोटे अंतराल के लिए योगा ब्रेक हुआ करता था। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आईआईएम लखनऊ में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

21 जून 2022 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सामान्य योग प्रोटोक ल को ध्यान में रखते हुए प्रातः परिसर में योग सत्र का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निदेशक प्रोफेसर अर्चना शुक्ला ने संदेश दिया कि सामान्य रूप से जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनना चाहिए।

11 जून 2022 से आयोजित विभिन्न योग कार्यक्रमों के लिए पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। पूरे आईआईएमएल समुदाय ने योग सत्र और उस अवधि में 10 दिनों के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों में उत्साह के साथ भाग लिया।

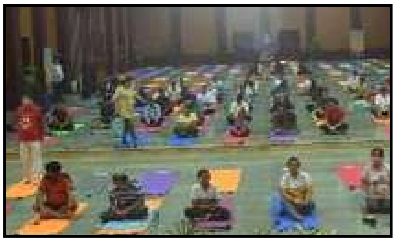

भारतीय प्रबंध संस्थान लखनऊ
Indian Institute of Management Lucknow
INTERNATIONAL
YOGA DAY

नोएडा परिसर

आईआईएम लखनऊ के नोएडा परिसर में 21 जून 2022 को अंतराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों ने हिस्सा लिया व विभिन्न योग कला कर योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने का संकल्प लिया।

जैव विविधता जागरूकता कार्यक्रम

3 अगस्त, 2022

हमारे आसपास की जैव विविधता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए नेचर वॉक का आयोजन किया गया। आईआईएम लखनऊ परिसर जैव विविधता के मामले में काफी समृद्ध रहा है। संस्थान के पीएच.डी. स्कॉलर श्री देबांकुर साहा और आईआरएस अधिकारी श्री राघव गुप्ता ने इस वन्यजीव जागरूकता कार्यक्रम का नेतृत्व किया। इस कार्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों और कर्मियों के बीच काफी उत्साह देखने को मिला। इसके अतिरिक्त, आईआईएम परिसर के अंदर और बाहर इस थीम पर लगातार क्षेत्र यात्राएं आयोजित की जाती हैं। अधिक जानकारी के लिए, कृपया इंस्टाग्राम पर @naturewalk_iiml अकाउंट को फॉलो कर सकते हैं।

राष्ट्रीय एकता दिवस

31 अक्तूबर, 2022

स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती 31 अक्टूबर 2022 को 'राष्ट्रीय एकता दिवस (राष्ट्रीय एकता दिवस)' के रूप में मनाई गई जिसके अन्तर्गत सभी ने 'राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ लेकर अपनी प्रतिवद्धता प्रकट की।

आयोजन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022

31 अक्तूबर – 6 नवम्बर 2022

लखनऊ परिसर

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022 का समापन समारोह 6 नवंबर 2022 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर अतिथि व्याख्यान (ऑनलाइन) का आयोजन किया गया जिसके वक्ता श्री अनिंदो मजूमदार, आईएएस (सेवानिवृत्त), पूर्व सचिव, सीवीसी थे। समारोह की अध्यक्षता निदेशक प्रोफेसर अर्चना शुक्ला ने की। इस समारोह में डीन नोएडा परिसर, नीरजा पांडे, सीवीओ प्रोफेसर केजी सहदेवन शामिल हुए।

व्याख्यान के बाद सतर्कता जागरुकता सप्ताह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों तथा हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कार वितरण निदेशक, प्रोफेसर अर्चना शुक्ला द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम में दोनों परिसरों (नोएडा परिसर ऑनलाइन) से आईआईएम समुदाय के बहुसंख्यक सदस्यों ने भाग लिया। आईआईएम लखनऊ के नोएडा परिसर में 31 अक्तूबर, 2022 से दिनांक 06 नवंबर, को सतर्कता जागरूकता सप्ताह "भ्रष्टाचार मुक्त भारत - विकसित भारत" की थीम के साथ मनाया गया, संस्थान के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने संयुक्त रूप से शपथ लेकर भ्रष्टाचार को खत्म करने व जागरूक होने का संकल्प लिया।

नोएडा परिसर

दूसरा वार्षिक अंतरराष्ट्रीय शोध सम्मेलन और डॉक्टरोल कार्यशाला

07 दिसंबर से 11 दिसंबर 2022

आईआईएम लखनऊ के नोएडा परिसर के प्रागण में दिनांक 07 दिसंबर 2022 से 11 दिसंबर 2022 तक "महामारी के दौरान सतत व्यवसाय और प्रबंधन" (मैनेजिंग एन्ड सस्टैनिंग बिजनेस ड्यूरिंग पैनडेमिक) विषय पर दूसरा वार्षिक अंतरराष्ट्रीय शोध सम्मेलन और डॉक्टरोल कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर अचर्ना शुक्ला, निदेशक आईआईएम लखनऊ ने दूसरा वार्षिक अंतरराष्ट्रीय शोध सम्मेलन और डॉक्टरोल कार्यशाला का उदघाटन किया।

इस कार्यक्रम का समापन प्रोफेसर अरूप वर्मा, प्रोफेसर लोयोला विश्वविद्यालय शिकागो (यूएसए) की उपस्थिति में हुआ। कुल मिलाकर इस सम्मेलन में 70 से अधिक प्रतिभागियों की प्रस्तुति, दो कार्यशालाएं आयोजित की गईं, संबंधित क्षेत्रों के 12 सुप्रसिद्ध वक्ता और संपादक ने भी प्रतिभागिता की।

कार्यक्रम में संस्थान के सभी विभाग के अध्यक्षों व कई प्रबंधन व्यवसाय से सम्बद्ध हस्तियों ने भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनाया। प्रोफेसर नीरजा पांडे, अधिष्ठाता ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

संविधान दिवस पर प्रस्तावना पाठ का आयोजन

27 नवम्बर, 2022

संविधान दिवस 26 नवम्बर, 2022 के अवसर पर संस्थान परिसर में संविधान के प्रस्तावना का पाठ किया गया। प्रस्तावना पाठ का कार्यक्रम लखनऊ के साथ ही नोएडा परिसर द्वारा भी किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान की निदेशक, प्रोफेसर अर्चना शुक्ला द्वारा की गई।

महिला भेदभाव उन्मूलन पखवाड़ा

25 नवम्बर - 10 दिसम्बर, 2022

महिलाओं के प्रति भेदभाव के उखाड़ फेंकने और उनके लिए अनुकूल कार्यस्थल बनाने के उद्देश्य से इस पखवाड़े का आयोजन किया गया। भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ महिला की बराबरी को लेकर विभिन्न मंचों से हमेशा मुखर रहा है। महिलाओं के लिए सुरक्षित और न्यायसंगत कार्यस्थल शीर्षक पर प्रो. निशी पांडेय, प्रोफेसर ऑफ एमिनेंस, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा एक व्याख्यान आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों के साथ ही कर्मचारियों ने भाग लिया।

रिकॉर्ड ग्रीष्मकालीन प्लेसमेंट 2022-23

आईआईएम लखनऊ ने अपने 38 साल की शारदार विरासत में अब तक के सबसे बड़े बैच के लिए 100% प्लेसमेंट हासिल किया। 566 छात्रों के लिए 570 ऑफर हासिल किए गए। प्रति माह 1.41 लाख का उच्चतम औसत वेतन और प्रति माह 1.50 लाख का औसत वेतन वाले पद छात्रों को मिले। पूरे प्लेसमेंट के दौरान प्राप्त उच्चतम वेतन 3-50 लाख प्रति माह तक पहुंचा। इस पूरी प्लेसमेंट की प्रक्रिया में 185 से अधिक भर्तीकर्ता/कंपनियों ने भाग लिया और छात्रों को विविध पदों के प्रस्ताव दिए।

आयोजन

मैनफेस्ट वर्चस्व आयोजन

19-20 फरवरी, 2022

36 वर्षों से अधिक की विरासत के साथ, मैनफेस्ट-वर्चस्व, आईआईएम लखनऊ का वार्षिक व्यवसाय, सांस्कृतिक और खेल उत्सव को आईआईएम लखनऊ में आयोजित किया गया। दो दिवसीय कार्यक्रम में सांस्कृतिक, मनोरंजन कार्यक्रमों, और अन्य प्रबंधन कार्यक्रम तथा विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित की गई। विशेष रूप से, इस वार्षिक कार्यक्रम में प्रबंधन, नृत्य, गायन, रंगमंच, साहित्य और फैशन जैसी श्रेणियों में 40 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। यह सभी कार्यक्रम हाईब्रिड मोड में आयोजित किए गए जिनमें ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों द्वारा आयोजन किए गए, जिसमें कोविड से जुड़े सभी नियम और मानदंडों का अनुपालन किया गया।

इस दो दिवसीय आयोजन के नेतृत्व वार्ता कार्यक्रम में उद्योग उद्योग जगत के नामचीन व्यक्तियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में आधुनिक मार्केटिंग के जनक डॉ. फिलिप कोटलर शामिल हुए। साथ ही क्रिस गोपालकृष्णन - इंफोसिस के सह-संस्थापक और पूर्व-सीईओ और श्री अभयानंद, आईपीएस अधिकारी और सुपर-30 अवधारणा के सह-संस्थापक व अन्य वक्ता के रूप में शामिल हुए।

नेतृत्व वार्ता श्रृंखला में सामाजिक सम्मेलन और महिला नेतृत्व सम्मेलन भी शामिल किए गए जहां छात्रों को समाज और व्यापार के मुद्दों पर उद्योग के दिग्गजों के साथ बातचीत करने का मौका मिला। इस साल के मैनफेस्ट-वर्चस्व की प्रमुख विशेषताओं में से एक 50 मिलियन स्टार्टअप फंडिंग चुनौती है, जहां नवोदित उद्यमी अपने व्यापारिक विचारों को प्रख्यात वीसी निवेशकों को 50 मिलियन रुपये के शुद्ध पूल से धन जुटाने के लिए पेश करेंगे।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रतिभागियों को उनके संबंधित कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट हस्तियों द्वारा आकलन किया गया। इस वर्ष के मैनफेस्ट-वर्चस्व के प्रमुख निर्णायक कर्ताओं में कैलाश खेर, अविजित दत्त और सौम्या टंडन शामिल थे। प्रत्येक दिन का समापन ऊर्जा से भरपूर मनोरंजन से भरपूर शाम के साथ हुआ जिसे ऑफलाइन आयोजित किया गया। स्टैंड-अप कमेडियन गौरव कपूर ने 19 फरवरी, 2022 को संस्थान में कॉमेडी नाइट के मंच पर प्रस्तुति दी।

मस्ती, सीखने और उत्साह का एक आदर्श सम्मेलन यह कार्यक्रम 20 फरवरी को बॉलीवुड पार्श्व गायक और संगीत के उस्ताद जावेद अली की धुनों पर मुग्ध होकर सम्पन्न हुआ।

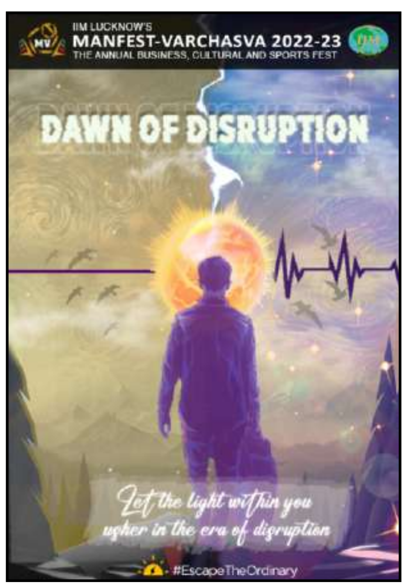

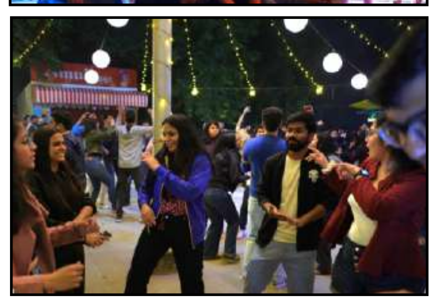

कार्यक्रम

आजादी का अमृत महोत्सव पर प्रेरक वार्ता आयोजन

01 मार्च, 2022

'आजादी का अमृत महोत्सव' के चल रहे समारोह के कड़ी के रूप में पद्मश्री डॉ. अनिल के राजवंशी द्वारा प्रेरणादायक संवाद सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान निदेशक प्रोफेसर अर्चना शुक्ला ने स्वागत संबोधन दिया। यह कार्यक्रम जूम एप पर आयोजित किया गया था जिसमें संस्थान सदस्यों के साथ ही अन्य हितधारकों ने भाग लिया।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति के परिसर मॉड्यूल का आयोजन

3 मार्च, 2022

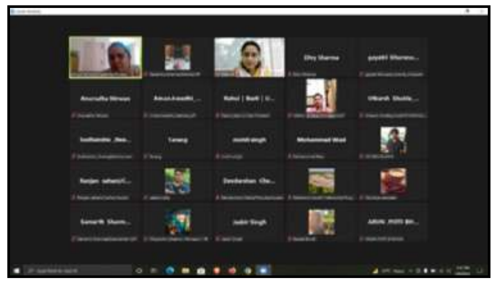

महात्मा गांधी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति के तहत परिसर मॉड्यूल को संस्थान में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अकादमिक महिला वक्ताओं के पैनल के साथ महिला सशक्तिकरण की भावना को सम्मानित किया गया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सुश्री पंखुड़ी बोरगोहेन, उप प्रमुख- शिक्षा प्रभाग, एनएसडीसी और सुश्री दिव्या वर्मा, कार्यक्रम प्रबंधक, आजीविका ब्यूरो ने प्रशिक्षण के विभिन्न पहलुओं और प्रवास और कौशल के अवसरों के बीच संबंधों को सुविधाजनक बनाने से संबंधित वार्ता कार्यक्रम में भाग लिया।

कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय ने 9 आईआईएम के सहयोग से महात्मा गांधी राष्ट्रीय फैलोशिप 2021-23 (एमजीएनएफ) की शुरुआत की है। इसमें यूपी की राजधानी लखनऊ स्थित आईआईएम भी शामिल है। इस कार्यक्रम में चयनित छात्रों को पहले वर्ष 50 हजार रुपए और दूसरे वर्ष 60 हजार रुपए की छात्रवृत्ति मिलेगी। यह कार्यक्रम विश्व बैंक से सहायता प्राप्त कार्यक्रम संकल्प (कौशल संवर्धन और आजीविका संवर्धन के लिए ज्ञान जागरूकता) के तहत चलाया जा रहा है।

स्पिक मैके आईआईएम लखनऊ

3-4 मार्च, 2022

भारतीय कला और संस्कृति की विरासत जीवंत है और सदियों से संचित मूल्यों को संग्रहित करती है। लेकिन बदलते समय के साथ नई पीढ़ी के युवा अपनी संस्कृति और विरासत की समझ से वंचित हो रही है। आईआईएम लखनऊ इस समृद्ध विरासत को संरक्षित करने के लिए युवाओं के बीच भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना आवश्यक मानता है। इस पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ने के प्रयास में, आईआईएम लखनऊ स्पिक मैके के साथ समन्वय में विरासत 2022 के एक भाग के रूप में प्रदर्शनों की श्रृंखला आयोजित की गई।

ऑनलाइन माध्यम की सुरक्षा और व्यापक पहुंच को ध्यान में रखते हुए, यह कार्यक्रम 3 मार्च 2022 को प्रसिद्ध बांसुरी कलाकार पं. राजेंद्र कुलकर्णी की शानदार प्रस्तुति आयोजित की गई। इसके बाद पं. राजेंद्र गंगानी द्वारा कथक नृत्य की प्रस्तुति की गई। इसके बाद कार्यक्रम का समापन सुप्रसिद्ध वारसी बंधुओं ने अपने सूफी संगीत के साथ मंत्रमुग्ध कर देने वाले कार्यक्रम के साथ हुआ।

आईआईएम लखनऊ और एसजीपीजीआईएमएस द्वारा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

11 मार्च, 2022

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से समाज को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआईएमएस) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। प्रो. अर्चना शुक्ला, निदेशक, आईआईएम लखनऊ और प्रो. आर.के. धिमन, निदेशक एसजीपीजीआईएमएस ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

इस गठजोड़ के तहत सभी स्तर के डॉक्टरों को लघु अवधि के प्रबंधकीय कौशल प्रशिक्षण दिए जाएंगे। इसके साथ ही दोनों संस्थान लोकहित में संयुक्त महत्व के क्षेत्रों में शोध कार्य करेंगे। आईआईएमएल और एसजीपीजीआईएमएस दोनों एक-दूसरे की दक्षताओं का लाभ उठाते हुए यह सुनिश्चित करेंगे कि यह सहयोग आपसी लाभ के साथ ही बड़े स्तर पर समाज के कल्याण के लिए समर्पित हो।

“आजादी के अमृत महोत्सव” के तहत वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

23 मार्च, 2022

“आजादी के अमृत महोत्सव” के जश्न को मनाने के लिए संस्थान द्वारा विभिन्न आयोजनों की कड़ी में दिनांक 23 मार्च, 2022 को वाद-विवाद प्रतियोगिता और व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में संकाय सदस्यों के साथ ही अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में ‘कार्यालय के कार्यों का आवास से सम्पादन’ की अच्छाइयों और बुराई पर प्रतिभागियों ने अपनी राय रखी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए निदेशक महोदया ने कहा कि इस देश को आगे ले जाने के लिए हमें नित नए प्रयास करने चाहिए। वहीं अतिथि वक्ता प्रो. राहुल पाण्डेय जी ने इंगित किया कि स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा की गई इस देश की परिकल्पना को हमें हकीकत में बदलने के लिए अपना-अपना योगदान अवश्य देना चाहिए। इस कार्यक्रम में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री विनय कुमार वर्मा के साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य- प्रो. एम.के. अवस्थी, प्रो. मृत्युंजय तिवारी, ब्रिगेडियर दिनेश शर्मा वीएसएम (से.नि.), श्री एम.के. सिंह तथा अन्य अधिकारी व कर्मचारी शामिल हुए।

आयोजन

हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित हिन्दी पखवाड़ा-2022
14 से 29 सितम्बर, 2022

भारतीय प्रबन्ध संस्थान के हिन्दी अनुभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें विद्यार्थियों, संकाय, अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस कार्यक्रम के तहत ऑनलाइन कविता और निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागियों ने अपनी लेखन क्षमता का बखूबी प्रदर्शन किया। इसके साथ ही हिन्दी पखवाड़े के तहत सांस्थानिक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा जिसमें पूरे परिसर ने प्रतिभागिता की तथा इस कार्यक्रम की सराहना की। इस प्रकार पूरा हिन्दी पखवाड़ा हिन्दी के प्रति समर्पण को दुहराते हुए पूरे उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

आयोजन

तिमाही राजभाषा हिन्दी कार्यशालाएं

27-1-2022

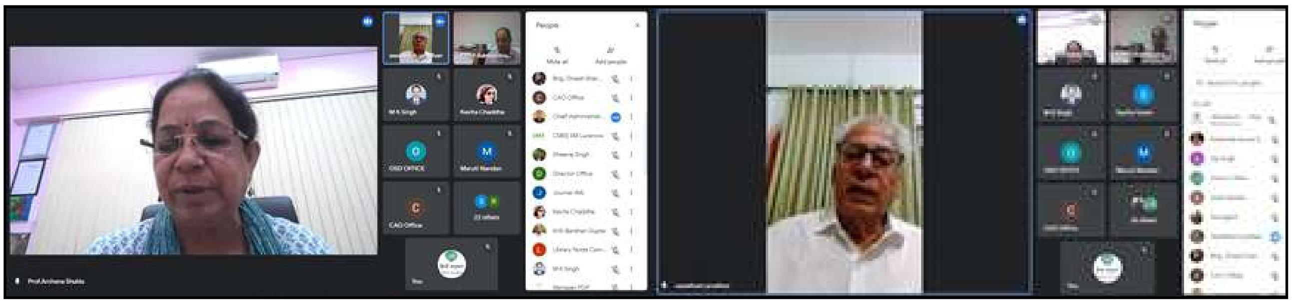

19-7-2022

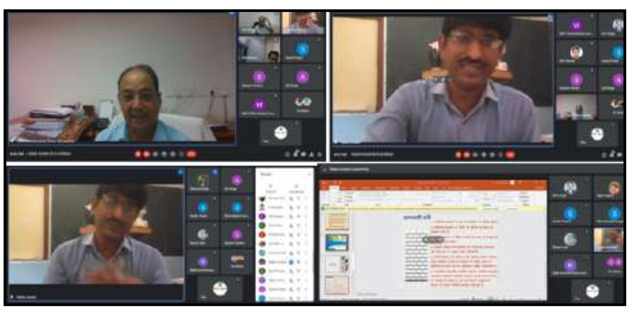

14-9-2022

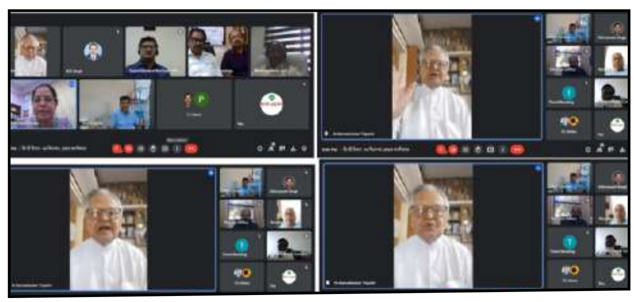

4-1-2023

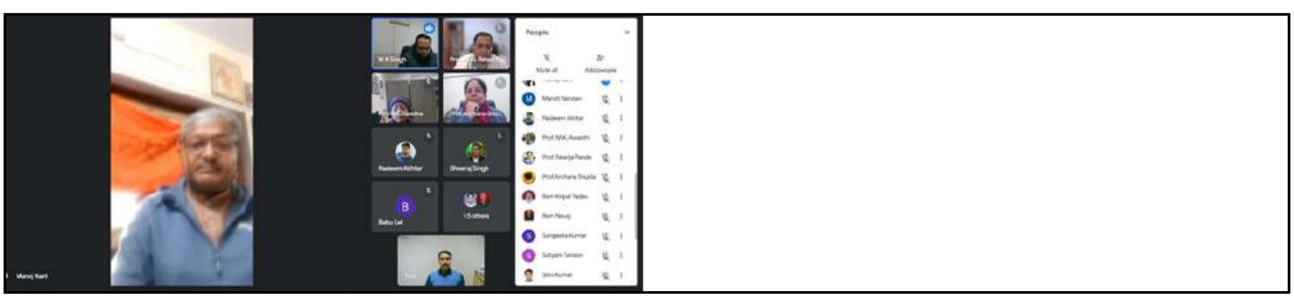

उत्सव

मकर संक्रांति, पोंगल (14 जनवरी, 2022)

सरस्वती पूजन (05 फरवरी, 2022)

होली (19 मार्च, 2022)

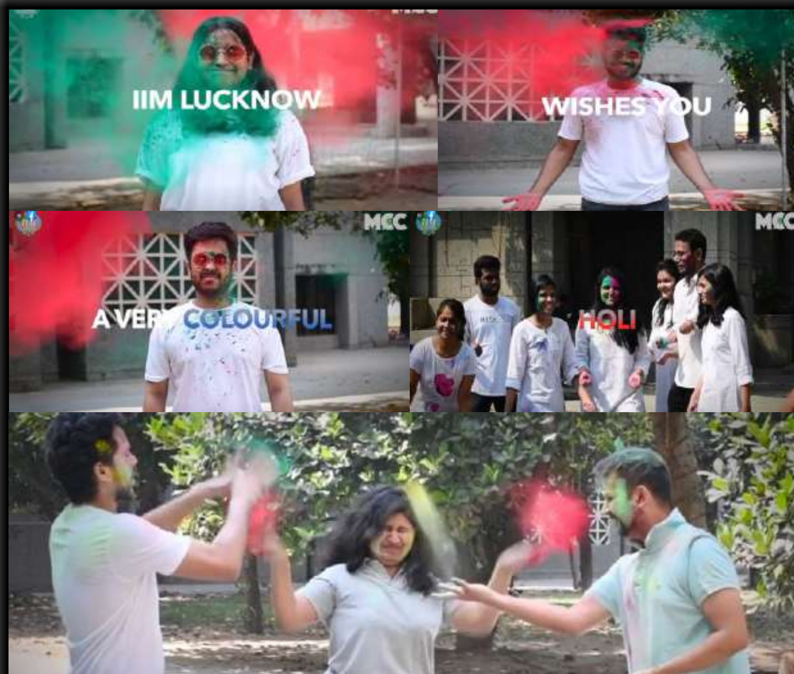

गणेश पूजन (31 अगस्त, 2022)

विश्वकर्मा पूजन (17 सितम्बर, 2022)

दीपावली (24 अक्टूबर, 2022)

वर्ष 2022 की अवधि में सेवानिवृत्त गैर-संकाय अधिकारी एवं कर्मचारी

क्र. सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि	कारण
1	श्री विजय प्रकाश गुप्ता	कार्यक्रम प्रबंधक	31/मार्च/22	सेवानिवृत्ति
2	श्री पी मोहनन	प्रबंधक	30/अप्रैल/22	सेवानिवृत्ति
3	श्री पार्वती देवी पाण्डेय	कार्यालय परिचर	30/जनवरी/22	सेवानिवृत्ति
4	श्री विनीत कुमार अग्रवाल	अधीक्षक	30/जनवरी/22	सेवानिवृत्ति
5	श्री प्रेम प्रकाश	वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	31/जुलाई/22	सेवानिवृत्ति
6	श्री घनश्याम चतुर्वेदी	वरिष्ठ वाहन चालक, श्रेणी 1 (पदोन्नत)	31/अगस्त/22	सेवानिवृत्ति
7	सुश्री संगीता बाला	अधीक्षक	31/अगस्त/22	सेवानिवृत्ति
8	श्री देवेन्द्र पाल सिंह सहगल	कार्यक्रम विश्लेषक	30/सितम्बर/22	सेवानिवृत्ति
9	स्व. मुजीब अनवर	वरिष्ठ वाहन चालक, श्रेणी 1 (पदोन्नत)	3/सितम्बर/22	देहावसान
10	स्व. सुंदर लाल	अधीक्षक	4/अक्टूबर/22	देहावसान

फोटो साभार : आईआईएमएल क्लब-राइट एंगल; सुश्री रिया, पीजीपी; देवेश भड़सेवाल, पीजीपी; श्रुति सक्सेना

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ
INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT LUCKNOW

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ
प्रबन्ध नगर, आईआईएम रोड, लखनऊ 226013, उ.प्र., भारत
दूरभाष: 0522-6696965
ईमेल: hindi@iiml.ac.in
वेबसाइट: www.iiml.ac.in

AACSB ACCREDITED | EFMD GLOBAL | ASSOCIATION OF MBAs AMBA ACCREDITED